

कल्पभाष्य

अर्थात्

भाषा कल्पसूत्र

—000—

श्रील श्रीयुक्त राजाडालचन्दजी की आज्ञानुसार
कवि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र
राजा शिवप्रसाद सितारै हिन्द

की आज्ञानुसार छापा गया ॥

—000—

“धर्मकुस धर्मकुस धर्मकुस प्रपूरय धर्मं शंखम् प्रसारय धर्मं
ध्वजाम् प्रताडय धर्मं दुन्दुभिम्” ॥

“घड़ी न लवभै अगली। इंदह अरकै बीर ॥ इम जागो जिउ धर्म
करि। जां लग वहइ सरीर,” ॥

—000—

KALPA SŪTRA

Translated into Bhashā by Kavi Rāyachand under the patronage

OF RĀJĀ DĀLCHAND.

Printed and published for his great grandson

RĀJĀ ŚIVAPRASĀD. C. S. I.

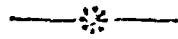
—103—

लखनऊ

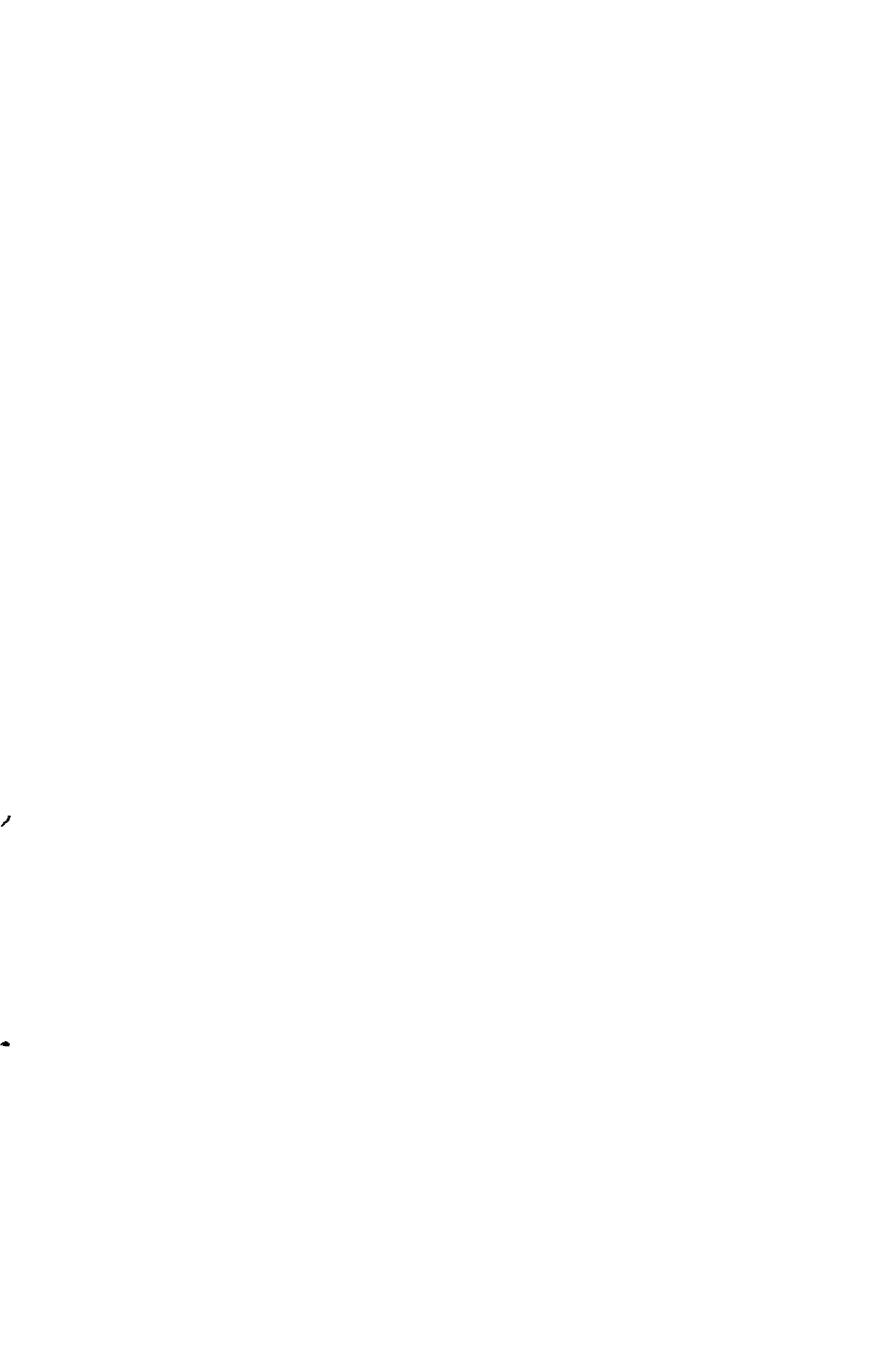
मुंशीनवलकिशोर के द्वापेखाने में छपा

दिसम्बरमन् १८८० ईसवी

जसके चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशीनवलकिशोर से मंगाले;



पुराने कागजों से मालूम होता है कि जयपुर की चम्पनदारी में रणथंभीर के बीच जो एक बड़ा मशहूर क़िला है संवत् १०४५ के दार्मियान परमार वंशो शाखेइवरो श्रीष्टि धांधल हुआ। उसके कोई लड़का न था जैन धर्म पालक पूज्य श्रीजय प्रभु सूरिगुरु के प्रतिबोध से अक्षुपा देवी की आराधना की देवी ने स्वप्न में वरदिया देवीके हस्तपुट में पत्र पुष्प और गोखरू था इसी से जब लड़का हुआ उसका नाम गोखरू रक्खा और उसी से गोखरूगोत्र चला। संवत् १०६१ में देहरा बनाया जयप्रभु सूरिने प्रतिष्ठा कराई श्रीशेजुजय का संघ निकाला। उस का लड़का धर्मण उसका कर्मण उसका पुहपा उसका भग्गा उसका अक्का उसका तोला उसका मेहका उसकाहीरा उसका मेघा उसका भाणा। जबसंवत् १३३५ में सुलतानअलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभीर का क़िला तोड़ा भाणा अपने लड़के नायक समेत बादशाह के साथ चंपानेरचला आया। नायकका बेटा खीमा उसका जयवन्त उसका वीरा उसका गौरा संवत् १४८५में अहमदाबाद में आ बसा उसका बेटा अभयड उसका वासा उसका वस्ता उमका बहला उसका शिवसी उसका कर्मसी उसका रांका उसका श्रीवन्त उसका पदमसी। संवत् १४८४ में पदमसी साह खंभात में आवसा। वहां उसने श्री कल्याणसागर मूरि से श्रीपावनाथ स्वामी का स्फटिकमयविम्ब प्रतिष्ठित कराया पांच मोने की कल्प मूत्र और चार मोतीके पूटे भेट किये श्रीशेजुजय का संघ निकालापुस्तक भंडारभरा। उसके दो बेटे थे श्रीपति और अमरदन। अमरदन ने शाह जहांवादशाह को एक ऐना हीरा नज़र दिया कि बाद शाह ने प्रसन्न होकर राइ को पदवी बख्शी और दिल्ली ले गया। उसके दो लड़के हुएराइउदयचन्द औरकेसरी सिंह। राइउदय चन्दके चार लड़के राइजगत् मित्रमेन मभाचन्द फ़तहचन्द औररायसिंह। फ़तहचन्दने क़हत्साली में ग़ल्लासन्ता करनेकेकारण मुहम्मदशाह में जगतसेठ की पदवी पाई लेकिन अपनीबहूबेटेनमेत मुर्शिदाबाद में अपने मामू सेठनायिकचन्द नागौर वाले हीरानन्दसाहके बेटे की गोदजाबैटे। हीरानन्द साहकी बेटो धनबाई राइ उदय चन्दको व्याही थी। राइसभाचन्दके राइअमरचंद औरराइअमर चंदकेराइमुहकम सिंह और राजा डालचन्द। नादिरशाही में घरके दो आदमीक़तल होनेके कारण राइ मुहकमसिंह और राजा डालचन्द दिल्लीछोड़कर मुर्शिदाबाद आवे। निदान



वरुन हेमिगुज्ज को रिफाकत के दाइम नाइकमारेजानेई इये इम बनने होये भेजकर चुपचाप दुलवा लिया और अपने मकान मे छुपा गज्जा मेमे मरु में कौन किस के साथ दोस्ती निभाताहै और माहम करके अपनी जान कुन्ने मे डालता है। उनके बेटे राजा उतमचन्दने जिन्होने लखनऊ वाले राजा बहुराज की बेटी व्याही थी पुत्रही न होने के कारण अपनी बहिन वीवी रत्न कुंवर के बेटे बबुगोपी चन्दको गोद लिया और उन्हीं के बेटे राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द। इने अपने दोनों पुत्र कुंवर सच्चित्प्रसाद और कुंवर आनन्द प्रसाद को बहुरंग और अपनी बहिन वीवी गोविन्द कुंवर के खातिर जोजैनधर्म की निरन्तर अबलम्बी है इस ग्रन्थको कि सबसे राजा डालचन्द ने भापा में बनवाया था एकही प्रति घर में रहा था उद्धार करके अर्थात् छपवाके अमर किया जो पढ़ें सुनें दया करके असोस देंकि धर्म में रतिरहे परलोक सुधरे और कुबुद्धि कभो पास न फटकने पावे शुभंभूयात् ॥

इति

अथ कल्पभाष्य लिख्यते ॥



चौपाई ॥

जै जै जैन धर्म हितकारी । संवचतुर्विधिजिहिअधिकारी ॥
साध्वी साधु श्राविका श्रावक । यहीचतुर्विधि संघ प्रभावक ॥
नराकार सो धर्म बखाना । जाके वारह अंग प्रधाना ॥
वदन पंच प्रानरु द्वे हाथा । बुधिचित आत्मद्वैपदसाथा ॥

दो० रत्नत्रय जासों कहें । ज्ञान दरस चारित्र ॥

धर्म भूप नररूप को । कहिये वदन पवित्र ॥

हिंसा मिथ्यावाद अरु । चोरी मैथुन वाध ॥

औरपरिग्रह को लजन । पंच महाव्रत साध ॥

ये कहिये ता पुरुषके । पांचौ प्राण प्रमान ॥

दान लील तप भावना । दोनों हाथ बखान ॥

दान दया तीजौदमन । ये जे तीन दकार ॥

बुद्धि चित आत्म लहौ । ता नर को आधार ॥

विनयविवेकविचारजुत । अरु निश्चयविवहार ॥

वेड ता नर धरम के । दरनदरन सुखसार ॥

धर्मसिरोमनिलुभसमथ । पर्व यजूत्तन जान ॥

ताकीनिति विस्तारतौ । भाखों सुना सुजान ॥

चारिमास चौनास के । दिवस एकसौ बीस ॥

उत्तम मध्यम सत्तरु । अधमपचास दुधीस ॥

अधिक नासजो होयतौ । ताकी गिनती नाहिं ॥

आस्ताड़ी पून्यो हितें । दिनगिनगिनतीमाहिं ॥

अथ नागकेतुः किरणरहित । शठ स्त्री विनुहोय ॥
 सुकृत जीवन उपजे । निर्जन थडिल सोय ॥
 गीर्णमुराजम् भिच्छजहं । भिच्छा सुलभा होय ॥
 वेदभक्तो चोखद सुलभ । जहां पाडये सोय ॥
 गृहपतिसयनसनन्नजहं । सुजन समागमजान ॥
 स्वाध्यायगौरस सुलभ । और रहित अपमान ॥
 ऐसे तेरह गुन सहित । औगुन रहितसुदेस ॥
 भूमि पाय सुख वासहवे । वसे साध धर्मेस ॥
 भादोंअसित तिरोदसी । आदि आठदिनजोय ॥
 गुनी पंचमी अंत दिन । पर्व पजूसन सोय ॥
 इनआठों दिन में जती । जिनजनसनमुखहोय ॥
 कल्पसूत्र को अर्थ सब । वरनि बखानै सोय ॥
 आठदिवसविस्तारकरि । अर्थ अरथ निदान ॥
 मभद्रतिहामममेतअरु । सह दृष्टांत बखान ॥
 आठ दिना में पंचकृत । करें करावें संत ॥
 तेन चतुर्विधि मंघ के । परंपरा को तंत ॥
 मनकेपरपर नामकरि । दानसील तप भाव ॥
 अष्टम तपआचरनकरि । यथाशक्ति चितचाव ॥
 अष्टमे दिनके अंत में । कल्पसूत्र सिद्धांत ॥
 अष्टमेमोगह सहित । हितकरिमुनैनितांत ॥
 अष्टद्वारमपडकमनकरि । आपुसमें सब लोक ॥
 अष्टमे द्विमावें परमपर । वरसदोष तजिसोक ॥
 जैसे परम काल में । नाग केत इतिहास ॥
 अष्टमभावें जिनलह्यो । अचलपरम पदवास ॥

अथ नागकेत कथा ॥

चौपाई ॥

चन्द्रकान्ति नगरी डक राजें । विजयसेनजहंनृपति विराजें ॥

शांत दांत श्रीकांत सेठ जहं । धर्मसील गुनवंत वसे तहं ॥
 जाकी सुभश्री सखी सिठानी । गुन वय रूप सीलमनमानी ॥
 ताके गर्भ अर्भ इक भयो । पूरव पुन्य आय फल दयो ॥
 आनद मुदमय सेठ सिठानी । पर्व पजूसन नियरौ जानी ॥
 आपुस मै मिलि भाखन लागे । पूरव पुन्य जगत के जागे ॥
 हमहूं अब अष्टम तप धारै । जनममरन कौ दुखनिरवारै ॥
 यहधुनिसुनिशिशुहूं चितधारयो । जातिस्मरितपकरनविचारयो ॥
 पर्व पजूसन दिन आयो जब । सेठ सिठानी व्रत कोनौ तब ॥
 तज्यो मायकौ पय वालकहूं । लखिदुखपायोपितुपालकहूं ॥
 सिसुमृदुतनतपताप न सहिके । मुरछिपरयोधरनीपर गिरिके ॥
 सेठ विकल हूँ वैद बुलायो । चेत्यो नहिं उपचार करायो ॥
 तव निरास हूँ वालहिछाज्यो । पितादुखित हूँ मरनौमाज्यो ॥
 सोनिपुत्र घर भयो जानिदृष । अर्थ लैनकौ छांडि दई कृप ॥
 क्रूर दूत धन लेन पठाये । ते सब सेठ द्वार पर आये ॥
 सिसु तपवल इन्द्रासनचाल्यो । अवधिज्ञान तवइन्द्रसभाल्यो ॥
 सिसु पूरवभव की सब जानी । सभा प्रमुखसो सबै बखानी ॥
 वनिक पुत्र हो यह पूरव भव । अपर मात के दुःख दह्योदव ॥
 सोदुखतिन निजमित्रसुहृदसैं । कह्योसह्योनहितन भाखी यैं ॥
 पूरव सुकृत न संचित तातैं । यह दुख लहत अपरमातातैं ॥
 यहसुनितिनतपकरनविचारयो । अतिसुभ ध्यानहियेमें धारयो ॥
 पर्व पजूसन नियरैं आयो । ताकौव्रत करिहैं मनभायो ॥
 धारिध्यान नृप गृह में लायो । द्वेष द्राष्ट तिहि माता जोयो ॥
 दीपक वारन के मिस आई । ताहन गृह में आशि लगाई ॥
 सो जरि मरि श्रीकांत सेठ घर । पुत्र होय जनम्यौ सो नरवर ॥
 यह कहिसुरपति निजजन प्रेरे । राजदूत तिन क्रिये अनेरे ॥
 सुरपति हूं नरपति ढिग आये । आय कही क्यौ दूत पठाये ॥
 राजनीति की नृप दै साखी । सुरपतिसैं यह भाखा भाखी ॥

राजा मालक । ताकेवन को राजा मालक ॥
 पुत्र भवकी सब बतलाई ॥
 नागकेत तिहिनाम बतायो ॥
 नृप हूं अपने जन निरवारै ॥
 धरमभरनविधिसिरधरिलीनी ॥
 पट ब्रत चातुर मास निवासा ॥
 पंच महा ब्रत पालन लाग्यो । धर्म प्रभाव तासु जसजाग्यो ॥
 सिर कलंक चोरीको धारयो ॥
 अपनो बैर नृपति सैं लयो ॥
 लात एक राजा कैं मारी ॥
 सभामदनलखिअचरजकरयो ॥
 नगरमान लांबी विस्तारी ॥
 नगर लोगपर पटकनलाग्यो ॥
 तपवलदृरिफैंकितिहि दीनी ॥
 व्यंतरभाजि भयो बल हीनो ॥
 निग्ययकगितपकोपथगहियै ॥

को० यह नवम्या पंचमी । अन्य मती हूं लोक ॥

शनिदिन जगद्विषयकगता । जगमें होय अमोक ॥

जगदीश पंचमिहिन । दिन पचासवां जोय ॥

पंचमि नारी पक दिन । घटे नु घटती होय ॥

अथ शनि पंचमी कथा ॥

को० शनिमलमदतिगकवम । पुनपवती थल पाय ॥

रतनलदीनयसंगनय । पाय तात अरु माय ॥

मरिचकदेह सुतमचन में । एक सुनी एक देल ॥

वरन भयो वृज सुवन । गही श्राद्धकी गैल ॥

ब्रह्म भोजके हिन सुमुत । स्वच्छ बनाई खीर ॥

वाहिनै विद्विपवमन । करिसरवयोधरिधीर ॥

सोनिहारि तिहिकूकरी । विपुलअनर्थविचारि ॥
 दौरिजुठाई खीर सो । लखिद्विजदीनीमारि ॥
 मारि तोरिताकी कसर । गोसाला मैं वांधि ॥
 विप्रजिवाये प्रीतिकरि । खीर दूसरी रांधि ॥
 ताही दिन तावैल कैं । तिहि द्विज तेली ऐन ॥
 बहन हेत भाड़ै दयो । सबदिनतिहिदुखदेन ॥
 मुखमें छौंका वांधिकै । फेरयो कोल्हू साथ ॥
 सांझ भये आयोसदन । बदन मलीन अनाथ ॥
 आपुसमेंमिलिवृषशुनी । निजनिजविथासुनाय ॥
 कथासकलदुखकीकही । वेदन विपुल बलाय ॥
 कटिट्टन की उनकही । सहन भूखइनप्यास ॥
 लहि निरासता अन्नते । दोऊ भये उदास ॥
 सुन्योसकलसंवाद अह । ताद्विजने धरि कान ॥
 जान आपने मातपितु । अतिपछताय निदान ॥
 भोजनदैं तिनदुहुंनकौ । ऋषिनपासद्विजजाय ॥
 कह्योसकलवृत्तान्तजो । सुन्योसुअनसमुझाय ॥
 अरुपूछीकरजोरिप्रभु । जेहिवाधिकुगतिनसाय ॥
 मातपितासदगतिलहैं । सो भापिये उपाय ॥
 सुनिवेदनरिपिगनसकल । अनुकंपे लखिदीन ॥
 दयादीठ दृगभरि कहे । वचनसुधा रसलीन ॥
 पूरवभवइनदुहुंनमिलि । कीनी केलि अकाल ॥
 तातेपायो जनम इन । वृषभ शुनीकौ हालं ॥
 अबभादैं सुदि पंचमी । ऋषिपंचमिजिहिनाम ॥
 तादिनसयम सनेन हूँ । व्रतकरि आठौं जाम ॥
 अनखेडी हलकी धरा । तामें अन्न जु होय ॥
 आपहिं तैं उपजै विपन । तादिन खेये सोय ॥
 तातैं इनकीकुगतिमिटि । संगतिलहिहै जानं ॥

मृनिद्विजस्योर्हीकरिपितर । पठयेसुरगनिदान ॥
 ऐसैं या सुभ द्विवस में । औरीमति के लोक ॥
 तपकरिजगत्रयतापहरि । मुकतलहततजिसोक ॥
 यातेजे जिन धरमरत । साधु साधवी जोय ॥
 हितकरिश्रावकश्राविका । त्रतकरिनिरमलहोय ॥
 कल्पसूत्रको पाठअरु । अर्थसमझिसुनिकान ॥
 मरम धरमकोपायपद । परम लहे निरवान ॥
 दृष्टांत कथा ॥

टो० तृतीयरसायनगुनसकल । कल्पसूत्र त्योंजान ॥
 ताहूकी विस्तार सैं । कहैंकथासुनिकान ॥
 भयोलाखअभिलाखकरि । इकनृपके सुतआय ॥
 चही तासु आरोगता । नृप त्रय वेदबुलाय ॥
 तिनमें तें इकवेद ने । निजओपधगुनभाखि ॥
 कह्यो मातरा एक में । हरो रंगयह साखि ॥
 पेंअरोग नर जो भखे । यहभेपजतिहिकाल ॥
 नग्यमिखनैमोनरमकल । होय रंग में हाल ॥
 मृनिगजा ना वेद के । तुरत कियो विदाय ॥
 गेयो सिंह जगावना । भयो न यहहै गय ॥
 वेद कृमगे पुनिकह्यो । निजओपधगुनआय ॥
 गेन हरे गेगीनु को । विररुजकछुनवसाय ॥
 ताहूको कीना विदा । नृथासमझिनरराय ॥
 अग्निमांहिहविहोमिद्यों । करनोभसमसुभाय ॥
 तदपृष्ट्योनृपनिज निकट । तीजोवेद बुलाय ॥
 तिननिज ओपधकोसुगुन । ऐसैं दियो वताय ॥
 गेन हरे आरोग को । अधिकपुष्टकरिदेय ॥
 गीनिनृपतिवहुधन दियो । वेदहिओपध लेय ॥
 जैमी ओपधि तीसरी । कल्पसूत्रत्योंमानि ॥

पाप हरे दुखछ्य करे । पुण्य बढ़ावे जानि ॥
 तीरथ शत्रुञ्जय सकल । तीरथ में ज्यों सार ॥
 अभय दान ज्यों दान में । मंत्रन में नवकार ॥
 ब्रह्मचर्य ज्यों व्रतनमें । विनयगुननके माहिं ॥
 नियमन में संतोष तप । छमा सरीखो नाहिं ॥
 तत्वन में सम्यक्त त्यों । पर्व पजूसन जान ॥
 चिन्तामणिसुरधेनुज्यों । धेनु रत्न में मान ॥
 सीतासतियनमाहिं अरु । गीतारथानन माहिं ॥
 छायाधर तरुमाहिं ज्यों । कल्पवृक्ष की छाहिं ॥
 त्योंही सब सिद्धांत में । कल्प सूत्र सिद्धांत ॥
 सब आगमके सारको । सार निहारि नितांत ॥
 महा वीर निरवानतें । छठें पाठ सुख सार ॥
 भए बाहु स्वामी सुखद । चौदह पूरव धार ॥
 नवमें परब्र माहिं तैं । कीनौ यह उद्धार ॥
 वरअठर्यों अध्येन सुभ । दस श्रुतकंध मझार ॥

अथ दस कल्प वर्णन ॥

दो० कल्प अर्थ आचारहै । सो दसविधिकोजान ॥
 प्रथम अचैलउदेस द्वै । शय्या तर त्रय मान ॥
 राजपिण्डकृतिकर्मव्रत । जेष्ट प्रति क्रम आठ ॥
 मास कल्प पर्जुशना । यहै कल्प दस पाठ ॥
 आदि अंत जिनसाधकों । दसों नियत ये कल्प ॥
 चारिनियतजिनमध्यकें ॥ छह अनियत वैकल्प ॥
 ते छह कहेअचैलअरु । प्रति क्रमन उदेश ॥
 राज पिंड पर्जुसना । मासकल्प तजि शेष ॥
 शय्यातरव्रत आचरन । ज्येष्ठत्व कृति कर्म ॥
 वाइस जिनके साधको । चारिनियत यह धर्म ॥

क० भा० ।

नचेल ॥

दो० देव दूय पटडन्द्रजो । जिन कांवेधरि देय ॥
सो गिरि परे नचेलतव । वस्त्र रहितकहि तेय ॥
यातें जीरन चेल लहि । आदिअंतजिनसाध ॥
सेत वस्त्र लें तनधरें । खोऊ साध अवाध ॥
अथ उद्देश का ॥

दो० साधु हेतु उद्देश करि । करै गृही आहार ॥
आदि अंत जिनसाधकें । उचितनसो निरधार ॥
एकें साध विशेष हित । जो उद्देश अहार ॥
सो न लेय सब साधुलें । वाइस जिनविवहार ॥
अथ शय्या तर ॥

दो० जो श्रावक चौमासमें । साधु रहनहितवास ॥
देय ताहि आगम कहै । शय्यातर परकाश ॥
ताशय्या तर मदनको । लेय न साधु अहार ॥
त्रिनियकल्पआचार्यइ । चौविमाजिन विवहार ॥
अथ गज पिण्ड ॥

दो० नृप देशाधिप मदन कों । लेय न साध अहार ॥
आदिअंतजिन साधकें । अतिअनुचितनिरधार ॥
अथ कृति कर्म ॥

दो० गुरु वंदनअरुपंडितमन । नित्य कर्म यहहोय ॥
गुरु लघुतामवसाधुकी । दिक्षा क्रमतें जोय ॥
करे परस्पर वंदना । गुरुकें लघुसवसाध ॥
गुरुलघु साधहिंसाधवी । यह कृतकर्म अवाध ॥
अथ द्रव ॥

दो० पंच महाद्रव आचरन । आदि अंतजिनसाध ॥
मध्य जिने सरसाध के । चारें भेद अवाध ॥
मानत मैथुनकें सकल । ते परिग्रह के मांह ॥

चारै ब्रतहीमें गिनत । ते मैथुन की छांह ॥

अथ ज्येष्ठ ॥

दो० आदि अंत जिन नाथके । साध सदिक्षा होय ॥
मांसखिमन करि पंचव्रत । पालें जानौ सोय ॥
मध्य जिने सर साध सब । दीच्छाहीलै फेर ॥
पंच महा ब्रत आचरें । जेनागम विधिहेर ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

दो० आदिनाथ जिन वीरके । साधसांझ अरुभोर ॥
दुहूंकाल पडिकमन करि । ध्यावें आतम और ॥
मध्य जिने सरसाध कैं । जब कछु लागे दोष ॥
ताकौ संभव जानि कैं । करें पडिकमन पोष ॥

पर्यु शशा ॥

दसद्वी पर्व पजसना । प्रथम कह्यो विस्तार ॥
कल्प सूत्र जायें पढ़ें । सुनै संकल सुख सार ॥
आदि अंत जिननाथके । साध यथा विधियाहि ॥
करें तथाविधि आज लैं । साध आचरन ताहि ॥
आदि अंत जिननाथके । साध दोषविधिजान ॥
सरलमूढ़ अरुवक्र जड़ । होय सुभाव निदान ॥
वाकी जे वाईस जिन । तिनके साध सुछंद ॥
सरल प्रग्यते होयसब । तिनको ज्ञानअमंद ॥

अथ सरल मूढ़ दृष्टांत ॥

तहां प्रथम दृष्टांत सुनि । सरल मूढ़ कैं एह ॥
समझिन सरलसुभावतैं । तिनको विनुसंदेह ॥
कौकण देशी साध डक । काउसग्ग तपलने ॥
गुरुपूछीतिहि विमल की । बोल्योसाध अधीन ॥
दया चिन्तवन करत हो । जबहोगृहको वास ॥
सब कारज हैंकरत हो । अबतौ भयो निरास ॥

बोल्यो सुत सुनि सनलिकै । धोहीं करिहीं बोव ॥
 घरतें निकलत एक दिन । सुतसौ कह्यो सुनाय ॥
 तात बंद करि राखियो । द्वार कंदाट लगाय ॥
 सुनि लगाय दीने तुरत । घरके द्वार कियार ॥
 सोय रह्यो सुख सदन में । जत्र आयो पितुद्वार ॥
 रह्यो पुकारि पुकारि अति । शरी फारि हियहार ॥
 सुनी तदपि बोल्योन सुत । खोले नाहिं कियार ॥
 तबसो पितु चढ़िभीतपर । बड़ि कूट्यो घरमाह ॥
 बैठ्यो लखि लुत क्रोध की । छई हृगनमें छांह ॥
 सुत बोल्यो तुमही न तब । भापी सन्मुख होय ॥
 गुरु कौचदाव न दीजिये । रित्तय्यों कीजत जोय ॥
 चौधे आरे मांहि जे । वाइस जिनके साथ ॥
 सरल प्रच्यते होत हैं । काल खभावअज्ञाय ॥
 सखझिकरें सिगरीक्रिया । ज्ञानदंत ते होय ॥
 दिनपदन्त बलव तसव । धीरज वाले सोय ॥
 रहें दिगंबर विनय में । तन में नेक न नेह ॥
 आत्म सां तनमें रहें । बहें भार लों देह ॥

शुद्ध शब्द दृष्टान्त ॥

तिनहूं पै दृष्टान्त यह । नटनाटक कौ सांघ ॥
 गुरु सुखतें जय उन सुनी । जोगन लखिबो नाच ॥
 नटनाटकहू तिन तप्यो । नटी नाट्य हू फेर ॥
 नाचमात्र सब तजिदये । गुरुवच सुनिरि सुहेर ॥
 उत्तम मध्यम अदम ये । भाव काल वत चक्र ॥
 सरल मूढ़रुजुप्रच्यअरु । तीनों है जड़ वक्र ॥

अथ ग्रन्थानुक्रमण ॥

सो० प्रथम मंत्र नवकार । अर्थ सहित याग्रंथ में ॥
 ता पाछै अधिकार । महावीर कल्याण कौ ॥

पुनि श्रीपारस नाथ । नेमनाथअधिकारअरु ॥
 कीन्हें ग्रन्थ सनाथ । आदिनाथअधिकारकहि ॥
 अन्तराल विस्तार । ता पाछें धविरावली ॥
 कही जैन मत सार । साध समाचारी बहुर ॥
 कल्प सूत्र सिद्धान्त । ताकी ह्यालें पीठिका ॥
 करन बखान नितान्त । अब निजग्रन्थारंभभनि ॥
 इति पीठिका समाप्तः ॥

ओं नमो रिहं ताणम् । नमो सिद्धाणम् ॥
 नमो आयरियाणम् । नमो उब्झायाणम् ॥
 नमोलोएसव्वसाहूणम् । एसो पंच नमुक्कारो ॥
 सव्व पावप्पणा सणो । संगला यंच सब्बेसिं ॥
 पढमंहवय मंगलम् ॥

मो० मंगलोक नवकार । चौदह पूरब सार यह ॥
 हरन अमंगल भार । तरनमंगला चरनअब ॥
 नमो प्रथम अरि हत । भागवंत भगवंत प्रभु ॥
 अष्ट कर्म जय वंत । अष्टादश दूपणरहित ॥
 अष्टम अतिमान नाथ । अष्टमठसुगुणतिसेव्यजो ॥
 अष्टम जिन जननाथ । हाथ जोरिवंदन करों ॥
 अष्टम सिद्ध प्रसिद्ध । ज्ञानप्रबुद्ध प्रबोध कर ॥
 अष्टम अष्टि नय निद्ध । जिनहिं वन्दनाकीजिये ॥
 अष्टमलहि पद्मद भेद । और आठ गुनही बहुरि ॥
 अष्ट कर्मकों खेद । तजि दीनोंतिनकों नमों ॥
 अष्टम जे आचार्य । त्रिकालग्रय त्रय तापहर ॥
 अष्टमगुणके काव्य । कारण तारण को नमों ॥
 अष्टमरहित उपाधि । उपाध्याइ जपतप क्रिया ॥
 अष्टमअसाधहिंसाधि । सावधान तिनकों नमों ॥
 अष्टमरह अंग उपंग । वाग्रह जे सब शास्त्र के ॥

पढ़ें पढ़ावें संग । द्वादश अंग अभंग वर ॥
 पुनि पंचम नोकार । नमस्कार जासों कहें ॥
 सकलसाधुसुखसार । जिन कल्पीकल्पीधविर ॥
 सत्ताइस गुनवान । जेते ढाई द्वीप में ॥
 चारित लै सुजान । भये तिन्हें वंदन करौ ॥
 परमेष्ठी नव कार । येई जिन जन शास्त्रके ॥
 सकल पाप संघार । होतजाप जाकौ कियें ॥

अथ पंच कल्याणक ॥

अब पाँचों कल्याण । कहि वरनौ चितदे सुनौ ॥
 परम धरमकी खान । भरम मिटत भवभवनुको ॥
 पंच कल्याणक सार । च्यवनजनमचारित्र पुनि ॥
 ज्ञान नुक्ति आधार । चौबिस तीरथ नाथ के ॥
 महावीर तिहि मांह । चरम तिथंकरकी अधिक ॥
 इक कल्याणक छांह । गर्भाकर्षण इन्द्र कृत ॥

अथ काल प्रमाण ॥

चौपाई छंद ॥

काल विभाग जैन मत जानौ । छह आरे करि भेद बखानौ ॥
 पहिलौ सुखन सुखमकहिनाम । ताकी अवधि सद्बु विश्राम ॥
 कोड़ा कोट्ट चारि जे सागर । ताकी उपमा जोग उजागर ॥

अथ सागर प्रमाण ॥

दो० पल्योपम कौ मान अब । पहिलै करों बखान ॥
 लांबीचौड़ी भूमि खनि । इक इक जोजन जान ॥
 तितनी हीं औड़ी खनौ । ऐसी खात वनाय ॥
 ठांसिभरौतिहिंजुगलिया । वालवाल कतराय ॥
 चक्रवर्त के कटक तैं । दावें दवैं न सोय ॥
 सरित सलिलतापरवहैं । त्रवैं न जलकणजोय ॥
 बालअग्र कोपरम अनु । प्रतिसौवरसनिकाल ॥

होवै रीतोखात जव । सो पल्थोपम कमल ॥
 पल्यु जुकोड़ाकोड़दस । सागर मान वसान ॥
 जेनागम परमान कहु । एतो सागर यान ॥
 सागर कोड़ाकोड़ जव । बीस सुनौमिति होय ॥
 काल चक्रतव होयसो । परौ जानो सोये ॥
 घोषार्ड ॥

पहिले सुखमसुखम आरे के । कहौ मकळ जुग ता तारेके ॥
 जने जुगलियातहं सब नारी । साथहिं ब्रह्म वारो इकनारी ॥
 यद्यपि एक कूप तें उपजे । पै ते तुल्यह तुल्यनि निपजे ॥
 तीन कोसकी तिनकी काया । पल्थोपम त्रय आयु बलाया ॥
 भुख लगे तीजे दिन तिनकीं । भरे पेट इक सागर जिनकीं ॥
 उनंचान दिन पितु अरु माता । तिनके पाळन लाळन राता ॥
 कल्प वृक्ष फिरि तिनकीं पाषे । यथा इच्छ तिनकीं संतोषे ॥
 इकमत छप्पन पमुरी तनमें । पहिले यागे में यों जन में ॥
 दुर्गा आगे गुणमा नाम । कोड़ा कोड़ तीन को धाम ॥
 सागर ओपम ता गौ भाते । तिनके जुगलिन की सुनि सापे ॥
 होम होय तन हें पल्थायु । दोय दिवसु पाछें ते खाये ॥
 वेर मान आहार मभाते । मान पिता सांसठ दिन पाळे ॥
 कल्प वृक्ष पुनि तिनकीं लाळे । तिनकी पसुलीकीसुनि चाले ॥
 इकमत अट्टाडम ते गरवे । अब तीजो आरो सुनि साखे ॥
 सुगमा दुग्गमा नाम अनूप । कोड़ कोड़ हें सागर ओपे ॥
 कानमानतनजाम जुगलिया । पल्थोपम इक आयु संवलिधा ॥
 इक दिन अतर करे अहारा । मान चांवले के तिहिं आरा ॥
 उन्निम दिवम मानु पितु पाळे । कल्प वृक्ष फिरि तिनकीं लाळे ॥
 सांसठ पसुली तन में जानो । यों तीजो आरो परमानो ॥
 दुखमा सुखमा चौथो साधो । काल मान तीजो को आधो ॥
 प तामें इतनों कम चाहिये । सहस्रवयालिस वरसें कहिये ॥

जुगल धर्म इहि आरे नार्ही । नित्य भख्यापै तिहि माहीं ॥
 कल्प वृक्ष देखे ते नहें । कर्महि तें जीवन निरवहें ॥
 पंचम आरा दुखमा नामा । जामें नेक न सुख विश्रामा ॥
 सहस्रकीस वरसजाकोमिति । वरस एकसौ बीस आधुगति ॥
 साढ़े तीन हाथ तक नाना । दिन छे चेर भय दुख नाना ॥
 अंत समय इहि आरे माही । जैन धर्म थोरै रहि जाही ॥
 दुख सह आचारज नच्छेसा । नामे कालगुनी साध्वी बेसा ॥
 नागिलस्त्रावक और त्रायिका । नाम सत्यश्रीवरप्रभाविका ॥
 चरम काल इहिआरे लहिये । चतुर संघ याही कों कहिये ॥
 छठवां दुखम दुःखमा नामा । सहस्रकीसवरसमितितामा ॥
 एक हाथ तन मित अरु जामें । सोरइ वरस सरसचय तामें ॥
 लोक कुरूप कुधर्म कुकामी । अगति अलजअचैलअदासी ॥
 नव वरसी तिथ गर्भ प्रकासी । घरविनजनगिरिगुहानिवासी ॥
 मत्स्या सी जनकुत्सित कर्मा । छठवें आरे को यह धर्मा ॥
 छठवें पहले दूजे आरें । जैन धर्म नहिं तिनकें वारें ॥
 इकठें छहलौं क्रम करि कहिये । उत्सर्पिणी कालतिहिकहिये ॥
 फिरि छहते इकलौं उलटोक्रम । अब सर्पिणीकाल कौआगम ॥
 दुहूं काल मिलि दारह आरे । सागर बीसकोड़ को डारे ॥
 काल चक्र इक याको कहिये । जेनागम मत ऐसे लहिये ॥
 चरम काल तीजे आरे में । अरु चौथे पूरे वारे में ॥
 चौबीसों जिनवर अवतरे । ज्ञान योग तप वपु गुण भरे ॥
 कुल इच्छाक गोतकारुमपजे । इकईसजिनवर तामें निपजे ॥
 अरु हरिवंश वंश के नार्ही । गौतम गोतमाहिंतिहि ठाहीं ॥
 दोय तिथंकर औरों भये । मुनिश्रीसुवृत नेम छवि छये ॥
 वरस पछतर घाके जवें । अठ मास साढ़े पुनि सबै ॥
 चौथे आरेके जव रहे । तेईसां जिनवर निरवहे ॥
 चरम तिथंकर तव अवतरे । महावीर स्वामी गुण भरे ॥

दुन्दरी को कछु करि दिम्नारग । प्रथम चवन अब कहीं मुदाग ॥
अथश्रीमहावीर स्वामी चवन कल्याणक ॥

चौपाई ॥

श्रीपम ऋतु मितमास अमादें । छठतिथि निगिनिशीयनहिंवादें ॥
देवलोक तें च्यवनविचारयो । देव योनि तजिवो निरधारयो ॥
वीस मागरोपम वय मजिकें । शुभ विमान पुष्पोनर तजिकें ॥
देवस्थित भव पूरण करिकें । मनुष योनि को हित चित धरिकें ॥
जम्बूदोष भरथ छिति मारहीं । ब्राह्मणकुण्ड प्राप्त तिहिं ठारहीं ॥
ऋषभदत्त द्विजवर की घरनी । देवानंदा सुवर्ण बरनी ॥
मतिश्रुतिअवधिज्ञानसंगलेंके । ताके गर्भ चवे सुखदेंके ॥
सुकुमचवनसमय नहिंजान्यो । करिके चवन भवे पहिचारयो ॥
ताही निशि तिन देवा नंदा । चौदह गुपन लगि सुख कंदा ॥
अति उदारअति आनदकारी । अद्भुत मंगलीक हित धारी ॥
सो लगि लहि अति मोदितभरें । आनद अत हवे पति पै गर्डें ॥
प्रथम जोरि कर विनय मनायो । पुनि अंजलि सों सीसछुवायो ॥
पाछें भवे विवरथा कही । जो कछु सुपन मांह उनलही ॥
काहि ताको फल पूछन लागी । भागवत मुहि करो सभागी ॥
तवपतिनिजमतिगतिअनामितकरिगतिनमुपननको आशेचितधरि ॥
अति हार्पित आनंदित ह्वें के । मोद भई हवे सुख सरसे के ॥
प्राणप्रियेकहि नियमोभाख्यो । दर्ददयो वितको अभिलारख्यो ॥
बड़ो अलक्ष्य लाभ तुहि हवेहै । मुद मंगल आनद हित पैहै ॥
चार्योवेद गनित गुण जेतें । जोतिप केसव लहिहै तेतें ॥
अरु इतिहाम पुगण ज्ञानगुन । वेदककाव्यछंद सिच्छापुन ॥
आगमअगम निगम गुणजानी । तें गर्भ अर्म में जानी ॥
पियाजयकी तिथ जवयां सुनी । मुदित भई इकतें सतगुनी ॥
आम पाय पतिपाम न छंड्यो । हाम विलासभोगवृत मंड्यो ॥

अथ एन्द्र देवद वरुन ॥

चौराई ॥

तेहीं सनय गुबदतिहि काला । इन्द्र देवतन को भूपाला ॥
 बज्र जानु को आयुष्काहिये । ऐनावत गज वाहन लहिये ॥
 जादी सना सुधनी नागा । लाख बनीत विमान सुधाना ॥
 मुख्य धरन अवतंत्य विमाना । तंतित सहस्र देवगण नाना ॥
 सात अजीक सैन सैनारति । अन्नमंत्रप्रणयअयनित अति ॥
 लोक पाल सब आगे ठाढ़े । वैज्यो राज सिंहासन गाढ़े ॥
 सुयडलमुकुटकटक उरगाला । अंगदादि भूपण मखिजाला ॥
 चासर छत्र बीजना राजे । नाटक गीत नाच धुनि छाजे ॥
 जिहि तपकरियहर्वभव पाई । लो में लो को देहुं बताई ॥

अथ कार्तिकसेठकथा ॥

सुनि सुदृति स्वामी के वारे । पृथ्वी भूपण नगर मझारें ॥
 प्रजापाल नृप तापी राजर । प्रजा सीयपरसुखद विराजा ॥
 तापस एकतहां पति आयो । तिन तापस सबको विरमायो ॥
 राजा प्रजा तपे तापस घर । परस ऐनंआवे नित उठ कर ॥
 कार्तिकसेठ एक वृत्त धारी । सुजनवसें तिहि नगर मझारी ॥
 सो ध्रावक नहिं ताके गयो । ताते तापस द्वेषित भयो ॥
 पारनदिन नृपसौं तिन कह्यो । कार्तिकसेठहिहम नहिंलह्यो ॥
 सेठ पीठ पायस की धारी । तौ हम पारन करें तुम्हारी ॥
 सुनि नृप सेठहि वेग बुलायो । कीनों जो तापस मन भायो ॥
 सेठ पीठ पायस की धारी । गरमा गरम लाष के धारी ॥
 लाग्यो तापस पारन करने । लागी पीठ सेठ की जरने ॥
 तापस निज कर नाकहि छेके । सेठहि सैन नैन की देके ॥
 अति अपमान ठानि गुदठायो । जानि सेठ जनअतिपछितायो ॥
 जौ पहिले नें चारित लहतो । तौ इतनो कुखकाहे सहतो ॥
 ऐसे बार बार चित मारीं । लोचि सेठजग जानि वृथाहीं ॥

निज अपमान सेठलहि मनमें । चारिततुरत लियोजिनजनमें ॥
 तिहिसंगसहस अठोतरश्रावक । भयेजती अतिपरम प्रभावक ॥
 संधारा लेंकें तन तज्यो । सेठ सुधर्म इन्द्रपद भज्यो ॥
 मरि तापस ऐरावत भयो । सुरपतिनिजनाहन करिलयो ॥
 तव तिन गजद्वै सस्तक कोने । इन्द्रो दोय रूप धरि लीने ॥
 ऐसे जेते सिर गज करै । सुरपतिहू तेते वपु धरै ॥
 यों गज गर्भ हीनकरि दीनो । विवस होयतब भयो अधीनो ॥
 सुईइन्द्र यह बइभव जाकी । सुर नर मुनि भयमानतताकी ॥
 अबधिज्ञानकरितिनजवजान्यो । जिनवरचवमगुजोनिप्रमान्यो ॥
 मुदित होय आनंदअति पायो । आसनते उठितिहि दिसघायो ॥
 सात पैलचलिकियो प्रनामा । नमोहैंत यों कहि सिर नामा ॥

अथ इन्द्रस्तुति ॥

तुमहो ज्ञान जोग के स्वामी । तप विराग करि पूरन कामी ॥
 पुरुष प्रधान लोक हित कारी । दया धर्म समकित परभारी ॥
 भुक्ति भुक्ति दायक भगवाना । सग्नद अभयदमगदसुजाना ॥

अथ मेघ कुमार कथा ॥

मेघकुमारहि ज्यों जिन स्वामी । मुमग दिखायो पूरन कामी ॥
 ताकी कथा कहैं अति प्यारी । जिनजनगन की आनदकारी ॥
 श्री जिनवरस्वामी भगवन्ता । एक समय विहरत वनसन्ता ॥
 विचरत स्नेनक सुत सैं भेटे । बोधि ताहि भवदुःख खखेटे ॥
 अंत द्वारपर थल तिहिकीनो । गहन लग्योगुरु वचनअधीनो ॥
 तहां साधु बहु जावैं जावैं । गमनागन संघट्ट बढ़ावैं ॥
 मेघकुमार गज स्नेनक तुन । भयो गमनआगम तैं दुख युत ॥
 तब उनअपनी विभव विचारो । तदनसेज सुखमसि मुखनारी ॥
 हाव भाव भरभुजभरि भेटनि । सब विधिकोसुखसारसमेटनि ॥
 एतं सुख तब नोद न आवत । सो अब ह्यां इतनो दुखपावत ॥
 चातैं किरि अननो घर लहिये । साधुपनो दुख असहनसहिये ॥

यहसतिचित्त धरि गुरु दे आये । गुरु बिन भाखें मनकी पाये ॥
 कह्योवत्सयहदुखनहिं सहिकें । चहतरघोफिरिग्रहसुखलहिकें ॥
 ऐसी मति कवहुं नहिंकीजे । यह केतो दुख जाहि न धीजे ॥
 पूरव भय जेते दुख सहे । धरम मरम हित जात न कहे ॥
 सब विरतारि कहीं लुट्योसो । पूरव जनम करमगुन तोसो ॥
 गिरि देताडनाहिं कर्किव तू । भयो हजार करिन को बरतू ॥
 छहरदवारो गत मद वारो । मेरु मान अति ऊंचो भारो ॥
 आयो श्रीपद्म भीपन काला । वन में लगी दवानल ज्वाला ॥
 दव डरतंतव तू तहं नम्यो । निर्जल सर पंकिल में फस्थो ॥
 तहांएक अरि करिवर आयो । तिन तुहिकरिआघातदुखायो ॥
 सहनकियो तें अति दुखताको । सातदिवसनहिलहि साताको ॥
 एक सतबीस बरस वयभरिकें । विंध्याचल में जनम्यो मरिकें ॥
 घारि दांत कों हाथी सरज्यो । अरु नवरनजातंगिरिलरज्यो ॥
 जाके और सात सै हाथी । अनुचर हवेप्रदरेंतिहिसाथी ॥
 पूरव भवदव दुख जो पायो । जातरसर तेंसो लुधि आयो ॥
 सोविचारिचित्तधरितिनवरकरि । भूगिएकराखी विनुटनकरि ॥
 एकदिन वनघनफिरिदबलागी । जातु श्रेणि वनकीडरि भागी ॥
 भागि कहूं जब ठौर न पाई । तिहि अत्रिन भुवजाइसनाई ॥
 गजवरहुं तिहि थलभजिआयो । ज्योंत्यों करितहंजायत्तमायो ॥
 फस्थो अनेक जीव संघट में । हलिदलिसदथोनतासंकटमें ॥
 ता गज को जबतन खुजलायो । खुजलावन को घरनउठायो ॥
 सोपग थल लूनो नहिं पायो । ससाएकभजितिहि थलआयो ॥
 ताहि देखि गजअति अनुकंप्यो । घरन घरन में जैहै चंप्यो ॥
 जीव दया वृत चितप्रतिपार्यो । फेरि नचरनधरनिपै धार्यो ॥
 ठाई दिन लौं त्योहीं रह्यो । जब लगि सोदावानल दह्यो ॥
 दव के शांत जब सस सरहयो । पदपीडातें गज हिय दरअयो ॥
 मुख प्यात्त दुख तापर वाज्यो । गिर्योभूमिगजदवदुखझाज्यो ॥

परन करि सो बरसी आय । त्यागि दयो तनशतिसतभाय ॥
 तिहितय स्त्रेनिकराजसदन में । नेत्रकुमार आय तुम जनमें ॥
 तेही पुन्य साध पद पायो । अब क्योंकातर ह्वै अकुलायो ॥
 एकै जीव हेतु तब तैसे । भूख प्यास दुख सहे अनैसे ॥
 सो अब जगत पूज्य साधनतैं । दुखीगमन आगम बाधन तैं ॥
 ऐसौ तोहि बत्स नहिं चाहिये । जो तुहिचहत परनपदलहिये ॥
 यों गुरु बच सुनि मेघकुमारा । निहचलज्ञान लह्योनिरधारा ॥
 हाथ जोरि खुरु पद सिरनायो । प्रभु बूढ़त तुम गोहिं बचायो ॥
 अब जिहि माहिंचित्त सृतमेरी । रहै साधु सेवा में घेरी ॥
 दरस परस नित उनको पाऊं । निसिदिन चरनसाधुकैध्याऊं ॥
 साधु चरन रज सिर परराखैं । उनके बचन गुवारस चाखैं ॥
 ऐसी मति मोहिं देहु दयाला । सुनितोपे गुरु परम कृपाला ॥
 एवमस्तु तासों गुरु भाख्यो । तबतैं निज तपवृत बढ्यारख्यो ॥
 तप प्रभाव तन तजितिहिथाना । भयोनेवलहि विजयविमाना ॥
 पुनिविदेह थलघड़ि छविछायो । तप प्रतापतैं बुक्ति सिधायो ॥
 योंगुरु कुंवरहि पथ दिखायो । कुपथ कूपों गिरन न पायो ॥
 यतैं जीव दया सत नीको । पाउं सुफल जनमता जीको ॥
 ऐसे गुरु जन के हितकारी । तारनतरन मरन भयहारी ॥
 काम क्रोध लोभादिक जितने । गग द्वेष मरतादिक तितने ॥
 जिन जीतैं जिन वर दुग नाई । तृण जोई चाहौ सोइ होई ॥
 एमे कहि दिशि मीन नवाप्यो । अपने मन संकल्प बढ़ायो ॥
 धृन भाषियत चक्र बच नवहीं । ऐसो अचरज भयो न कवहीं ॥
 नो अरुंधत ओर कलदेवा । चक्रवर्त आदिक वसुदेवा ॥
 भिष्टुवकुन्द नहिंउपजैकवहीं । राजादिक कुल मिलैनजवहीं ॥
 यतैं बड़ो अक्षय्यो नामी । जोद्विजकुलजननैं जिनस्वामी ॥
 काल दक्र अनजितन वितीतैं । उत सर्पनि अब सर्पनि बीतैं ॥
 हंडक नाम काल इक आवै । जो ऐसे अचरज उपजावै ॥

ताही काल माहिं हन हेरे । उपजत ऐसे दसों अछेरे ॥
 सो यहि काल आय दरशाने । अति अद्भुत रसकरि सरसाने ॥
 आदिनाथ जिन आदि सुदेंकें । महावीर स्वामी लौ लेंकें ॥
 जिन जिन जिन वारे में जो जो । भयो अछेरौ वरनों सोसो ॥

अथ प्रथम अछेरा ॥

एक काल इक छिनमें सोई । बहु जीवन की मुक्ति न होई ॥
 होय कपापि तु अचरज जानो । ऋषभ देव के वारें मानो ॥
 एक ऊन सत जिनके साधू । आठ भरत सुत रहित उपाधू ॥
 आपसहित इकसत अरुआठा । इकछिन मुक्ति गयेसुनिपाठा ॥
 प्रथम अछेरौ यह जिय जानो । अब दृजे को सुनो वखानो ॥

अथ दृजौ अछेरा ॥

जैन धर्म दोधे आरे में । जब विच्छेदे ता वारेमें ॥
 असंजती पूजें तव जन सव । पूछें धर्म विवस्था ते तव ॥
 कहें कि तव जिन जनकोदीजे । अन धन कयापूजा कीजे ॥
 साध बुद्धि तव उनकी पूजा । हीन लगीकोउ और नदूजा ॥
 दूजौ यह अति अचरज नयो । सुबुधि नाथ के वारें भयो ॥

अथ तीजौ अछेरा ॥

नरक न जाइ जुगलिया कबहूं । जाय तु अचरज अबहूं तवहूं ॥
 कोसंबी नगरी को राजा । सुमुखनामअतिसुभगविराजा ॥
 वीरा कोली इक तहं वसे । वनमाला ताकी तिय लसे ॥
 इक दिन नृप ताको लखि लई । रूप देखि सब सुधिवुधिगई ॥
 काम अंध हवै कछू न जानी । छलकरिताहि महल मेंआनी ॥
 भोग विषय तासों नृप संज्यो । वीरा कोली धीरज छंड्यो ॥
 डूढत जहं तहं दुखित विसाला । हा वनमाला हा वनमाला ॥
 विरहदुखिततिहिंनृपलखिलीना । बड़ो खेद पछितावो कीना ॥
 दैवजोग नृप अरु तिय ऊपर । गाज परी ताही छिन दूपर ॥
 दूजै भव मरि युगली भयो । ते हरिवर्ष खेत सुख छयो ॥

वीरा कष्ट साधि मरि भयो । किलिख नाम देवता भयो ॥
 त्रतिनयुगलिहिलखिदुखपायो । पूरव जनम वैर सुधि आयो ॥
 तिन युगलिहिं ह्वाँतै लैं चलयो । चम्पा नगर प्रजा तैं मिल्यो ॥
 नृप हरिभद्र नाम कहि थाप्यो । रानीसहितताहिसुखव्याप्यो ॥
 नगर प्रजा कौतिन सिखरायो । नृपहिंमास मयभोग खवायो ॥
 ताही पाप युगलिया मरि कै । नरकगये अचरज जगकरिकै ॥
 कुल हरि वंस भयो तिनहीं तैं । हें प्रसिद्ध जगमें जिन हीतैं ॥
 यह ई तीजा भया अछेरा । जिनस्वामी सीतल की बेरा ॥

अथ चौथा अछेरा ॥

चौथौ अचरज अवसुनि कहिये । अद्भुत रसताकौ पथ गहिये ॥
 तीर्थकर नहिं तियङ्ग उपजे । जौ उपजे तौ अचरज निपजे ॥
 मल्लिनाथ तिय ह्वै ओतरे । जिन वरवपु अद्भुत रसभरे ॥
 पूरव जनम करम यह वांध्यो । तातैं तिय तनसों जिय साध्यो ॥
 तिहि भव महा विदेह नगरमें । शतबल नृपके सुखद नगरमें ॥
 कुंवर महाबल नामा जनमें । मातापिता अति मोदित मनमें ॥
 मित्त किये छह राज कुमारा । वय गुनसील रूप सम सारा ॥
 अचल धर्म पूरन अभिचन्दा । वसुवै श्रम छहनाम नरिन्दा ॥
 सातों बाल मित्र मिलि पूरे । समपदवी शापत हित रुरे ॥
 लैचारित सब तप कौ लागे । महाबली पै छिपि कछु जागे ॥
 छहतैं अधिक कपट तप कीना । तिहि प्रभावतैं तियतन लीना ॥
 मिथला नगर कुंभ नृपजाकैं । प्रभावती तिय गर्भ सुताकैं ॥
 मल्लिकुशारी इहि सुभ नामा । रूप सील गुनपरमललामा ॥
 अगहन मुदि एकादस दिना । जनमीजिन वरह्वैतिहिछिना ॥
 छहैं मित्रहं जव मरि भये । देसान्तर में राजा भये ॥
 सुनि गुन रूप सील मल्लीकौ । भयेभंवर सुनिगुन बल्लीकौ ॥
 आवे तजि निज २ रजधानी । मल्लिकुमारीजिहिदिसजानी ॥
 मल्ली अवधि ज्ञान करि जाने । परम सनेही मीत पुराने ॥

तिन्हें देखि निज रूप लुभाने । विवसकामवसविकलपिछाने ॥
 मल्लि स्वर्न पुतली सज कीनी । तामें निज छविसवधरिदीनी ॥
 रत्न भूपनन भूषित कीनी । कंचन में पुतली रस भीनी ॥
 नित प्रतिं ताके मुख के माहीं । अन्न कोर इक २ धरि जाहीं ॥
 सोसड़िअन्नअधिकजवविगर्यो । अतिदुर्गंध भयो घरसिगर्यो ॥
 छहैं जनन तव सो लहिलीनी । अतिविगन्ध घनतौघिनकीनी ॥
 तव मल्ली ते सब समझाये । अन मय तनके भेद बताये ॥
 अस्थिचर्म नस वस मज्जामय । रुधिररुमास मूत्रमलआलय ॥
 ऐसोयह अनतन धन घिनघर । सुनौ सनेह जोग नहिंवरनर ॥
 वीधि छहन कौ चारित दीनौ । जनममरन दुखतें करिहीनौ ॥
 चौथौ अचरज यहै बखान्यौ । अतिविसमयअद्भुतरससान्यौ ॥

अथ पंचम अछेरा ॥

मिलें न वासुदेव द्वै जग में । जो पै मिलें तुअचरज मग में ॥
 खंडधातुकी में इक नगरी । कंकाअमर नाम गुन अगरी ॥
 वासुदेव इक कपिल सुनामा । तहां वसे सुभ लच्छन धामा ॥
 इक दिन किहू हेत गुन मये । कृष्णसुवासु देव तहं गये ॥
 ताकौ हेत कहैं सुनि लीजै । एक समय नारद रस भोजै ॥
 पंचाली के अविनय खीजे । खंड धातुकी जाय पतीजै ॥
 पद्मोत्तर राजा पै गये । रूप द्रोपदी वरनत भये ॥
 तीन लोक में नाहीं ऐसी । सुन्दर तिया द्रोपदी कैसी ॥
 सुनि गुन राजा मोहित भयो । देव अराधि सिद्धजप कियो ॥
 तिन सुर जाय द्रोपदी हरी । लाय नृपति के आगे धरी ॥
 पै द्रोपदी सील व्रत साधे । निस दिन रहै धर्म आराधे ॥
 भोर भयो पांडव जब जान्यो । चकितथवि तहें अतिदुखमान्यो ॥
 डूढ हारि जब कछु नवसाई । तव सुधि कीने यादव राई ॥
 कुन्ती जाय कृष्ण कौ लाई । आय कृष्ण सब विधामिटाई ॥
 नारद मुनि ताकी सुधि पाई । तव हंसि यौ पांडवन सुनाई ॥

कहा करी तुम मिलि पांचौपिय । राखि न सके पांच मेंडक तिय ॥
 सोरह सहस अठोतर से तिय । एकाकीराखत हम ज्यों जिय ॥
 यों हंसि रिपु पे करी चढ़ाई । सहपांडव चलि गये कन्हाई ॥
 पदमोतर राजा सों लरे । जीति ताहितिय लेकरिहिरे ॥
 तव जयसङ्घकृष्ण धुनि कोनौ । कपिल सुवासुदेव सुनि लीनौ ॥
 कपिलतहां तव मिलनविचारी । मुनिसुवृत्ति जिनिवरजेभारी ॥
 कह्यो न वासुदेव द्वै मिलें । मिलेंतुअचरजअतिजगखिलें ॥
 जौलौ कपिल सिंधु तट आये । तौलौ कृष्ण सिंधु मधि पाये ॥
 सङ्घ नाद तव दुहुं दिस भये । नादहिं तो मिल निज अहगये ॥
 यह पांचवों अचंभौ नयो । नेम नाथ कै वारें भयो ॥

अथ छठवों अष्टेरा ॥

चमरेंदर धर्मेंद्र लौक लो । जाय नहीं जौ जाय अचंभो ॥
 पुरन नामा तापस एका । कियो घोर तपवरस अनेका ॥
 सब विधि साधि कष्ट मरिगयो । तप बल तें चमरेंदर भयो ॥
 अवधि ज्ञान करि जवउनदेखा । धरमेंदर पद निजसिर लेखा ॥
 लखिअतिक्रोधअगिनतनजार्यो । धरमें दरसां लरनविचार्यो ॥
 जोजनलाखबदनविस्तार्यो । सुरन डगवन लाग्यो भार्यो ॥
 मन में महावीर की सरना । गहियरि काहू को जी डरना ॥
 तव धरमेंदर वज्र चलाया । चमरेंदर भाजा भय पाया ॥
 प्रभुपदतर अनुतन धरि रह्यो । अवधिज्ञानकरिसुरपतिलह्यो ॥
 महवीर की सरना लीना । तव धरमेंद्र छांडि तो दीना ॥
 कह्योवच्यो जिनवरकी सरना । फेर न ऐसो कवहुं करना ॥
 दुहुं परम्पर दोष छिनाये । अप अपने थल दुऊ सिधाये ॥
 दृष्टो अष्टेगें पूरन भयो । अब आगे सुनि अचरज नयो ॥

अथ सातवों अष्टेरा ॥

सतवों अचरज जिन देसना । निफल न होय एकपल छिना ॥
 अरुजो होय तु अचरज होई । यह जग में जानै सब कोई ॥

महावीर भगवंत सुजानो । जद्वे भये प्रभु केवल ज्ञानी ॥
समो नरन सद नुन रचायो । महावीर तव सब सुनायो ॥
सोद्वेसना न कितहूं मानी । यह अचरज सतयोसुनिज्ञानी ॥

अथ अठ्ठां अछेरा ॥

भत भविष्यत अरु अरु तवहों । ऐनो अचरज भयो न कवहीं ॥
सौअछव उपसर्ग बखाना । गोमालक तं जो भगवाना ॥
सह्यो कह्यो सो सुनि चितलाई । साधरुनी नगरी सुखदाई ॥
तहां दस इक खल नन खलसुत । गोमालक तपसी इरपायुत ॥
तिन जिन बरनों बाद नचायो । प्रभु पर तेजो लेस चलायो ॥
सुनखत सरवभूत दोंय जन । महावीर के मुख्य सिन्ध तन ॥
साधु दोंय ते आड़े आये । ते जलम ते तुन जलाये ॥
तिनहिं जारि वह तेजो लेसा । गरी जहां महावीर जिनेसा ॥
द्वे प्रदच्छिना पाछे चिन्थो । गोमालकही तां जरयो ॥
पे जिनदर के तनके नाहीं । अरुन चिह इकभयोतहाहीं ॥
काल पाइ सोऊ निटि गयो । पे जगनें यह अचरज भयो ॥
यह उप सर्ग जिने नहिं होई । यों कह्यो अछेरो सोई ॥

अथ नवों अछेरा ।

रवि सत्तिनिज विमानयुतआपै । जाहि न कितहूं कवहूं कापै ॥
जोपे जाहिं तु अचरज होई । विदित बात जानत सब कोई ॥
कौसंबी नगरी के माहीं । महावीर स्वामी तिहि ठाहीं ॥
समो सरन देवन तहं रच्यो । एको सुख जाते नहिं बच्यो ॥
तहां सूर सति अति छवि पाये । निजविमानद्वे देखन आये ॥
नवम अछेरो यहै बखानो । अब दसवों हूं सुनो सुजानो ॥

अथ दसवों अछेरा ॥

अब दसवों अचरजसुनिमोऊ । डिजकुलजित जनमें नहिंकोऊ ॥
देवानन्दा उर मझारा । श्रीभगवन्त लियो अबतारा ॥
दस अचरज ये सुन्यति कहे । सेनाधिपहि बलि कहि रहे ॥

अरहंतादिक जिनजन सबहूँ । भिच्छुककुल नहिं उपजें कबहूँ ॥
 सो श्री महावीर जिन ईसा । द्विजकुल गर्भचबे जगदीसा ॥
 कुल अभिमान मान मन साध्यो । नीच गोत कुलयातें वांध्यो ॥
 सो सब अब विस्तार बखानौ । पिछले भव जिनवर के जानौ ॥
 सत्ताइस भव महावीरके । बरनौ सुनि गुन परम घोरके ॥
 जाभव तैं समकित मित जागी । मुक्त होनकी थित अनुरागी ॥
 ताहि आदि दै महावीर लैं । सत्ताइस भव भये सु बरनैं ॥
 प्रथम भये नयसार थलीसा । जिन आतिथ हितचहेमुनीसा ॥
 भोजन सजि मग जोवनलाग्यो । मुनिआयेलखिमुद मनजाग्यो ॥
 सादर सनमाने विहराये । साध बिहरि अति आनंदपाये ॥
 मुनितव कृपा पात्र जन जान्यो । ताके सनमुख धर्म बखान्यो ॥
 सोसुनि तिन समकितपदपायो । मुकुत जोग ताको भवभायो ॥
 घह पहिलो भव दूजो सुरको । तीजो सुनिअब बरनैं घुगको ॥
 भरत चक्रवै घर अवतरे । नाम मरीच सकल गुन भरे ॥
 इक दिन भरत आदिस्वामीतैं । पूछयो माय नामि नामी ते ॥
 अहोजिनेमर अब इहिकाला । समोसरन थल परमविसाला ॥
 यामें और जीव कोउ तुमसां । तीर्थकर है कहौ सो हमसां ॥
 सुनि बोले श्री आदि जिनसा । समोसरन में तो नहिं ऐसा ॥
 पै तापस तुव मुअन मरीचा । लहि है पदवी परम अनोचा ॥
 चौविसवां जिनवर मंडें है । महावीर नामा जस पेहै ॥
 चक्रवर्ति हूं कैं है मोडें । नाम मित्र प्रिय ताको होई ॥
 महा विदेह खेत सें उपजें । मुका नगरी में सो निपजें ॥
 अरु त्रिपुष्ट नामा बसुदेवा । भगत खेत में कैं है एवा ॥
 ऐमे वचन भगतमुनि जिन तैं । सुत मरीच पे आये छिनतैं ॥
 दै पर दच्छन बन्दनकीन्हा । भागवन्त अपना सुन चीन्हा ॥
 पुनि सुत सां उनऐमे भार्यो । दै भगवन्त वचन की सार्यो ॥
 तैंगे जीव तिथङ्कर इहैहे । वासुदेव पद हूं सो पेहै ॥

चक्रवर्ति हूं हूं हैं सोई । कही बात ऐसे मुद मोई ॥
 तोहि तियङ्कर पद समुहायो । यातें हों तुहि वन्दन आयो ॥
 मुनि मरीच अतिआनंद पाग्यो । विपुल हर्ष तें नाचन लाग्यो ॥
 कुलको गर्भ भयो अति भारी । मोसां सकुल न जगत मझारी ॥
 तेहो गर्भ नीच कुल बांध्यो । तातें भिच्छुक कुल भवसाध्यो ॥
 कोड कोड़ सागर वय माहीं । सत्ताइस भव भयो तहार्हीं ॥
 तामें तीन प्रथम ये कहे । चौथे भव सुर तन धरि रहे ॥
 पुनिग्यारह भवमाहि इकन्तर । इकतपसी इक विबुधनिरन्तर ॥
 पन्द्रह भव जव ऐसे गये । राज कुमार सोरहें भये ॥
 सत्तरवें सुर ठारह माहीं । वासुदेव पुनि भये तहार्हीं ॥
 भव उनीसवें नरक सिधारे । बीसैं जनम सिंह तन धारे ॥
 गये नरक पुनि भव इक ईसैं । धरयो जनम नृप कौ वाईसैं ॥
 चक्रवर्ति पुनि हूं तैईसैं । पेर देवता हूं चौबीसैं ॥
 राजा नन्द पचीसैं भये । पुनि छबीसवें सुर गुन छये ॥
 सत्ताइसवें भव भगवन्ता । देवा नन्दा उदर वसन्ता ॥
 यातें इन्द्रहि योग सुगर्भे । नृप कुल में सरजावे अर्भे ॥
 हरि नगमेशिहि ऐसे कहिकें । फिरबोल्योसुरपतिमुखलहिकें ॥
 अब तुम वेग जाहु तिहिनगरी । देवा नन्दा जहं गुन अगरी ॥
 ताके गर्भे वेग चुरावौ । छत्रियकुण्ड ग्राम में लावौ ॥
 सिद्धारथ राजा जहं राजै । त्रिसला रानी जहं छवि छाजै ॥
 ताके गर्भ माहिं है कन्या । ताहि तहां तें लै गुन धन्या ॥
 बदलिदेहु दुहुगर्भ परस्पर । त्रिसलाकूख माहिंजिनवरधर ॥
 हरिनगर्भे सीयहआयुससुनि । करिप्रणामतिहिदिसचाल्योपुनि ॥
 करन वइक्री रूप विचार्यो । सब रतननको सार निकार्यो ॥
 बहुजोजन मितिदण्डरूपधरि । समुद घात ताकें पाछे करि ॥
 लोकउचित निजरूपवनायो । सुर उत्कृष्टी गति करिधायो ॥
 अमितिद्वीप सागरमधि हेंकें । जंबूद्वीप मध्य छित छवेंकें ॥

भरत छेत्र छित पर जत्र आयो । ब्राह्मनकुंड ग्रामतव पायो ॥
 ऋषभदत्त द्विज वर सुभ घरनी । देवा नंदा सुवरन वरनी ॥
 ताहि स्वापनी निद्रा देके । पुदगल अशुभ सबैहरिलेके ॥

अथ गर्भाकर्षण ॥

सुभ पुदगल तहं दये मिलाई । गर्भ उदर तें लियो कड़ाई ॥
 छत्रिय कुंड तुरत लेगयो । त्रिसिलाकूख माहिं धरदयो ॥
 द्वार कृष्ण तेरस ससि बासर । उत्तर फागुनिनखत सुखदवर ॥
 निसि निसीथ वीतै तिहिवारा । कल्यानक यह गर्भ पहारा ॥
 देवानंदा उदर सहायक । रहेवयासी निसिजिननायक ॥
 तिहीं राति तिहि देवानन्दा । फेर सुपन देखे अति मन्दा ॥
 चौदह सुपन प्रथम जे पाये । ते त्रिसला मनुलये छिनाये ॥
 ऐसो सुपन देखिके जागी । अतिसाचिन्ता मनसोचनलागी ॥
 तिही राति त्रिसला रानी ने । सिद्धारथ राजा मानी ने ॥
 सोवत तेई चौदह सुपने । लखे समात वदन में अपने ॥
 सुखद चित्रसाला जहं रानी । सरस सेज में रैन विहानी ॥
 ताको वरनन कछुक बखानों । जहां सोय सुख सुपनो जानों ॥

कवित्त ॥

नदल धवल धाम ललित ललाम जिन कीनी छाम छवि
 छपाकर को जो छाई है । रचित विचित्र चित्र खचित जरय
 जाकी जगर मगर होत जोत चहुं घाई है ॥ छौनी पै विछौना
 छवि छये से विछाये स्वच्छ छात चांदनी की चांदनी सी
 छटकाई है । कोमल कमल दल रचितवि चित्र सेज कमला सी
 तारे मोई त्रिमला सुहाई है ॥ १ ॥ जागत कछुक पल लागत
 अदक नींद प्रागतमे हग सृगछौना से छिपाये हैं । उदितउदार
 अद्वैत मन नार परे मंचळिक सोभा सार सुखद सुहाये हैं ॥
 चौदहों भुवन ताकी रिधि जो सन्धि सिद्धि साधन विनाही

पाई मोद मन छाये हैं । चोंदहों सुपन एक एक तें निपुन ऐसे
अनुभव अपने श्री त्रिसला ने पाये हैं ॥ २ ॥

अथ चोंदह सुपन—प्रथम गज वरनन ॥

देखि दिग दुग्द विगत मद होत जातें चारि रदवारौ ऐसौ
मन मदवारौ है । मंदर सो उच्च सुखकंदर सो जामे सुठसुन्दर
अमंद मंद गति अति भारौ है ॥ अमल कमलदल विमल वरन
स्वच्छ मानौ जिन जस पुञ्जनंजुञ्जिआरौ है । ऐसौ गजराजन
कोराजसिरताज आज पहिलें सुपनरानी त्रिसलानिहारयो है ॥ ३ ॥

द्वितीय वृषवर्नन ॥

उन्नत विपान छविखान कौ बवानिसके दंघबंधु विंधि कौ
प्रवल बलवारौ है । कोमल विमल रोम सोमके वरन तमतोम
कौ हरन हार रूप निरधार्यो है ॥ रुट तन पुष्ट जामे एकौ
गुन दुष्ट नाहि दुष्टता मिलत लखि ललित सुधारयो है । ऐसौ
वृषराजन कौ राज सिरताज आज दूसरे सुपन रानी त्रिसला
निहारयो है ॥ ४ ॥

तृतीय सिंह वर्नन ॥

केसर सिरीख के सरीखेकेसकेसरके कोमलविमलवरवरन
पियारौ है । तीछन तिरीछे नख ताल तल जोभ लाल दीपसे
दिपत दग दीह देहवारौ है ॥ दंतुरित दंतनि कीं पंति छवि
वंत स्वच्छ तुच्छ कटि तटि पुच्छ उन्नत उधार्यो है । ऐसौ मृग
राजन कौ राज सिरताज आज तीसरे सुपनरानी त्रिसला नि-
हारयो है ॥ ५ ॥

चतुर्थ लक्ष्मी वर्नन ॥

हिमगिर मांसिसरसर में सरोज वन वनमेंजलज एक परन
सुहायो है । वारिज में दिव्य गेह गेहमें कनक बेल बेलमेंकमक
एक एक तें सुहायो है ॥ सोइनै बदन नैन मोहनै चरनकरनाभि
उर उरज कमल व्यूह छायो है । कोमल कमल सुखी कमला

त्रिमल देवी ऐसो चौथो सुपनो श्री त्रिसला ने पायो है ॥ ६ ॥

पञ्चम फूलमाला वर्नन ॥

चंपक चमेली बेल मालती सुमिल मेलि परि मलञ्जेल गुन
गंधी मन भाई है । सेवती गुलाब कुंद केतकी मदनवान जुही
सोनजुही पुहीसोहोसुखदाईहै ॥ मधु मकरन्दककै तुन्दिलमलिनद
वृन्द गुंजिगुंजि रंजमन मंजु मुद छाईहै । फूली फूलमालसोभा
सौरभकी जाल बाल त्रिसला कौ पांचवें सुपन दरसाई है ॥ ७ ॥

षष्ठम चन्द्र वर्नन ॥

राकापति रैनपति रतिपतिअति मित्र उडपति ओपधी को
पति मन भायोहै । रोहिणीरमनराट रूपकों सुमन तीनों ताप
को समन सुमनन करि ध्यायो है ॥ द्विजराजजाकों पद को-
विद कला कौ भलो भाईहै रमाको मुद कुमुदन छायोहै । पूरन
अमंद चन्द आनद को कंद ऐसो छठवां सुपन रानी त्रिसला
ने पायो है ॥ ८ ॥

सप्तम रवि वर्नन ॥

तेज पुंजरासी सुप्रकामी तमनासी देव वरस छमासी दिन
छिन प्रगटायो है । कामल कमल कलकुल मोदकारी भारी
कोक सोकहारी लोक लोचन मुहायो है ॥ प्रबल प्रताप पैहरत
तीनों ताप तातें तीन कालताकों तीन रूप करि ध्यायो है ।
मारतंड मंडल अर्वाडिन प्रचड ऐसोसांतवां सुपन रानी त्रिसला
ने पायो है ॥ ९ ॥

अष्टम ध्वज वर्नन ॥

उन्नत अकान लों प्रकाम दम दिस मांह छांह जाकी जौंह
जैमी फेदी छिन छोर ने । लहरत पौन फहरात फरहर जामें
चित्रित विचित्र सिंहाचित्र बीच ठौरमें ॥ कंचन रचित दंडखचित
अनेक नग जग मग होत जग मांहि जाति जोर में । दिव्यतेज

मई ऐसो ध्वज रानी त्रिसला ने आठवें सुपन देखि लीनों दृग
दोर में ॥ १० ॥

नवम कलस वर्नन ॥

कंचन रचित मनिमानिक खचित सरकत पुपराग हीरायोती
जड़ि धारो है । फूलन की मालरें विसालरें लपेटिं गरें भौर
पुंज गुंजन तें लागे अति प्यार्यो है ॥ मंगलीक द्रव्यजग जेते
तेते तामें सब सुखद सुभग मोद भाजन सुढार्यो है । ससर
सरस परिपूरन कलस ऐसो नवम सुपन रानी त्रिसला निहा-
र्यो है ॥ ११ ॥

दसम सरोवर वर्नन ॥

पूरन सलिल स्वच्छ अच्छपरतच्छ तामें लच्छ मच्छकच्छन
कौ कै लियल प्यारो है । कंजरुक मोदवन घन जामें फूलि रहे
बूलि रहेभौर झोर सोभाभरि ढार्यो है ॥ हंसराज हंसकुंज
सारस दलाक कोक सोक तजि रमत चहुंघां सुक सार्यो है ।
ऐसो सरवर दर सर मानसर नाहिं दसवां सुपन रानी त्रिसला
निहार्यो है ॥ १२ ॥

ग्यारवां छीरसागर वर्नन ॥

पूरन अपार पारावार जे उदार सिंधु तुच्छ से लगत ऐसो
स्वच्छ सोभा भार्यो है । तरल तरंग अति तुंग के अभंग भंग
भौरन की भीर तें गंभीर नीर वारो है ॥ तिमि से तिमिंगल से
नक्रवक्रदन्त जामें दीसत दिगंत लौं न अंत पारं पार्यो है ।
ऐसो छीरसागर उजागर अनन्त वन्त ग्यारवें सुपन रानी
त्रिसला निहार्यो है ॥ १३ ॥

वारवां विमान वर्नन ॥

मध्य दिन दिनमनि गन कौ सो तेज तेज मनि गन चित्र तें
विचित्र चित्र कार्यो है । झझरी झरोखा गोख मोखा अगनित
जामें दीपमान दीपमान हूंतें विस्तार्यो है ॥ विविधि विबुध बधू

नाटक निपुन गन गंध्रपन गान तान मन मोद भार्योहै । ऐसो
सो विमान कविमान कवजानि सकै वारवें सुपन रानीत्रिसला
निहार्यो है ॥ १४ ॥

तेरवैं रत्न रास वर्नन ॥

हीरन को हीर मानौ मानिक कौ मन पुपराग कै पराग
पानी पन्ननकौ गार्यो है । लील की लुनाई लालड़ी की ललि-
ताई चन्द्रकान्ति की चमक लैकैं अतर निकार्यो है ॥ ताही
को बनाय ढेर कंचन सुमेर को सो दृगन खुलत तीखे तेज को
पसार्योहै । ऐसो रत्नरास के उजास कौ प्रकास आज तेरवैं
सुपन रानी त्रिसला निहर्यो है ॥ १५ ॥

चौदवैं निर्धूम अग्नि वर्नन ॥

जोत की घटासी तेज पंज को छटासी सीम लटा की जटा
सो जाकी दीपति उज्यारी है । वनमें दवासी नीर निधिवाड़
वासी सुद्ध दाहक हवासी घां अरूप रूपवारीहै । हवि बीज
भूमि निकलडूक निरधूम जाकी तिहूं लोक धूम झुपि रही दुति
कारी हैं । उन्नत उदीत ऐसी अमल अग्नि जोति चौदहैं
सुपन रानी त्रिसला निहागी है ॥ १६ ॥

चौपाई ॥

ऐसैं गज नृप मिथरु रमा । फूलमाल उड़पति अर्नुमा ॥
ध्वज घट सग्वर छोरनिधाना । वर विमानमनिचयदुतिवाना ॥
निर्धूमानल चौदह मुपने । लपे जवै त्रिमला दृग अपने ॥
ते मव मुख में आइ मनाने । ऐसे जव त्रिसला ने जाने ॥
जगे भाग सोवन तें जागी । अति आनन्द हरप रस पागी ॥
अति उत्साह मोदमय भई । अपने भानि की वलि गई ॥
उतर सेजतें आनंद भारी । गज गतिहै पतिपास सिधारी ॥
देखि दरस अतिमरस ललामा । जोरिदुहूं करकियो प्रनामा ॥
पियप्रति अधर सुधारस खोले । मधुर वचन अमृत से बोले ॥

पहिले सुपन व्यक्तता बही । किन्तु पछी पनि भयो सही ॥
 इन सुपनको जाल है केनो । हाय लाम इनतें पनि जैसो ॥
 सो प्रभु सोचै देग बखानो । नति उत्तरिलतनोको जानो ॥
 सुनिपियनियसुखको प्रियवानो । डै मुद्रनप्रचितन करि जानो ॥
 हरखित हौं तियसो तव कह्यो । यह अति आनंदजातनसह्यो ॥
 अलम लाम तुमको बहु हबै है । तिन लोकनहिं सुजसतनै है ॥
 धर्मध्यानधन तन मनजननुब । नवनिलिहै निटिहै सिंगरौं सुख ॥
 अति उत्तम गुन निधि सुनपहो । जनिं अति आनंद सुख लहो ॥
 कुलदीपककुलज्यो लनुकुटमनाकुलध्वजरविकुलकनलविमलवन ॥
 अति सुकुमार उदार छारु तन । नपसील गुनवान विनलनन ॥
 सुन्दर सुघर सुहृद सुखसागर । धन धैर्य नो जन्वउजागर ॥
 तूर वीर नर वीर धीर गति । दान वीर पर पीर हरनमति ॥
 जो तुम्हारायो अरुनो तयनो । ताको कल ऐसो सुत निपुनो ॥
 गज सो धीर बली रूप जैसो । सिंह प्रताप धनो श्री कैसो ॥
 फूलमाल सो सौरभ साली । ससिसननन सुभसुजसदिसाली ॥
 रवि प्रताप परसिद्ध ध्वजासो । जंगल रंगल कमल प्रभासो ॥
 सुन्दर विमलकनलसर वरसो । अति गंभीर छैर सागरसो ॥
 रत्न रासि समगुनगनसाली । असलअगिननमतेज विनाली ॥
 यह संछेय सुमन गुन जानो । यातें सहस्र सहस्रगुन मानो ॥
 यो पिय पै तियजव सुनि पायो । रोमरोम प्रति आनंद छायो ॥
 अम्ब कदम्ब फूल जिमि फूले । पुलकि रोमतन बुद अनुकूले ॥
 प्रनयविन्दयकरिपियहिनिहोर्यो । प्रकयकरनको करतिरजार्यो ॥
 विदाहोय रंग महल पधारी । गजगातिनिभामिनिपियप्यारी ॥
 केठ कुटुम सुख सेजपियारी । अपहे मन तव यहै विचारी ॥
 मति फिर आवै नींद टनन नै । नति मनलाने अतुनसुपननै ॥
 यातें अब जागतही रहिये । गुरु पद देव ध्यानसुख ठहिये ॥
 ह्यां रानो यो रैन दिताई । झां नृप अपने मन यो ठाई ॥

अधिकारी सब विधि के बोले । तिनसों मधुरवदन नृपखोले ॥
अथ सभा वर्नन ॥

सभा सदन सद सजकरलीजे । सभासदन कों सजन कहीजे ॥
प्रथम पृहुमि सब जारिवुहारों । छौनि विछौन विछायतंवारी ॥
जे अतिमृदुल मनोज्ञननोहर । मोलसमोल विचित्रविविधवर ॥
दर दर पर दर परदा वांधों । दिव्यकनकगुनगुनितसुनाधों ॥
कनक सलाका नीना कारी । प्रतिपरदा चिक लेहु संवारी ॥
छिततें छात छाद्य पट रुरौ । मोलन महंगो मालन परौ ॥
जाके चहूं किनार किनारी । जपला ज्यों अमकै जरतारी ॥
ताके चहूं कोर दुति दमकै । गीनी जुनड़ी गालर अमकै ॥
मनिमय दिव्य सिंहासनलावों । सभा सदन के मध्य विछावों ॥
औरौ आठ स्वच्छ भद्रासन । दिस ईसान धरौ ममसासन ॥
जीने चित्र ओट पट मारीं । एक सिंहासन धरौ तहांहीं ॥
चन्दन अगर मलाजिर गागें । छिरकछोनि शौरभविस्तारौ ॥
टप टान भरि मुभगसुश्रयो । विविध सुगंधितधूप नधुपौ ॥
सुगभिसुमन दम्दिमनि विपेरौ । अलिग्रयलो जहंलहि बसैरौ ॥
ऐसैं जव राजा कुरमायो । अधिकारिनकैमन सुदछायो ॥
अज्ञा मिरधरि तुरत मिधारे । अथ अपने अधिकार सुधारे ॥
नृपजु कहींनो मरियधिकीनो । विविधविचित्रसरसरस भोनी ॥
ऐसें सै निमि निपटी मारी । प्रात पूर्य पहंपारी पारी ॥

अथ सभात वर्नन ॥

पुनि सभात कों मतिउन्वारी । कलिपरी दनदिसु हुतिवारी ॥
किरि अमनोदिस मनन सदायो । भयोद्विजनदिलिसारमवाये ॥
कनकमुकेकुमुजनि कुंअज्ञाने । सुगभि समर मन्दसियरानी ॥
वन्दनन वन्दनन लाने । नुन सख्या तें नृपवर जागे ॥
प्रथम नरग के नवन सिधारे । अनित होय फिर अमनिरवारे ॥
कमल अनल कनक करवारन । अंग अंग करे सुकुमारन ॥

पुनि उष्णोदक मञ्जन कीनी । मञ्जनकरितन सञ्जनकीनी ॥
 कटितट अरुन वरनपट धारयो । उनर पट दुड कंवन डारयो ॥
 चरन कटक कर चरा हुरे । रहे रतन मय फवि छवि परे ॥
 हार हमेल कण्ठ कण्ठी छवि । वाजुवन्द रहे वाजु फवि ॥
 माथें कुकुट जड़ित मनि नजे । कानन कुण्डलअतिछविछाजे ॥
 सुन्दर मुंदरी अंतुरिन सोहै । पहुंचन पहुंची अति मनमोहै ॥
 वसना भरन दिव्यसुर लायक । तेसव्र पहर फवे नर नायक ॥
 जवे सबै सज नजिन नर नाहर । रंगमहलतें निकसे बाहर ॥
 छत्र चमर गहि लये खवासन । बैठे आय जटित सिंघासन ॥
 मंत्री सेनाधिप गन नायक । हृन मंडारी सब पुन लायक ॥
 गनक चिकित्सक कविजनरुरे । एकएक तें सब गुन पूरे ॥
 सब कर जारैं सन्मुख ठाढ़े । सबअति श्रुतिभीत भय गाढ़े ॥
 तहं नृप सुर्यन अज्ञा दीनी । जेसुपनय्य प्रग्य अति ज्ञानी ॥
 लावौ बेगि सुर्य सुनि धाये । आठ चतुर पाये ते लाये ॥
 श्रीफल करलै नृपसों धेटे । नृप दरसनतें सब दुख मेटे ॥
 नृपहूं कौंते अति मन माने । सब सश्रुति सादर सनमाने ॥
 प्रथम सजे वसुभद्रासन ते । आठों बैठे नृप सासन ते ॥
 त्रिसला दिव्य आठ पद माहीं । बैठि वरासनज्यों छवि छाहीं ॥
 दोऊ कर फल फूलन धारिकै । द्विज सुर्यन कैं आगे धरिकै ॥
 विनयप्रनयअतिसयदित्यार्यो । हिर सिंघासन अंगीकार्यो ॥
 तब नृप सुपन विवस्था कहौ । हिर ताकोफल पूछ्यो तहौ ॥
 चिंतन करितिनसवन परस्पर । यथा शाल्मलीले सब द्विजवर ॥
 सुपनागम द्वासप्तति सुपने । तिनमें तीस कहेअति निपुने ॥
 ताहू मैं चौदह जे कहे । जिन नाता विन और न लहे ॥
 चक्रवर्त माता हूं पेपे । पै अति मन्द वरन सो देपे ॥
 वासुदेव जो गर्भ आवै । सात सुपन तिहिजननी पावै ॥
 अरु बलदेव मंडलिक नाता । चार एक देखै सुख दाता ॥

काने यह निहचै हम जाने । जिन वर त्रिसला गर्भ प्रमाने ॥
 तसो सुत नहिं भयो न होई । दर्ई देहगो तुम को सोई ॥
 गर्भ मास नव पास व्यतीते । साढ़े सात दिवस पुनि वीते ॥
 अंग उपंग संग गुन पूरो । मान प्रमान सुभग अंग रूरो ॥
 मन रञ्जन व्यञ्जन लच्छन युत । तुमलहिहौ ऐसो अद्भुत सुत ॥
 चक्रवर्त दस दिस में कै है । अन धन जन अबनीन सम है ॥
 नुनि राजा रानी अति हर्षे । धन मन गन सुग्यन पर धर्षे ॥
 बहु वसु वास रासि तिहि दीने । आस पुराय विदा ते कोने ॥
 त्रिसलाहूं पति आयसु पाई । सुदमय अपने सदन सिधाई ॥
 जिन अवतार जानि सुरराई । धन अधिकारी लये बुलाई ॥
 तिर्यक जूम्भक देव सुनाया । तिनसैं कह्योइ न्द्र मुखधामा ॥
 जहं जहं भूमै है धन भारो । स्वापी सता रहित उज्यारो ॥
 जो सब महा निधान लियावौ । सिद्धार्थ नृप घर पहुंचावौ ॥
 जो राजा सुरपति ने दीनी । उनभिरवार यथाविधि कीनी ॥
 अनधन जन अननादिमर्षाधि । विविधिभांतिकीरिद्विनवौनिधि ॥
 राज हय रथ भय मेना भारी । जेनाधिपअगिनित अधिकारी ॥
 पत्नी पुत्र मम्पति अधिकारै । दम्पति नृप नृपतिय घरछारै ॥
 तज तिय तिय पत्नी तिय धारै । जो अक्के सुत होय हमारै ॥
 तजपन धरि नाथ बुन्यावै । लखि अतिमङ्गलआनंद पावै ॥
 तज निवस्यधि उदर विचारी । पति दुख पावै भात हमारी ॥
 तज तज अरु क्लिष्टतदुखमातहि । युहि विशेषचहियतयहिभांतहि ॥
 जो तित चिंत अचरु हवै रहे । सो लहि मातअपितदुखसहे ॥
 तज तज नद मातन लह्यो । रोय तवै यों अलितां कह्यो ॥
 दर्ई दर्ई निधि नों दित गई । कहा करों अब कैसी भई ॥
 कित रूग्नीनों गर्भ हमारो । जीव प्राणकै जीवन प्यारो ॥
 कौन किया यह आड़ी भई । गर्भ चेतना जिन हरिलई ॥
 धीर कठोर विषय रस पागे । कर्म पाछले भवके जागे ॥

ऐसें विरूपति तलकृति गनी । छिनछिनकलपसमानवितानी ॥
 अर्धध्यानकरि श्री जिनजाना । जननी जनननरनसन माना ॥
 तत्र भगवान् अचलव्रत तजिके । फरकनलगे मातहित भजिके ॥
 जब छह मास गर्भ के भये । पंद्रह दिन ता ऊपर गये ॥
 जिन मन में तत्र निहचे कौनों । मात पिता हितदृढ़व्रतलीनों ॥
 गहं नाहिं गुरु दिच्छा तौलों । मात पिता जगजीवें जौलों ॥
 गर्भ चेत जब जननी जाच्यो । भयो मोद मंगल मनमान्यो ॥
 सुख सोवत जागत हित पागी । रक्षा करन गर्भ को लाग ॥
 दिपन अहार विहार जिनेका । सब तजि दने एकतें एका ॥
 जिन जिनवरुतनसन अभिलापे । ते सब परिपरन करि रापे ॥
 इक दिन मनसा उपजी ऐसें । इन्द्रानी थ्र ति कुण्डल जैसें ॥
 दिव्य अलौकिकसुरमन गनमें । जो पाऊं तो करों करन में ॥
 सुरपति अर्धध्यान करिजानी । जिनजननीहित यहमनठानी ॥
 खत्रियकुराड पास सुखदाई । इन्द्रपुरी इक इन्द्र वसाई ॥
 तहां वसे सुरपति सम्पति लै । सुरतरु गोमनि परिपूरन के ॥
 नृप सिद्धारथ जब यह जाच्यो । सेन साजि चडिसंगर ठाच्यो ॥
 सुरपति नरपति सौं भयनाना । दुसह युद्धलहि प्रथमपराना ॥
 सब वैभव सेना भट लूटा । सुरपतितिय श्रुतिभूपनछूटा ॥
 सो त्रिसलाढिग भट लै आये । ताहि पहिरि मनमोद बढ़ाये ॥

अथ महावीर जन्म कल्याणक ॥

गर्भ दास वासर जब बीते । सुभ नव मास आय परतीते ॥
 लाडेसात अधिक दिन तापे । चैत सुदी तेरस तिथि आपे ॥
 नखत उत्तरा सुभ फागुनी । मुद मंगल में सुरनर मुनी ॥
 सातों ग्रह निज उच्चस्थाना । जनमसमयजिहिसुभफलनाना ॥
 दोष रहित सुभ समयसुहायो । जो जिनजन्म जोगजगजायो ॥
 जिन श्रीमहावीर भगवाना । जनमलियोगुनरूप निधाना ॥
 जिहिनिसिमहावीर जिनजनमे । देवी देव मुदित कैं मनमे ॥

देव लोक तें भू पर आये । सब देवन के भये वधाये ॥
 दसदितविमलप्रकासप्रकाश्यो । वधोमविमाननतं तम नास्यो ॥
 आनंद मगन सकल सुरवृन्दा । व्यापककहकहसवदअमन्दा ॥
 धनद निदोसित अनुचर धाये । कनक रजित की रासें लाये ॥
 वसन आभरन रतन अनोले । सुरभिलफलफल अमलअतोले ॥
 चन्दन चूर कपूर धूर ले । परिपूर्यो नृपनगर वृष्टि कै ॥
 सुरभिसुसीतल सुगति बयारी । रास परस इन्द्रियसुखकारी ॥
 थल जलरुह वनउपवन फूले । अलिकुलकलनवरवग्रनुकूले ॥
 कोकिल केकी कूकन लागे । तरुकरभर धर झूकन लागे ॥
 चेत अचेतन तन सुद छायो । छिनक नारकिनहू सुखपायो ॥
 भूम्यो भई भार भय हीनी । वसु वसुमती प्रकटकरिदीनी ॥
 अध ऊरध दिस विदिसन वारी । आठ आठ प्रति दिसाकुमारी ॥
 अध ऊरधअरुविदिसाकी सब । चारि चारिसत्रमिलिछप्पनतव ॥
 दसां दिसा तें सुद मय धाई । मिदास्थ नृप आले आई ॥
 प्रथम प्रनत जिनवरके पार्गी । अथ अपने पुनि कारजलार्गी ॥

अथ छप्पन दिग देवीकृत उत्सव ॥

एकन करिदृग पलक बुहागी । पहुदिस पहुमी शारि बुहारी ॥
 अदर अगनजा जल भग धारी । एकन र्माधी पुहुमी सारी ॥
 एक ग्वच्छ कर दग्पन लीने । एक वीजन करमें कर दीने ॥
 एक छत्र चामर कर धारी । एक स्नान नीर अधिकारी ॥
 एकन चक्र दीप कर लीनों । एकन नाल वधारन कीनी ॥
 नाल वधारि धारि भुय भीतर । रत्न रासि राखी ता ऊपर ॥
 सोद मान करि गान परम्पर । गई असीसत अथ अपने घर ॥
 ऐसो उन्नव सुइ गङ्गुळ मय । छप्पन दिगदेविन कीनौजय ॥

अथ चौंसठ इन्द्र उत्सव ॥

अथ चौंसठ इन्द्रन मिलि जैसो । कियो महोच्छो वरनौ तैसो ॥
 जिहिछिनजनमेंजिनवर स्वामी । जिन जन गनके पूरन कामी ॥

मुर इन्द्रनके आनन डोले । हरिन गनेसी तुरतें बोले ॥
 घोष सुघोष घण्ट को कोनों । वर्गव्रमान यजिसाजनवीनों ॥
 जोजन लाप जासु विस्तान । ताप नुरपति होय सवारा ॥
 पटरानी सन्मुख तिअ आठा । दिव्याभरण वसनठठि ठाठा ॥
 बांये सामानिक मुर नायक । देवी देव दाहिने लायक ॥
 पाछे सात सेनपाति सोहें । मुर समूह बुद्धमय नन मोहें ॥
 अप्सर गंधप किन्नर के गन । नृत्य गानगुन ज्ञान जानजन ॥
 सिंगरे सुर समूह संग मुरपत । खत्रिय कुण्ड नगर पहुंचेतत ॥
 प्रथम प्रनाम नानि सिङ्कीना । सदन खाड जिनवरकरलीना ॥
 ले सुमेर को द्विशो पयानो । ततछिन तिहिंथलपहुंचेमानो ॥
 देवलोक गृहपति व्यन्तर के । चौंसठ इन्द्र मिले सुरवर के ॥
 मिलि रचना कलसनकोकीनी । कनक रजित मनिमैरसपीनी ॥
 एक कोट इक लाख सवाई । तिनको संख्या तहां बताई ॥
 तेसव नीर छीर निधि भरिबर । चौंसठ इन्द्र लिये अपनकर ॥
 उद्यत भये स्नान हित सिंगरे । हाथतलिये जड़ित मनिगगरे ॥
 पंचम आरा आगम के गुन । संसय सरज्यो सुरपति केमन ॥
 तिसुतन अतिसुकुमार सुभावन । क्योंसहिहै यहभार अभितवन ॥
 सो सब मनकी जिनवर जानी । श्रु तिपतिअवधिज्ञानकेजानी ॥
 चरन अंगूठा धरनी चंप्यो । नेरु धेर सह पुहसी कांप्यो ॥
 जलथलअनलअनिलनभसारी । हलचलखरभ ठमच्योपतारो ॥
 देवि देव अहिगन गंधर्वा । भये सबै विसनय मय सर्वा ॥
 अवधि ज्ञान तत्र सुरपतिदेखा । जिन प्रताप अपने मन लेखा ॥
 निज अग्र्यान जानि सुरनायक । जिनवर चरनगहे सुखदायक ॥
 अहो नाथ अपराध छनीज । सो निछानहुझुं लीजे ॥
 वार वार विनये जिन स्वानी । छमाकरी जिन पूरनकानी ॥
 लियो उठय अंगूठ अवनितें । सिव्योछुव्योसब कल्पधरनितें ॥
 पुनि प्रनाम सुरपति तहंकीना । स्नानक्रिया मैफिर चितदीना ॥

अच्युतेंद्र पहिले जल ढारें । आन इन्द्र सुर पुनि पयपारें ॥
 पुनि ईसान इन्द्र निज कोरें । जिनवर को बैठाय निहोरें ॥
 चारि वृषभ तनधरि देविन्दा । आठ शृङ्गकरिसुभग तुरिन्दा ॥
 निरमल जल जिन वरपर ढारें । करि अभिपेक भरें सुखभारें ॥
 पुनि निरमल कोमल पटप्यारें । जिनतनपौंछि अंगोछिसुवारें ॥
 पुनि कपूर कस्तूरी केसर । चन्दनले जिन तन लेपन कर ॥
 नव अंगनि की पूजा साजें । चरन जानु कर कुहनी राजें ॥
 कन्ध सीस भालरु हिय कूपें । येई जिनवर अंग अदूरे ॥
 तिनमें तिलक देइनव वारी । कुसुमांजलिप्रतितिलक सवारी ॥
 पुनिवर सुरतरु कुसुम समूहन । पूजेअतिहितकरिजिनवरतन ॥
 अमलकमल कोमलकलदलसे । पट पहराये निरमल जलसे ॥
 पुनि कल कनकरचितचितवहने । रतन खचित पहराये गहने ॥
 पुल माल तापर पहिराई । सुरभि धूप धूपें सुखदाई ॥
 पुनि नैवेद निवेदन कीनी । घण्ट मङ्गु करि नाद नवीनी ॥
 अष्ट मङ्गलिक सन्मुख अग्रचे । स्वस्तिक घट भद्राजनचरचे ॥
 श्री वस्त्रोक्त नन्द आनती । संपुट मन्म युग्म सुख कर्ती ॥
 और आठवां दग्धन जाने । अष्टमंगलिक ये परमाने ॥
 दग्ध मनि मानिक हीग मोती । जिनकी जगमें जगमग जोती ॥
 नवद्विधगनजनन करितिनके । रवे मंगलिकसन्मुख जिनके ॥
 श्रीकल पूग आदि फल नीके । सन्मुख धरि श्री जिनवरजीके ॥
 नृत्य नाट्य गन गान तरंगा । चंग मृदंग उपंग अभंगा ॥
 पुनि आर्त्ता उतारें वारें । तापर राई लोन उतारें ॥
 नवल दीप वारि पुनि जिनकी । मत्रह भेदी पूजा तिनकी ॥
 जिनवर मञ्जन सञ्जन करिके । लायेजहं त्रिसलासुखभरिके ॥
 प्रथम स्वापनी निद्रा हरिके । पुनिप्रनाम जिनजननिहिकरिके ॥
 कोरिन कंचन वरपा भरिके । कोरिअसीस जोरि करकरिके ॥
 मुग्धपति सब मदन सिधारे । मंगल मोदें भरेमन भारे ॥

अथ नृप मिद्वार्य कृतोत्सव ॥

भोग भये ज्योंहीं नृप जागे । पत्र जनम आनंद रस पागे ॥
 अधिकारी सब लये बुलाई । तिनसों नृपति कहे समुझाई ॥
 वंदीघान वंद सब छोरो । मंगन मनुतें मुख मति मोरो ॥
 जेतो जो मांगे तिहि तेतो । बिन पृछे दीजो धन वेतो ॥
 खारी पाली गज अरु बटखर । तोल प्रमान सबे बढ़ती कर ॥
 बीधी बगर झगर नगरी के । चौपथ चार चौक सिंगरीके ॥
 चंदन अंगर अरगजा घोरो । सींचि सींचि सब सांधे बोरो ॥
 धुजा पताका घर घर बांधो । दर दर मंगल तोरन साधो ॥
 चन्दन चरचित कलस धरावो । कदली खंभन ते छवि छावो ॥
 कुसुम समूह माल फूलन की । मत्त मधुप मन अनुकूलनकी ॥
 ठोर ठोर सत कोरि बखेरो । धूप द्रव्य धूपो सत बेरो ॥
 नस्तकनट भट भाड़भगतिया । गनिकादिक जेहें सुभगतिया ॥
 अद अपने गुन गन विस्तारें । जिहि लखिके रीझैरिझवारें ॥
 तंत्र वितंत्र सुपिरघन आवज । वीन वेनु कठताल पखावज ॥
 तालतान गुन गान मान सुन । होहिं मोदमयसवजनपदजन ॥
 अज्ञा लहि अधिकारी धाये । सजि सब साँज खबर लैआये ॥
 नृप सुनि जगेभाग लैं अपने । सकल भये रानी के सपने ॥
 सैन ऐन तजि सरौंसदन में । श्रमकरिहरिअति आनंदमनमें ॥
 उवाट अरगजा वासित तेलन । करि अभ्यंग अंगसुख ज्जेलन ॥
 न्हायअंगोछिपोछि तनकोमल । अमलअमोलवसन पहिरेकल ॥
 पहिने गहने चहने जियके । मुकता हार चार छवि हियके ॥
 मुकटकटककुण्डलकटि मेखल । कण्ठी कण्ठलसत मुकताहल ॥
 पहुंची मुंदरी छला विराजे । अंग अंग अतिफविछवि छाजे ॥
 मंत्रि मुसाहिव सैनप साथी । सभा सदन आये नर नाथा ॥
 बार भंडारन के सब खोले । दान जाचकन दये अतोले ॥
 जाते प्रथम खबर सुनि पाई । सवालाख तिहिं दई बथाई ॥

मूढ मनल भे कुल व्यवहारा । जाति कर्म आदिक छविभारा ॥
 कर्मे छजे छैठ दिन कोनी । अति आनंद रंग रसभीनी ॥
 एत भये सुतक दिन बीती । न्योते न्यात लोग करि प्रीति ॥
 नीट नचिनजी सजन जिवनारा । जेवन लगे नगर जन सारा ॥
 मधु नैया पकवान पिठाई । जो जाके मन भाई पाई ॥
 देवर वावर खुरपा खाजा । कहें परस्परतचि सों खाजा ॥
 लुप चुप रूखा सेव झपरती । मधुर जलेवी अमरित झरती ॥
 पूरन पोछि कचौरी सूरि । रूपन रूरी स्वादन पूरी ॥
 जो अति अति अनेकरकारा । कवि जन वरनि न पावें पारा ॥
 विविधि भांति के वदजन लीके । पटरस मिले भावते जीके ॥
 कचरी कैर करैद वखाना । अरख नीनु विविधि सयाना ॥
 दूध दहीकी कही न जाई । सुदु माखन अरु मधुग गलाई ॥
 और कहां लें अधिउ कहीजे । पटरस प्येजलि पत्र पसीजे ॥
 तिन लव जिवनार जिगई । वर दीग पुनि दये खवाई ॥
 जाके लवज सुदारी श्या । केसर धर कपूर सुमेला ॥
 निरने मन सुजात के जानी । नभागत तर करि सामानी ॥
 पुनि नचिनबो न चि नचौ । अवन नजन सुखसन सवन जो ॥
 सोनि सुजात नि नचनानी । कोनी जो जाके मनमानी ॥
 पारन नचन नचि नचिनारी । तें सब तिथि सों लागी कहने ॥
 जयें जयस्यं सुजात हारी । अनधनजनदिनदिनअधिकारे ॥
 एत सुख सुत नचन विपारी । वर्दजान हम अवतें धारो ॥
 जयें नचन नचन नचौ । किम दिन वदन लगेदिनजैसो ॥
 शान मानवो सुखदुखो जद । लालन पालन तें निकसे तव ॥
 मननन करि नचनोठ वगसो । भये नये गुन दरम परसके ॥
 एत सुख नचन पचिछला वारन । सिनुवपु धरि अये अनुहारन ॥
 रोखन लखो सुखजन गहरी । जिन संजनिनवररमतसदाही ॥
 सुजात नचि अहि ननु धरिदो । लिपटजैइ ग्लो तरुसों अरिको ॥

निनु तव भय नय भये प्राने, यहि यहि कैंक्यो वीर महाने ॥
 तार तन सुहृदय तन वरिन्दे नौतिय पर जित आसोहन कोनो ॥
 अद्विष्टगुल बल करि सोवाज्यो, यहि तन यो जिन वर बल वाच्यो ॥
 तन परी प्रद अयसाय छनायो । देवलोक को तुरत सिवायो ॥
 तवे वरस्य चंटेमाल विठये । जयद विद्या निधि जिन गये ॥
 भूतन कल अलोल पिन्हाये । उवाध्याय के पाउ लगाये ॥
 औत्तमः तार निधि प्रथमहीं । नुब्यंजन वा वरन मरुहीं ॥
 ताल नान विद्या जगज्जती । स्वदं बुद्धि जिन जानें दितो ॥
 चाये सुप्रति धरि द्विज देहा । पंचन लोयो कठिन संदेहा ॥
 तन भिन जिन ऐसो कीन्हो । उवाध्याय हूं नक्यो न चीन्हो ॥
 तन नुरप्रति सुख जिन वरसहिना । मुनि जान्यो नहि गिसे नहिना ॥
 जयस उवाध्याय गुरु रात । बाल गिप्यके पकरे पाई ॥
 दात पिता नुनि नुतके उच्छर । अति आनंद नय भये विचच्छर ॥
 जीवन वय जय भये जिनैसा । वयाहे राज कुमारि नुदेसा ॥
 जसुदानाम बाल सुकुमारी । तासों विषय भोग सुख सायो ॥
 वर्द्धमान जिहि भारण्यामाता । महावीर जगसदन विख्याता ॥
 सिद्धारथ राजा पितु जाको । त्रिसलानाम जामु माताको ॥
 भाई बड़ो नंद वर्द्धन कहि । सुदारद नामा चाचा लहि ॥
 जिहि सुदर्सनानाम वहिनको । शिवदरसना सुतादरसनको ॥
 अरु जिन वर पुत्रीकी पुत्री । तासु नाम उत्तवती दुहित्री ॥
 ऐसे ग्रही धर्म अनुसारके । वर संपति संतत सुवसरिके ॥
 जय अट्टाईस वरस जिनैसा । भये दातपितु सुर लोकेसा ॥
 अग्रज धाता सों तव भारख्यो । भई प्रतिज्ञा पूरन साख्यो ॥
 अद्विच्छा दिच्छा को नतैं । नुनडी परत रहत नहिं तनतैं ॥
 वेग नाथ अब अज्ञा दीजे । जातैं जनम सकल करिलीजे ॥
 तय अग्रज धाता सैं बोले । नधुर वर्द्धन अष्टतके तोले ॥
 सद्य सोगता तरु माताको । जियतैं दुःख सहनि दोनाकतो ॥

सुर कुल कुल कटुम्ब जन जेते । जिन पद वंदि विदा भयेतेते ॥
पुनि अग्रज सँ अज्ञा लेंकें । जिनवर विहरे विरहा देंकें ॥
सांझ समय इक गांडकुमारा । तहां जाय पहुँचे सुकुमारा ॥
काउसग्ग करि ठाढ़े रहे । आत्म तत्व ध्यान धुनि गहे ॥
ग्वाल एक तहं आवत भयो । बेल एक तिहिंथल धरि गयो ॥
वगरि गयोसो चरत विपिनमें । ग्वाल आय पछी वर जिनतें ॥
मौन दसा जब ज्वाव नपायो । जान्योचोग क्रोध अति छायो ॥
बहुताड़न तरजन तिन कीनों । सहनसोलजिनसबसहिलीनों ॥
मनुतनु धरि सुरपति तहंआयो । तिनग्वालहिंसनुझाइछुड़ायो ॥
सिद्धारथ नामा इक देवा । छांडि करन जिनवरको सेवा ॥
सुरपति आप सुधाम सिधाये । द्विजबहुलालय जिनवरआये ॥
पायस पारन कीनों जिहिं घर । कुसुम वृष्टि कीनों सबसुरवर ॥
ऐसैं आठ मास तप धारा । करि सुभसुच्छअहारविहारा ॥
दोयझंत नामा तापस घर । पावस आदि पधारेजिनवर ॥
सुहोमित्र नृप सिद्धारथ को । अति सनमाने जिनतीरथको ॥
भरि चौमासा रहिवे कारन । विनयोमान लियोजिन तारन ॥
तहं जिनतप करिध्यानलगायो । सुरन आय चन्दन तन लायो ॥
ताको सौरभ दस दिस छायो । अलिकुलचहुंदिसआयलुभायो ॥
पुर तरुनी सौरभ रस पागों । जिन साँ चन्दन मांगनलागों ॥
जबजिनवर कछुज्वावनदीनों । तियनसुतनजिनतनघसिलीनों ॥
तिहीं वरस वरसात नवरस्थौ । तब सब लोगतहां कोतरस्थौ ॥
कह्यो साध यह किततें आयो । जातैं भयो सकल अनभायो ॥
लोक अहिततापसहूं मनधरि । भयो विमनतापसहूंजियकरि ॥
सोजियजानिजानि जिननाथक । पांच अविग्रह लाने लायक ॥
विनाप्रीति कहूं रात न रहनौ । काउसग्गतपकरि निरबहनौ ॥
करतल भोजन मौनी रहनौ । नहीं जुहार गृही सैं कहनौ ॥
ऐसी पांच प्रतिज्ञा गहिकै । दुस्सह लोग अविज्ञा सहिकै ॥

नमो नमोहि तें थलतज्यो । विहरिअस्थि नामाथल भज्यो ॥
 मन्त्रिपानितह जअकुपतिगति । अस्थिरचितमठमांहिदुष्टगति ॥
 न्हैं तानु पूरव भव कथा । सुनौ ताहि वरनों अति यथा ॥
 धन मारथ बाहू विहवारी । ताको बैल धनयो गति हारी ॥
 तव तिन साह बैल जानो लै । आबाधिय कौ दियो सांजिके ॥
 और बहुत धन ताको दीनौ । वृपरच्छाहित सो तिन लीनौ ॥
 पै ता वृष की सार न कीनी । धन सब खाय करीमति हीनी ॥
 भूख कष्ट सहि वृष मरिगयो । सोई सुलिपानि जछ भयो ॥
 पूरव बैर तहां तिन सुधि कर । मरीकरी पसुनरकी घरघर ॥
 दुपद चारि पद अगिनित नरे । लोक उपद्रव तें सब डरे ॥
 तव इक गनकतहां चलिआयो । नगर लोग सबपूदन धायो ॥
 तव तिन एक उपाय बतायो । मरन जितेनर नार न पायो ॥
 तिन सबहन के अस्थि मगावो । वृषाकार इक मठ बनवायो ॥
 सकल प्रजा मिलिस्थींहींकोनौ । भयो सुदेस उपद्रव हीनौ ॥
 तादिन तें तामठ के माहीं । रह न सकै कोऊ निमित्ताहीं ॥
 तहां वसे निसि जिनवर नाथी । जअप लोगन वरजे स्वामी ॥
 तहं तिन जच्छ वड़ो भयदीनौ । गजअहि वीछीवपुधरिलीनौ ॥
 निफलभयोवलळलकरिथाक्यो । जिनपदपरयोकुमतिमदछाक्यो ॥
 जोरि हाथ अपराध छेमायो । ताहि प्रबोधिआप अपनायो ॥
 चरम रेन कछु रहत सवारै । दस सुपने जिन नाथ निहारे ॥
 प्रथम पिसाच दुष्ट इक मारा । सितकोइलपुनिअसितनिहारा ॥
 फूलनाल गो वरग सुहायो । पदन सरोवर सिंधु सुहायो ॥
 दिनकर मेरु आंत तरु लिपटी । योंदससुपन नींदलखिउचटी ॥
 जनपद जन जिन महिमाजानी । सब मिलि वंदेपूरन जानी ॥
 अग्नि ग्राम चोमासा रहे । मौन वृत्त सब असहन सहे ॥
 गनककजिन सनमुख आयो । तिन विवादकरि सोरमदायो ॥
 मौनि प्रतिज्ञ जानि सिद्धारथ । जिनतन पैठ्योसाव्योरुवारथ ॥

करि विवाद मी जनक हगयो । हाणि दीन हे विनय सुनायो ॥
 स्वामी तुन म्पावन में नानी । जहां ग्ही तहं पूरन कामी ॥
 पैसोको यह पल तजि दृजे । कोउ न नाने कोउ न पूजे ॥
 यहतुनिजिनकछु बरवा रहें । जानि अत्रेति विहारि तहंतें ॥
 सोनवन द्विज नित्र पिना को । तहां मिले मारग ये ताको ॥
 हाल विहाल निहारि जिनेसा । कृपा दृष्टि चिनये सुभ बेसा ॥
 तब उन अपनी दारिद्रभाख्ये । जाते सुतिकमान नहिं गख्ये ॥
 तबनुनि सोचे जिनवर स्वामी । हें निग्रंथ यहअर्थी कामी ॥
 इहि थल पाहि कहायां कीजे । आन निरामी केमे कीजे ॥
 देव दृष पट आवी जाव्य । दारिद्र तद हिये तें काव्यो ॥
 ताकी कोर सुधारन द्विजवर । ब्रह्म गये ले तांतीके घर ॥
 दिन जंती ताको कहि साधो । जें ले आवे दृजे आवो ॥
 ऐसो साधि देहुं में तो पट । लाख मोल यावेपो नहिंघट ॥
 लोभ लागि सोद्विजकिरिययो । श्रीजिनवर स्वामी मनुहायो ॥
 पै अति सोच सकोदन पाव्यो । नांगिसकेनहिलालचलाग्यो ॥
 तिहिं छिन कंटकचुच्छनसाहीं । उरख्यो देवदृष पट ताहीं ॥
 जिनवरतिहिंकिरिलखितहंस्याव्यो । तिहिंलीनोद्विजलालचलाग्यो ॥
 लोभस्तबल जिनजायोदुरघट । बघांनदियोपहिलेंतिगरोपट ॥
 पंचम आरो निकट संभाल्यो । जिहिंहुस्तमयगुनमोननचाल्यो ॥
 यों विचारि जिनवर जियजाने । आगम काल साध पहिचाने ॥
 क्रूर लोभनय होहिं कालवस । मोननलोभ वन्न कणटक फस ॥
 कंटक क्रूर दिव्य पट धार्यो । लोभ परिग्रहकरन विचर्यो ॥
 तेरह मास दिव्य पट सोई । जिनवर तन आच्छादन होई ॥
 तदनन्तर भगवन्त जिनेसा । लये रहन विन वसन सुवेसा ॥
 करतल बन आहार विहारा । काय नेह तजि आतम धारा ॥
 सहें सहन असहन उपसर्गा । जोक्रियतिय पसु नदुसुरवर्गा ॥
 पुनि जिन विहारि तहांतें आगे । कनकवालुका भुव तट लागे ॥

गांड कनकखलद्विगजिनवरजे । पहुंचे तहं के लोगन वरजे ॥
 नागे ग्हें दृष्ट विप विपधर । दीठ विपहिं तेंजो मारतधर ॥
 चंड कोश ता अहि को नामा । कालकराल क्रोधको धामा ॥
 याहू की पूरव भव भावी । भाखैंजिनअहितन उरझावी ॥
 इक दिन काहू नगर मझारी । पावसरितुमुनिजिन व्रतधारी ॥
 गये गोचरी हेत गृही घर । मरी मेड़की दवि मुनिपगतर ॥
 शिष्यःखि सोबोल्यो गुरु सों । देहु स्वामि मिच्छामदुकडौ ॥
 गुरुन मानिजवनिज थलआये । फिर चेला सुडभाव चिताये ॥
 फिरि संध्या पड़कमन समेहू । गुरुन कही मिच्छामिदुकडूं ॥
 तीन बेर चेला वर गुरुसों । भाखिरह्यो नहिं मानीधुरसों ॥
 अरु तापरअति क्रोधपसार्यो । मुनि चेला ओघालै मार्यो ॥
 वच्यो भाजि चेला गुरु क्रोधी । मरि तीजे भव भयो विरोधी ॥
 तापस कें इक बाग बनायो । सो फल फूलनतें अधिकायो ॥
 इकदिन गजकुंअर तिहिंवारी । आय एक फल तोर्यो भारी ॥
 तापस लखिअति तामसछायो । लें फरसातिहिं मारन धायो ॥
 क्रोध छाय दृग अंध सुकर्यो । अंध कूपमें सो गिरि मर्यो ॥
 मरि इह भव सो तापस तयो । चंड कोश दृग विपधर भयो ॥
 अमयद निर्भय कें जिननाथा । ताही पै गये करन सनाथा ॥
 तहं तप करि जिनविनडंनोमा । अहि घरतेंकद्विजिनतनडसा ॥
 दृथद्विअर कें वदलें निकमा । वदनकमलजिनवरकरविकसा ॥
 जिननगर अहिकें जिन दीना । तिनसुनिसमझिचरनगहिलीना ॥
 प्रात तजे दिन करि संयारा । देव लोक आठवें सिधारा ॥
 नागमेठ घर पुनि जिननाथा । करिपारनतिहिं कियो सनाथा ॥
 पुनि भनवत तहां तें विहरे । श्वेतंविका नगर में ठहरे ॥
 नृपति प्रदेमी नाम तहां तिन । महिमा मानी जानिनाथजिन ॥
 आगे विहरि मुग्धि पुर पेंठे । उतरन गंग नाव पर वैठे ॥
 वर भाव सुरनाग कुमारा । लग्यो आय तहंवोरन वारा ॥

पूरव भव तिन सिंह संभारग । दासुदेव ह्वे जेहिजिन मारा ॥
 सम्बल कम्बल देवन ताकौं । वरजिजताईजिन महिमाकौं ॥
 तिनहूं को पूरव भव कग्नी । सुनि वरजो जो आगमवरनी ॥
 मथुगपुर जिनदास महाजन । तिननिजगृपजोरीइकदिनछन ॥
 किहूं मित्र कौं मांगे दीनी । तिन अतिवाहिकरीवलहीनी ॥
 मरन वार नवकार मुनायो । मरि सुभ ध्यान देवपदपायो ॥
 संवल कंबल तिनको नामा । सब देवन में भये ललामा ॥
 पुनि जिनवर जग विहरनलागे । पांच सुमतिमितिकेरस पागे ॥
 क्रोध मान ममतादिक त्यागे । स्वच्छइच्छतजिविहरनलागे ॥
 निरालंब जैसे आकासा । निस्त्रेही ज्यों पवन विलासा ॥
 सारदजलको नाई निरमल । मरजादानतजतजिमिनिधिजल ॥
 खड्ग विषान मान एकाको । ससि सम ताप नजामें बाकी ॥
 गुपत सकलइन्द्रिय कछुवालों । चारित भर वाहक वरदा लौं ॥
 दृश्य न देखन भाव न काला । प्रति वन्देनहिंजिनजनपाला ॥
 ऐसैं जग विचरैं जिन स्वामी । जिनजन गन के पूरन कामी ॥
 पंचरात नगरी में वसैं । इकनिसिगांव मांझ वसिनसैं ॥
 विष चन्द्रनतन मनिसमजाकैं । जीवन मरन समान सुताकैं ॥
 ऐसैं जिन जन पारंगामी । महावीर वर भगवत स्वामी ॥
 विहरैं विचरैं विषन नगरमें । अमल अचैल अबोल डगरमें ॥

घनाक्षरी ॥

मानको न मान अपमान अपमानको न राग हूं सौं राग न
 विरागहै विराग सौं । सूरजसे सूर पूरे सोनजैसे सोम रूरेधूरेहूं
 अधूरे हैं सहन जाकीजाग सौं ॥ धराधर जैसेधरे वीरवलवीर
 जैसे छीर नीरनिधि से गंभीर चीरत्याग सौं । ऐसैंविहरत वीर
 राग महावीर स्वामीजाको यों महातम है आतमकी लागसौं ॥

चौपाई ॥

तदनंतर दूजे चौमासे । राज ग्रही नगरी में थासे ॥

नन्दल सुनगोमालकनिहिंठां । पारन विजयसेठ घर कोना ॥
 नन्दल सुनगोमालकनिहिंठां । जिनगोहनलाग्योलखिमहिनां ॥
 जिनवर तवनिहिं पृथ्वीभागै । तिनभारुयौ हैं शिष्यतुम्हारौ ॥
 नन्दल बलुका पुर जिन आये । नन्दन द्विज पारन करवाये ॥
 हो उपनन्द तागु को भाई । गोसालक तहं भिच्छा पाई ॥
 कुस्सितान्न लहि कोप अधीनौ । स्राप ताहि ऐसो कहि दीनौ ॥
 जो सो धन्माचारज सांचौ । तो तुववर जागै अगिनाचौ ॥
 न्राप देत ताको घर जरयो । क्रोध छाप ऐसो नल करयो ॥
 नन्दल सुननिजकृतअभिमानौ । भयोछयो मद गरव गुमानौ ॥
 चम्पा वृष्ट गांव में आये । चौथी वरणा तहां निताये ॥
 जिरन सेठ निमंत्रन दीना । अभिनय के घर पारन कीना ॥
 लाठ देस में पुनि जिन आये । काउगाग ताग ध्यान लगाये ॥
 तन निद्रिकाल ग्वालक आई । जिन गग पग्धगिरीर रंधाई ॥
 वरणा गिनु जिन तहां वंताई । पुनि लठ्ठे नग्वा जब आई ॥
 पुरी भद्रिका जिन लवि छाई । आठ मान गिनु तहांबिताई ॥
 तहां बहुत उपगर्ग पहिं जिन । तावुग नाम मातवें पुनितिन ॥
 कालबिना नगरी में आये । गोमालक उपसर्ग बढ़ाये ॥
 पुनितव समदालक वनगळों । लठ्ठ पवना व्यंतरी गन तें ॥
 वड उदर नो भये जिनवगळों । गज ग्रहो पुनिगये नगरकौं ॥
 वरन चाटवों तहां बिताई । तवग अनारज थल में छाई ॥
 तहां गये उदरभं अंधका । गांड कुचूरन देख्यो एका ॥
 तहं तावुग उक्त अमितमधे । भारी जटां सिस पर बांधे ॥
 तहं जनु हृद जो गिरे । तापवनिहिं क्षिरमिर परधरे ॥
 गोसालक ता तपनी वरणां । गो तवसो ताऊपर तरज्यो ॥
 तहोलेग चलाई तापें । जरन लख्यो गोसालक जातें ॥
 तहिनसहे जिनवरद ग्वाला । तहोलेग तजतिहिं काला ॥
 गोसालक को मरुत बचायो । तव गोमाल चेत चित पायो ॥

सिद्धारथ सों पूँछि तबें उन । साधो सिद्धि तेज लेशा पुन ॥
 पुनि सावस्ती नगरो आई । दसई दरखा तहां बिताई ॥
 पुनि पोढाल नगर में जिनवर । काउसस्य तय करिठाढ़े घर ॥
 जिन बल प्रबलप्रसंस प्रसंगा । इन्द्र सभा में भयो अंभंगा ॥
 तहं अभव्य संगम सामानिक । चहो परिच्छा करनअचानक ॥
 तिहं थलआयएकनिसिमेंतिन । बोल किये उपसर्ग सहेजिन ॥
 अहि गजसिंहआदितनुधरि कें । अमितउपायकियेतिनडरिकें ॥
 डग भर द्विगेनहींजिन स्वागी । भवभय जलनिधि पारंगानी ॥
 योंछमात्र लों लहि उपसर्गा । चूके नेक नहीं तप वर्गा ॥
 तवतिहिंइन्द्र आयअतिदूर्य्यो । सोनिजदोष मानिसुखसूर्य्यो ॥
 नीत रीत हित तिहिं सुरसाई । मेरदूल कों दियो पठाई ॥
 वृद्ध गुवाल तहां इक आयो । वृत्त छ मास पारनौ करायो ॥
 सुसमापुर पुनिआये जिनवर । चातुरमास ग्यारहैंतहं कर ॥
 चमरुत्पात भयो ताही थल । कोंसंबी में रहे महाबल ॥
 तहां पांस वदि पड़िवाके दिन । जिनवरलियोअविगृहसो सुन ॥
 उड़द वाकला सूप कोन लें । इक पग बाहर एक भौन में ॥
 राजकुमारी मूंड सुड़ायें । पग वेड़ी अरु नागें पायें ॥
 दासी हूँ रोवत मधि दिनमें । तीन उपास तासु पारन में ॥
 जो ऐसैं हमकों विहरावै । भाव भगति करि तो मनभावै ॥
 ऐसैं कृत प्रतज्ञ हूँ जिनवर । पारन हित नित विचरें घरघर ॥
 दैवजोग तैं नृपति सथानिक । दधिवाहन नृप तिन कौनौ दिक्क ॥
 मारि तासु की चंपानगरी । बन्द लूट कीनी सो सिगरी ॥
 परी एक भट करतिहि रानी । गही विकरुल ह्वै जात परानी ॥
 तिहिंभटतिहिबदननरनिहार्यो । काटिजीभतिनमरनसुधार्यो ॥
 बची तासु कव चंदन वेटी । चंदमुखी गुन रूप लपेटी ॥
 ताहि मूढ भटी बेचन लाग्यो । धनासेठतिहिलखि अनुराग्यो ॥
 मुहु मांग्यो ताकों धनदैंकै । बाल चंदना मोल सुलैंकै ॥

आयो घरें लाय तिहिं राखी । हितमित बानी तासों भाखी ॥
 मूल कुमूला सेठ सिठानी । अतिकलहातिहिलखिअनखानी ॥
 कोपि तासु कों मूढ़ मुड़ायो । पग वेड़ी दे कैद करायो ॥
 तीन दिना लैं भूखी प्यासी । कैदें माहिं रही सो दासी ॥
 चौथे दिनतिय अनत सिघाई । सेठ खबर दासी की पाई ॥
 काढ़ि बंद तैं बाहिर आनी । आचासितकरिकहिमृदुबानी ॥
 उड़द बाकला प्रस्तुत पाये । सूप कोन में ताहि दिवाये ॥
 आप लुहारहि बोलन घायो । वेड़ी काटन हित मगवायो ॥
 ऐसैं मैं जिनबर तहां आये । दौरि चंदना दरसन पाये ॥
 अपनौ भाग्य विचारि सभागी । उड़द जिने बिहरावन लागी ॥
 तव जिन निज परतज्ञ विचारी । सब पाई जो चित में धारी ॥
 देस काल ज्यों के त्यों पाये । रुदन बिना सब भावसुभाये ॥
 यह चित धरि जिनफिरेविरागी । बाल दुखित ह्वैरोवन लागी ॥
 तवफिर फिर जिन पारन लीना । चंदन तियहिं कृतारथ कीना ॥
 वेड़ी पगन आपही टूटी । वेनी सिर पर लांबी छूटी ॥
 सकल देव गन लहिसुख हरखे । बारह कोटि सोनेया बरखे ॥
 सो धन राजा लें विचारी । देव गिरा तहं प्रगटी भारी ॥
 यह धन तेरे काम न आवे । जब चंदन तिय दिच्छा पावे ॥
 ताकों होय महोच्छव जवहीं । यह धन खरच होयगो तवहीं ॥
 मृगावती राजा की रानी । सो चंदन की मासी जानी ॥
 तिन चंदन कों लई बुलाई । अपने ढिग राखी सुख पाई ॥
 चातुरमास बारवें जिनबर । चंपानगरी पहुंचि रहेकर ॥
 माम तेगवें वन तप कीना । पूरव भव वैरी तिन चीना ॥
 जाके कान माहिं तिहिं भव में । तपत धात डारीही दव में ॥

अथ कथा ॥

ताकी कथा कहैं विस्तारी । वासुदेव भव जिन अरिहारी ॥
 एक समय नटनाटक सुनतें । आवनलगी नींद सुख गुनतें ॥

सेजपाल सां तव उन भाखें । इनकां अब नाटकतें राखें ॥
 यों कहि सोये नरवर स्वामी । पै बरजे नहिं उन धुनि कामी ॥
 नाटक धुनि तें प्रभु जब जागे । अज्ञालोय लेखि रिस पागे ॥
 ताके कान माहिं तिहिं काला । धातु आंठि डारी नरपाला ॥
 अबकें तिनतन ग्वालाको धरि । बैर पाछिछों सुमिर कोपकरि ॥
 तीखी मेख काठ की गढ़िके । जिनतपसमयआयतिनवढ़िके ॥
 कानमाहिं गहि बल करिठोको । बैर बदलिसवज्यांकी त्योंकी ॥
 तिन पापी ऐसो दुख दीनों । तिन वेदन कीनों तन छीनों ॥
 तहतें जिनवर विहरि सिधाये । वेद खरक नामा घर आये ॥
 तिनअतिबल करिकीली काढ़ी । जातें अधिक वेदना वाढ़ी ॥
 काढ़त सबद कियो जिन भारी । गिरि दरके धर धरकी सारी ॥
 ह्यालों सब उपसर्ग बदे जे । भये संपूर्ण ते जिनवर के ॥
 अथ महावीर के बलज्ञान कल्पानक ॥

ऐसैं बारह वरस पुराये । ता ऊपरछह मास बढ़ाये ॥
 पंद्रह दिन ता ऊपर बीते । तीन पहर हूं तहां वितीते ॥
 दसमी सुदि बैसाख मास तिन । विजयमुहूरतसुवृत नामदिन ॥
 उत्तर फागुनखत जोगनसि । गांउज्जिनकातिहिंवाहरवसि ॥
 साल तरु तरैं रिजुसरिता तट । आतम तत्त्व ज्ञान पूरन घट ॥
 द्वे उपास उत्तर तरु हेटे । चौद्विहार करि उकड़ूं बैठे ॥
 तहं अति उत्तम ज्ञानन माहीं । केवलज्ञान लह्यो तिहिं ठाहीं ॥
 ता दिन तैं अरिहंत कहाये । सुरमुनिमनुमनजान सुहाये ॥
 भीत ओट की नहिं कछु छानी । ऐसे जिनवर केवल ज्ञानी ॥
 जीव गतागत भव कायाथित । मनवचकायकरमकीपरिमित ॥
 गुपत प्रगट सब जानन हारे । यों विचरें जिनवरभयडारे ॥

अथ समो सरन वर्णन ॥

जबे भये जिन केवल ज्ञानी । सब जीवनकी छानी जानी ॥
 तब जिंभक नगरी में आये । सब देवन के भये बघाये ॥

चोमठ डन्द्र चारि विधिके सुर । महिमा लागे करनजानगुर ॥
 यमोमरन जिनवर हित रच्यो । एको मुख जाति नहिं नच्यो ॥
 आदि जिनेयर हित हूं ऐमें । सुरन रच्यो हों बरगो तेंगे ॥
 बाग्द जोजन मिति ही ताकी । द्वैहै कोम उन की वाकी ॥
 बाईसां जिन लों या क्रम सां । रच्यो यमोमरन अनुपपसां ॥
 तैसां पारस जिन तारन । पांच कोस को रचितनकारना ॥
 महावीर स्वायी जिन हेता । चार कोस को क्रियोनि हेता ॥
 सुथक समानस्वच्छ चविनी हो । परिधाकार भावतो जीयो ॥
 पुनि वैमानिक सुर तहं आये । तिहि थक परगदनीनवनाये ॥
 प्रथम रजिन दुर्गो कंचनको । तोजो जोत मरि गाननको ॥
 रजिन दुर्ग में सृगकृन्त जितने । वेर भाव राज बसें सु वितने ॥
 दुर्गे कंचन दुर्गागारा । सुगुणो जग कृन्तप्रविकारी ॥
 रजनमरी तजो गढ़ मारी । सुगुणो जगवारी तिहिठारी ॥
 बाग्द निधि के ते गुण मारो । जादि परबदा बाग्द भावो ॥
 माठ जात के सुर मारो । बाग्द मद्य या गुनि विस्तारी ॥
 देसाजिक भूत । पुनि व्यतर । अरु जोति के बाग्दविधियुवर ॥
 न रि जात के निरकी जागे । माध गायको अरु व्रत धारी ॥
 कोर धारिवाथावकतिपिठमव । मडे परबदा बाग्द तहं तव ॥
 ते मद्य मद्यकाट के मारी । अप अयो थक वमें तहांही ॥
 उरवि तमधु साधर्वसुगनिय । मग्थाव तथावकतियदिसविय ॥
 जोरनि इहपति व्यतर तोजो । तिनकी गिय चौथी दिमथोजे ॥
 कोरबदा परबदा मिनगे । मनिने दुर्ग वमें गुन अगरी ॥
 विर तोर गढ़ के मधु माजा । बाग्दबाग्दहुंदिमि दरयाजा ॥
 ही मारी तोरन तहं साहें । सुगुणो मनु गन के यमोहें ॥
 अरुमन ननरी जग मगजोती । खचेमदन मनि मानिकमोती ॥
 भादिमोति कृत्या इन्द्र वारी । पचगुणानिचुरतिसी क्यारी ॥
 यमो दिना मोगभ भाग्दमदी । चहुदिसितेअलिअवलीझुमडी ॥

वर सरवर तरवर घन मांहीं । ठोंठोंर सुठि स्वच्छ तंहाहीं ॥
 चहुं दिसिजाके मनि सोपाना । फूले विमलकमल कुलनाना ॥
 भोंरझोंर जिनके रस राते । मधु मकंद छके मद्माते ॥
 राजहंस के वंस अनेका । कुंज पुंज संजुल बन सेका ॥
 अच्छप्रतच्छ स्वच्छजलमाहीं । मच्छकच्छ परतच्छ दिखाहीं ॥
 निसिदिनदिनमनिगनदुतिचहिके । कोकसोकछाडतंसुखलहिके ॥
 यों अनेक जठुचर जलपच्छी । वरबलाक सारस छविअच्छी ॥
 सुखसनाज कारज जग जेते । नृत्य नाट्य गंधय गुन तेते ॥
 विबुध बधू अप्सरकिन्नरवर । मिलि नाचतगावत मधुरे सुर ॥
 तंत्र त्रितंत्र सुपिर घन आवज । वीन वेनु कठ ताल परवावज ॥
 इन्हें आदि दे जेजे वाजे । ते अगिनत तहं वाजिविराजे ॥
 और कहां लैं कवि जन वरने । होयन अमितगुनन कोनिरने ॥
 सुरन रच्यौ ऐसो सुखदायक । थल अनपजिननायकलायक ॥
 जिन जिनके अतिसैं चांतीसा । सोवरनों अब विस्वा वीसा ॥
 तन विन सेद विमलविनछाया । सुरभि सुखसुलच्छनकाया ॥
 छीर वरन स्रोनितरंग जिनको । सनचतुरस्त्रसंस्थ तन तिनको ॥
 अमितवीर्यअतिप्रिय हितवानी । बज्र नराच रिपभ तनमानी ॥
 छेम सुभिच्छ आठ संकोसा । गगनगामि जनमित्र अडोसा ॥
 चतुरानन सबजिय बध बारक । सबउपसर्ग रहितजिनतारक ॥
 वरविद्वेश केश नख समता । कवलअहाररहित जिनगमता ॥
 अनमिखअरध मागधीभाखा । फूलि फलेसत्र रितु तरुसाखा ॥
 दर्पनसम भुव जन मुदकारी । वहै सुरभि अनुकूल बयारी ॥
 भुवकंठक रज कांकर हीनो । सुरभि सलिलवरसनरतभीनी ॥
 कनककमलरचनाजिनपगतार । नमितसकलअनतरुवरकरभर ॥
 अमलअकास और दसआसा । सुरगन आकारन गुन खासा ॥
 धर्मचक्र आगैं चलि राजे । अष्ट मंगलिक सन्मुख छाजे ॥
 चौतीसैं अतिसय ये जिनके । कहैं अष्ट प्रतिहारज तिनके ॥

नरु नगोक त्रय छत्रविराजनि । भामंडलसुर दुन्दुभि वाजनि ॥
 चंद्र सिंघासन दिव्यधीरुनि । कुसुमवृष्टिसुर करत तहांपुनि ॥
 गेडं आठ कहे प्रतिहारज । चारिअनंत सुनो सुखकारज ॥
 ज्ञान अनंत अनंते दरसन । बल अनंत त्योंहीसुखवरसन ॥
 ऐसे जिन जिनके हैं ये गुन । तिनकी महिमावरनो सोसुन ॥
 समोसरन की मध्य महीमें । जाकी महिमा प्रथम कहीमें ॥
 कनकदंड मनिखचित विराजे । जोजन सहस उच्चछवि छाजे ॥
 तापर पंचरंग धुजा विराजे । इन्द्रधनुष जाको लखि लाजे ॥
 तहं अशोक अरु शोक निवारें । तिहिं तररतन सिंघासन ढारें ॥
 छत्र तीन सिर ऊपर मोहै । वदन प्रभा भामंडल मोहै ॥
 ना थल महावीर जिनस्वामी । तें कनक सिंघासन नामी ॥
 चारयो दिम करि चार वदनतें । मेघगिग गंभीर सघनतें ॥
 धर्म बगवान बगवाने जातें । राव समजें अपनी भाखामें ॥
 पै यह धर्म देमना बानी । सुनो मवन पै किहूं न मानी ॥
 नो जग माहि अयोगी भयो । प्रथम प्रकृष्टन में सो कह्यो ॥
 जिनवर सो थलदीनविचारया । पाणापुरी नाम तिहिं धारयो ॥
 विही मनिवहंतें जिन विर । मथम पाप सेन बनठहरे ॥
 जिनवर नरु । तिहिं काल्या । गामलद्विजक्रतुकियोविसाला ॥
 ग्यारह द्विज वेदज विच्छा । जिनकें गप्य अनेक सुलच्छन ॥
 इन्द्रपुति कविद्विज तिहिं नामा । विद्या मागर गुनगन धामा ॥
 कोरी द्विज अनेक लह पागे । अप अपने अधिकारन लागे ॥
 जिनवर नरु मधद्विजमिल । नमामरे जिनवरतवतिहिंथिल ॥
 जट मध प्रविहार तन गठ । मिला परग्वदा वारहवर बटु ॥
 देव इवर्षी बज्रन लागे । सुगन मव आये गुन पागे ॥
 नरु अटल लखिद्विजनविचारी । इहां जज आवत असुरारी ॥
 जट वदने नरु अनंत मिथारे । द्विजवर कोप भरे अति भारे ॥
 इन्द्रपुति यह कोउ भारी । जिन वंचे अनगन असुरारी ॥

यातें याके तट अत्र जेये । विद्या वाग विवाद होये ॥
 ऐसैं कहि तहं ने द्विज नायक । रंग गंधर्हें जिन्य सुलायक ॥
 सनो सरन थल पहुंचे आई । जहां मिले सब नुर सनुवाई ॥
 जिनदरमहिंसा लखिभयपाये । लखिप्रभुता अद्भुतरसछाये ॥
 तबतें द्विज मन यहै विचारें । जां जन मन संदेह निवारें ॥
 तो हय इनकी महिमा जानें । जिनवर सहावीर कर मानें ॥
 ऐसैं जब उन हिये विचारी । जिनवर मन की जानी सारी ॥
 पहिलें स्वागति करि सतकारे । पुनिसन्धानि नान दे भारे ॥
 कह्यो तुमारे उर अंतर जो । सो हम सब जानें सुनियेसो ॥
 तीन वकार चहत तुम भाख्यो । अरुप तासुको पूछन राख्यो ॥
 सो हय तुमकों देहिं वताई । दया दान दम तीनों भाई ॥
 इन्द्रभूति सुन विस्मित भयो । चकित होय अद्भुतरसछयो ॥
 जिन महिमा उन निहचें जानी । जैनी दिच्छालें सनमानी ॥
 अरों दसों विप्र जे रहे । शिष्यन सहित जैन पथ गहे ॥
 भये च्यारहों गनधर नानी । सबप्रतिबोधे जिनवर स्वामी ॥
 एक बुहूरत नाहिं पढ़े सब । द्वादस अंगी चौदस पूरव ॥
 तिनमें इन्द्रभूति जो रहैं । तिनहीकों गोतम जिन कहैं ॥
 सो गोतमस्वामी महिमा सुन । अद्भुत रूप उदार चारगुन ॥
 जावजीव जिन छठतप कोना । लब्ध अठाइस जिहिं आधीन ॥
 आठसिद्धि अरु चार ज्ञानजुत । इरु केवल दिन सबगुन संयुत ॥
 इकादिन जिनसों पूछ्यो गोतम । दयोंकरिकेवलमिले महातम ॥
 वीतराग भाख्यो गोतम सों । करौ अष्टपद तीरथ क्रमसों ॥
 तद्भव सिद्धि तुम्हें तहं मिले । सुनि गोतम अष्टापद चले ॥
 अपनी लब्धन के बल बढे । पहुंचि तुरत तिहिं ऊपर चढे ॥
 प्रथम जुहारि सकल थल सोधे । तिर्यकजम्भक सुर प्रतिबोधे ॥
 जब उत तें उतरन चित दीने । पंद्रहसें तापन सिख कने ॥
 जिहिं जिहिंगोतमदिच्छादीनी । तिनदिनसवनज्ञानपथचरिही ॥

तक्र = ज्ञान गोमिं होई । तत्र जिनवर सां पूछ्योसोई ॥
 वीर राज गोवन सां भाख्यो । तुमसोपंचरति राग जुराख्यो ॥
 ताहि तजो तो उपजे जाना । विन त्यागेकछुवरे न जाना ॥
 तत्र गोतम भाख्यो बरजिनसों । छुटे न राग तुमारी मनसों ॥
 तुम मनजानि कह्यो गोतम मे । तुमहूं अंत होय हो हम से ॥
 ऐसं कहि कहि अति हित पोखे । गोतम स्वामीहूं संतोखे ॥
 चातुरमात्र जिने जहं जिनवर । रहे सु अब भाख्यो इकठेकर ॥
 अस्थिगांव पहिले चौमामे । महावीर जिनवर तहं थामे ॥
 चंपा पृष्टि चंप चिन क्षीने । तहां तीन चौमामे कोने ॥
 वानिज गांव विपाले माहीं । नारह बरणा रहे तहांहीं ॥
 राजप्रही नगरी तत्र आये । चौदह चातुरमाम विताये ॥
 मिथिला में क्रा कीने स्वामी । दोष भद्रिका पुगी मुधासी ॥
 काव्यभिका में पडे बरणा । शान्त ही इक निवई बरणा ॥
 एते देस अनाया माहीं । योगामा भक्ति रहे तहांहीं ॥
 हनुमन्दाय नृप राज गपामें । अंतक वरत्वा बनि तामें ॥

अथ महावीर माशकल्पानक ॥

दशरथ वरुण विदे । व को पाख मातवां वीत ॥
 वीर वरुण अश्व पदिका । माद्वारह चरित लहिकें ॥
 रति छत्र मलय शो पुनि यथा । केवल वत्सर तीस वितायो ॥
 एत वरुण पुं । उन्मर्षनी काल वय मये ॥
 गुणगुण शो वारे के । हाड़ा कोड़ एक वारे के ॥
 रति वरुण वरुण वरुण मों । तत्र वरुण चौमाम दून में ॥
 त वरुण वरुण विन रह्यो । पावानगरी माहिं निवहते ॥
 हनुमन्दाय नृप अय मउरी में । स्वति खत संगम मसिहीमें ॥
 रति वरुण वरुण वरुण मों । वरुण नाम संवत्सर कहते ॥
 रति वरुण वरुण वरुण मों । पाव नंदवदन कहि स्वासा ॥
 अग्निवदन विन देवनेदा । तिहीं निमा को नाम असंदा ॥

चौ बिहार द्वे वास सुवारे । सुर उदय ते प्रथम सकारे ॥
 पद्मामन सुन आसन ठाने । चंपावन अध्येन बखाने ॥
 सुख विपाक मंगल फल भाखें । पंचावन अध्येन सुसाखें ॥
 दुखविपाक ताकौ फल कहते । वतिस ध्येनन पूछै बहते ॥
 तिहिं छिन ताही काल वसता । जिनवर महावीर भगवंता ॥
 बुक्ति जानकौ सुसमय लह्यौ । तब तहं इन्द्र आन यौं कह्यौ ॥
 जे क्यांहं करि यह छिन वीतें । घरी दोय यह काल वीतीतें ॥
 ना तरु दुष्ट भस्मगृह छेहै । सकल असुभफलबल दलसैहै ॥
 याकौ फल हेसहस बरसलौं । साध साधवी जती सतीकौं ॥
 अधिक नान सनमान न होई । जबलौं बरस न वीतें सोई ॥
 सुनिबोले सुरपति सौंजिनवर । सुरगिरचालनसकौधरनिपर ॥
 पे यह समौ न टाल्यो जाई । जोकरमनयिति बांधि बनाई ॥
 यौं कहि सब बंधन तजि दीने । आठौं कर्म तजे स्वाधीने ॥
 सिद्धिवुद्धि जुत मुक्ति सिधारे । सकलभीम भवभय निरवारे ॥
 तब सुर चंदनमय चय कीना । अगिनकुमारअगिनरचिदीना ॥
 वायकुमार अगिन परजारी । मेघ कुमार सींचि चय डारी ॥
 उत्तर संसकार वरजिन कौं । ऐसैं भयो भयो दुख जन कौं ॥
 नव मल्ली नव लच्छ आदिदे । मिले अठारह नृपता थलपे ॥
 तनतब तिहिंनिरवानरेंनदिन । पोसाकरिवितयोसोदिनछिन ॥
 ग्यान जोतजिन सिद्ध सिधारे । फेलिगये जग में तम भारे ॥
 तब सब लोगन दोदा वारे । नाम दिवारी तबतैं पारे ॥
 पुनि भगवंत बुक्ति तदनंतर । सुच्छम जीवकंधुआ धरपर ॥
 उपजेतिहिं लखिप्राय साधुजन । त्यागिआपन्न त्यागिदयेतन ॥
 शिष्यन सौं गुरु कहनलगे यौं । अवचारितदुस्साध्यभयोन्थ्यौं ॥
 मुक्ति समैनिजलर्हाजिन उत्तम । दिच्छा हित पठये हैगोतम ॥
 तिन निरवान समै देवन तैं । पूछ्यौंदुम कितजातसदन तैं ॥
 देवन जिन निरवान सुनायो । सुनि गोतमअतिसैदुखपायो ॥

चारि वरस केवल न्यानन्तर । चन्वो मुक्तमार्गतदनन्तर ॥
 सु परियांत कृत भूमि कहीजे । दुहुं भूमि निवहरहि पतीजे ॥
 तदनन्तर नौसो अन्नी जन । भयो वडो दुर्गभिच्छ भयावन ॥
 सबविष्टेदभयोलाखजिनजन । लिखन लक्ष्मिपुस्तक तवतेधन ॥
 नौसे नवति वरन त्रय वीने । कइ कहें तव लिखे सप्रोते ॥
 इक वाचन बलभी नगरी है । देवदहन छन समन करी है ॥
 दूजी वाचन मधुरा नगरी । करी कन्दला चारज सिगरी ॥

इति श्री महावीर स्वामी अधिकांसंपूर्ण ॥

श्रीपारसनाथ अधिकार ॥

दोहा ॥

अब श्रीपारसनाथकेपांचौजे कल्यान । अबन जनन चारित्र अरु
 परस ग्यान निरवान ॥ जब जब इन पांचौन को भवमें भयो स-
 जोग । तब तब नखत विलाखही नांहि रह्यो ससिजोग ॥ पारस
 पूरव दस जनम जेजे भयो निदान । तिनतिनको वरनन करों कछु
 संछेय वखान ॥ पांतनपुर अर बिन्द नृप विप्रपुरोहित तासु । क-
 मठ और मरुभूत द्वे पुत्र पुरोहित जासु ॥ मरुसुन्दरी वसुंधरा
 नाम वाम छवि जाल । तासों कमठकुपूतने करी कुर्गीतकुचाल ॥
 सो सुनि मरु मरु भूनि लों भयो प्रोत रस हीन । करीकठिन-
 ताउन भयो मन करि कमठ मलीन ॥ सकुबिसोचि संसारतजि
 तिन तप कीनोजाय । सहज सरल मन मरुगयो तिहि तट दोष
 खिमाय ॥ पैतिन तापस कमठ ने मारयो मरु करिक्रोध । यहै
 बिप्र सुत दुहुन को भयो प्रथम भवबोध ॥ सो मरु मरि हाथी
 भयो कमठ भयो मरि सर्प । वैर सुमिर ता दुरद को डरयो
 सर्प करि दर्प ॥ यह दूजौ भव फेर गज मरि सुर भयो सुजान ।
 कमठ जीव अहि मरि भयो नरक निवासि निदान ॥ यह तीजौ
 चौथो भयो मरु विद्याधर रूप । निकसि नरक तें कमठ फिरि
 भयो मुजङ्गमभूप ॥ दसिविद्याधर को बहुरनरकनिवास्यो सोय ॥

विद्याय मरि वारवें सुरपुरको सुर होय ॥ भयोप,
 पुनि मरु मरि नृप होय । नृज नाभि नामा लियो चा।
 मरु धोय ॥ भयो भील भव कमठ तिन नृपहि नारि मरि र,
 नरक गयो भव सातवें नृप सुर भयो सुसील ॥ चक्रवर्तमरुजीव
 पुनि भयो भये भव आठ । कमठ जीव द्वे सिंघ पुनि हच्योताहि
 मुनि पाठ ॥ पुनि मरु सुर ह्वै कमठ लहि नरक नवें भवफेर ।
 मरु जिघ पारसनाथ ह्वै प्रगट्या दसवें हंर ॥

अथ श्री पारसनाथस्वामी चवन कल्याणक ॥

जंबु दीप थल भरत मेंपुरी बनारस धाम । अरुवसेन नृप राज
 घर रानी वामा नाम ॥ तासु कूप में चेतवदि चौथ भये अध-
 गत दमम देवता लोकते मरु जिय च्वे विख्यात ॥ नृप तिय
 वामा निहि रामय कछु सोवत कछु जाग । नखन विसाख जोग
 नामि मपन चौदहों लाग ॥ सुरगम्बधी आउ राज तजि अहार
 दिव्यहार । गर्भरूप त्रयग्यानजुत भयो गर्भआधार ॥ चवनसगय
 नयो नरी चधि जान्यो जिन ज्ञान । वामा सो मुभ सुगन फल
 क्यो मृजानन आन ॥ वाम मपन फल मुनि समुद्धि नोदानद
 वटाय । कमन नर्गा तिन गर्भकार कला अति सुख पाय ॥ गर्भवास
 केनामत्रय गयेमवानय वीत । पूम असित तिथिदसमि को नखत
 दिगम्बप्रवत ॥

अथ श्री पागनाथ जन्म कल्याणक ॥

जिन तिसीय दाने विदित श्री जिन पारसनाथ । प्रगटि जन्म ले
 मान की कनि कृप नगय ॥ क्यपन दिमा कुमारि अरु चौंसठ
 इन्द्रन आय । महावीर जिन लों कियो जनम महोच्छो चाय ॥
 अश्वनेन नृप ह्वै कियो मङ्गल मोद वटाय । जैसे सिद्धार्थ नृपति
 कियो महोच्छव चाय ॥ गुनवयविद्यादिनयवररूपसीलमुघराय ।
 जूत श्रीपागनाथ जिन प्रगट भयेसुभ भाय ॥ तीनग्यान करि
 सहित जिनश्रुति मति अवधि आधार । हरित वरन नव हाथ

वपु भुक्ति लुक्ति दातार ॥ सिन्धु पौगंडकुमार वय क्रमक्रम भई
 वितीत । तय लक्ष्मणार्ड तरनि की भई उदय परतीत ॥ नगर कु-
 शरुय प्रसेनजित नृपति सुता सुभजासु । प्रभावती इहिं नामजिन
 पारसव्याहीतानु ॥ दम्पति सुख सम्पति भरे करि गृहस्थ विवहार ।
 विषय भोग सुख भोगि सब चारित पर मन धार ॥ इक तापस
 पंचाग्नि तप सायत लखि जिन जान । ताहि ऋह्योरे मूढ़ क्यो सा-
 धत तप अग्यान ॥ यो कहि गहि ता अग्नि तै जरत निकासे दोषा
 सर्प सर्पिनी अध जरे मरन लगे लखि सोय ॥ आदि पांचनोकार
 के पांचो वरन सहेत । असि आउसा विचारि चित तुरत उता-
 यल हेत ॥ दीने तिहें सुनायते बोधि देवपद पाय । धरन इन्द्र
 अहि मरि भयो पदमावति तिघ चाय ॥ सो तापस हो कमठ
 जिय लज्जित हँ सकुचाय । मेघमालिसुर मरि भयो धारिवैर हिय
 भाय ॥ दिच्छा समय चितावने नव लोकात्तक देव । आयजिने-
 सर की करी जेनदा कहि सेव ॥

अथ श्री पारसनाथ दिक्षा कल्याणक ॥

तत्र जिनवर संसार तजि दीने वरसीदान । धन पूरन एहमी करी
 अर्थी रह्यो न आन ॥ पुनि एकादस पूस वदि दुपहर दिन तजि
 राग । दिव्य पालकी चढ़ि पहारि भूपन बसन सभाग ॥ चौसठ
 इन्द्रन आदि दै विबुध विविध को भौर । नर नारी सब नगरके
 संगचले धरि धीर ॥ पुरी बजारस बीच हवै निकसि विपिन घन
 पाय । उतरि अजोक सुतरु तरें दीनों सोक मिटाय ॥ चौविहार
 उपवास हँ सकल सिंगार उतार । पाय विसाखा जोग ससि
 तजि सब सुख संसार ॥ सहित अहित वर तीनसै उत्तम राज-
 कुमार । देवदूष पटयुत लियो चारित पद निरधार ॥ रहे फेर
 छदमस्त दिन रैन असी अरु तीन । देव मनुष पशु कृत सहे अति
 उपसर्ग नवीन ॥ दिच्छाकै दिन दूसरै कियो विहार अहार ।
 पंचद्रव्य वरषा करी देवन महिमा भार ॥ पुनि जिन देस कलिङ्ग

हस्त धातुतर तर समाधि लगाय ॥ प्रायो देव ॥

वह राज प्रदच्छ । इन जिनके कोड़े भये वनवर आठ सु ॥
 शुभ अरु घांप वक्तिठ पुनि बहावारी करु लीन । बीरभद्र शंभु
 सुजस वनधर आठ अजीन ॥ साध नन्ददा सुभ तहां सोलहस-
 हस वखान । सहस आठ जुत लीन अब सुभसलायवो मान ॥
 एक लाख चांसठ सहस जिनजन श्रावक जान । तीनलाख सुभ
 श्राविका सहस अठावन मान ॥ पंचालत सत सातयुत चौदह
 परब जान । अबधिग्यन ज्ञानी गने चौदह सै सुज्ञान ॥
 केवलग्यानी सहस इक छसै बड़कीवान । साध सुक्तिगामी
 सहसदूनी साधवी जान ॥ विपुल सुमतिधर आठसै बादीछसै
 सुजान । सर्वारथ सिधिजे गये वारहसै ते मान ॥ दुहुं विधि
 भूमी अन्तकृत इक जुगा-लकृत होय । दूजी है परयान्तकृत
 प्रथम कही सब सोय ॥ तीस वरस ग्रह वास दिन त्रासी निस
 छेदमस्त । कछुकम सत्तर वरस कुल केवल श्यान समस्त ॥
 सरव आयु सौवरस की पूरन करि जिन जान । लखोपरमपद
 मोख को सोअब कहौनिदान ॥

अथ श्रीपारतनाथ मोक्ष कल्याणक ॥

तिथि सावन सुदि अष्टमी निसि निसीथ जिन नाथ । परवत
 तिषर समेत पर तेइस साधन साथ ॥ नखत विसाखा जोग
 ससिचौविहारवृत्तसाध ॥ काउसभगतप लय लखेपायोमुक्तिअवाधा ॥

अथश्री नेमनाथ अधिकार ॥

अब वरनां श्रीनेम के पांचौ वर कल्याण । चवन जनन चारित्र
 अरु परम श्यान निरवान ॥ इन पांचौं कल्याण को जब जब
 भयो सजोग । तबतत्र चित्रा नखतही जाहिं भयो ससि जोग ॥

अथ चवन कल्याणक ॥

कातिक वदि वारस सुतिथ नेमनाथ अरिहन्त । सुरसंबंधी
 आयु तिथ तजि सो जिथ जयवन्त ॥ सहुद विजय धादव नृपति

सौरी पुरके मांह । सिवादेवि ता नृपतिकी रानी अति छविछांह ॥
निस्सि निसीप में चवि क्रियो गर्भ मांहिं तिनवास । क्रमक्रम करि
वीते जबे गर्भ सवानव मास ॥ सुपनादिक जैसे प्रथम जिनज-
ननी जे पाय । वरनि बखाने ते सकल त्योंहीं भये सहाय ॥

अथ श्रीनेमनाथ जन्म कल्याणक ॥

सावन सुदि तिथि पंचमी सिवादेवि के कूप । जिन जन्मे श्रीने-
म प्रभु सुन्दर सगुन अद्वूप ॥ छप्यनदिमा कुमारि अरु चोसठ
इन्द्रन आय । त्योंहीं गङ्गल मोद मय क्रियो महोच्छो चाय ॥
सपुद विजय जयवन्त हूं मोद उल्लाह बढाय । सिद्धारथ नृप
लो क्रियो जनम महोच्छो चाय ॥ एक रागग जिन जोर की
गदिमा सरपति गेह । होत सुनीयूर पठ तिनकरी परिच्छा
एह ॥ त्रिनि जिन पोते पालने प्राग अंक भरि ताम् । सवाल्ला-
ग संजम उठयो लंनो चढयो अकाग ॥ जानित्जान जिन ग्यान
प्रथमक करि मार्गसृष्ट । गौ जोजन घरमें धर्यो त्रय्योदेव सो
नृप नृपति आन छुगय तिहिं पासन पारि ग्विमाय । ले अय-
न मरुदु गयो भयो मांद मे नाय ॥ सपुद विजय जिनके पिता
सोरीपुर देगाय । अग्रगल गभृगनृपति तिनके गोती भाय ॥ तिन
इकदिन उठवाययो ग्याव्यो पारन हेतान्योति भूलिवेरीक्रियोसो
सन्दिन जिनके गर्भवाम बसि मानकी प्रकृत दुष्टकरिदीनागर्भ
जन्म नृपतिपति मन अति भये मलीना ॥ हृपि सुतहि संदूपमें
सुदि संदुरहाय । दे वदुना जल बोरि तिहिं दीनामथुरानाथ ॥
सोदिसो दी तगरमें पाईवतकमुभद् । खोलिदेविमुन्दर सुअन
गति वावको छद् ॥ सो सोप्यो वसुदेव को उग्रसेन सुतकंस ।
नारद विनाय लप को वदुन सो वदुदेव प्रसंस ॥ राजग्रहीनगरी
वहां तन तिहिं काल बटुप । जगवध यादोप्रवल तानगरीको
भृप ॥ सोशब्दवति प्रति सहित वासुदेव पदपाय । भयोसु-
प्रबल प्रताप जुद नव यादव नो राय ॥ जीवजसा ताकी सुता

वृद्धि गुण रूप प्रसन्न । व्याहि दंडं ताकों पिताउग्रमेन सुतकंस॥
 व्याहि ताहि तिन पायबल करि निज वायहि बन्द । यथुरापति
 पिनु राज पर वेठि भयो स्वच्छन्द ॥ तिन देवकन्दपकी सुता नाम
 देवकी जामु । व्याहिदई वसुदेवको अति हित चितकरि ता-
 सु ॥ लघु भ्राता इक कंसको अइसलौ इहि नाम । तजि ग्रहवा-
 स अवास सुख भयो साध अभिराम ॥ तिन इकदिन निज
 ग्यान करि होन हर की जान । जीवजसा भाभी निकट
 कही बात यह आन ॥ गर्भ देवकी बहिनको होय सातवों जो-
 य । सो तेरे भरतारको नारनहारी होय ॥ यह सुनि उनपति
 पास चलि विथा सुनाई जाय । सुनि सचित हूँ कंस तब लै
 वसुदेव बुलाय ॥ बंदि बचन कहि कपटके वाचा लेंदैं साखि ।
 सात गरभ तुम आपने देहु हमें यहभाखि ॥ सत्य संधि वसु-
 देव तहं बचनबंध कैं नाठ । दए गर्भ सातों नहीं दई बचन
 को पीठ ॥ जबजद प्रसवी देवकी तदतव लेंसो गर्भ । सिला
 पटकि नारे सकल एक भांति छल अर्भ ॥ भयो सातवेंगर्भ कैं
 जब श्रीकृष्ण निवास । सुपन सात लखिदेवकी पूरीआसाथास॥
 सिंहसूर ससि अगिन गजधुज विमानविख्यात । वासुदेव माता
 लखत एई सुपने सात ॥ गर्भकाल पूरन भयो भादों बदि बुध
 वार । तिथि आठें अघरात को लियो कृष्णअवतार ॥ सोइ गये
 सब पाहरू खुलि गये सकल कियार । कृष्णहि लै वसुदेव
 तवउतरे यमुना पार ॥ नन्द गोप घर तासुकी घरनि ज-
 सोदा नाम । जननी पुत्री तिहि समै ताके अति अभिराम ॥
 पहुंचतहां वसुदेव धरि सुतलै सुता उठाय । फिरे उतरि इहिवार
 पुनि निज घर पहुंचे आय ॥ भौर भये पहरू जगे नृपतिसुनाई
 जाय । नृप सुनि त्योंहीं सोसुता लीनी दुरत भगाय ॥ देखि
 सुता ताके तवै छेदे नाकरू कान । भयो कस सुदवन्त अति हूँ
 निहिचिन्त निदान ॥ वासुदेवश्रीकृष्ण अवनन्दसदन केमांझ ।

नवससि लैं नितनित निपट वड़न लगे दिन सांग ॥
 बालचरित अद्भुत करत हरत मात पित चित्त । लखि ह्य हि-
 यो सिरात अति वारत तन मन वित्त ॥ इक दिन इक सरवग्य
 को पूछ्यो कंस सुचाहि । कहि कोमेरो शत्रुहै जातं मुहिभय
 आय ॥ उन भाखी खरमेख अहू केसी वृगभ अरिष्ट । जो इन
 सब को मारिहै मारै तोहि सपष्ट ॥ सुनि नृप त्योहीं तुरत तेड
 इकइक दये घठाय । तेसवगारे सहजही बालचरित यदुराय ॥
 जानि कंस जिष संस बढ़ि भयो सोच गय सोध । अनहोनी
 होनी नहीं होनी होयसो होथ ॥ बहन सुभद्रा कंस की ताको
 रच्यो विवाह । दिस दिस तैं आये नृपति जानि स्वयम्बर
 चाहि ॥ सुनि सुदमय श्रीकृष्णहूँ मथुराचलेउताल । जद्यपिबलि
 दग्जे विप्लव रहे नाहिं नादलाल ॥ चलत बाट काली उरग
 नाथो प्राण मजगारि । युष्टिनादि चानर सबमारे गल्लपछारि ॥
 पति यो गीत प्रजापितो मार्यो रंपति कंस । रातभामा ताकी
 मना क्योती करप्रमद ॥ बंधु तीनमे नामवध सोरह बरसी
 मेरुग । तदि तव गुणदत्तान दसपति अति अभिराम ॥ सब
 भवत तिलिवा ततं बाट पिठामे म्याग । तैं सबसेवा धर्मपर
 इतन मने प्रकृत ॥ जीत जमा निय कंसकी तव अति
 सुखहे भाग । ततकाल पितु गेठ दलि गई सहित परिवार ॥
 तदिदिनि निरु नृपति तैं तदुचर्यो करिद्रोथ । कालकुवारन
 जत ततं सुदमिभारत तैसा कर्णो मय उन उचिततहि कष्टकरहु
 नो ॥ तत विपु मने मने मय ॥ प्रकृतअसुरा तयो कहि आपसु
 जये मने मने मने मय । तैं प्रुदहित सहैये बहुकुल देवि
 तित ॥ ततकाल तदिदिने मने सः लज्जरिछार । मथुरातनि
 बहुकुल नो संगठ येन बजार ततहां वताई क्षारिका धनद
 कस भवतत । कतक रचित यनिमानसई भई सुपूरी वरिष्ट ॥
 ततं दये मने मने श्री जदुना मने । तहसम्पति सतत

संतत वादी जादव भार ॥ रतन वंदलनकी तहां व्योपारि इक
आय । वेच कछुक कछु लेगयो राजग्रह में लाय ॥ वेचन लाग्यो
लखिलयो जीव जसा ललचाय । मोल पूछि विसमितभई
संवालाख सुनि भाय ॥ उन जो वेचै द्वारिका सो सबकही सु-
नाय । सुनिपूरव दुख जगि उद्योपितुसों कह्यो दुखाय ॥ सोपितु
सब भटकटकले गजरथ तुरंग पदात । अमित फौजकी मौजसों
कोपिचढ्यो विख्यात ॥ उनहूं तें श्रीकृष्णसुनि जदु कुल कटक
समेत । चढ़ि पहुंचे मिलि परसपर रच्यो मच्यो नर खेत ॥ सैन
रेनु द्वै एक तहं भुव उड़ि नभ करि वास । आप छौनि कह
रहि गई काने आठ अकास ॥ किधौ सैनखुर रैनु उड़ि भई
द्योस की रैन । कृष्णचंद्र मुखचंद्र तहं मनिगन उड़गनऐन ॥
किधौ घूरि धूंधर घने घन घुमड़े चहुंवोर । असि लरजन
तरजन तड़ित गज गरजन घन घोर ॥ सरसपरसपर वान वर
वरसन अमित अपार । सोअखण्ड जलधार की झरी भरीभय
भार ॥ स्रोनिता सरिता कड़ि बड़ीसर भरि उमाड़ि अपार । रुण्ड
बुण्ड मण्डितरुधिर जल जलचर अनुहार ॥ प्रवल वली वलि
वीर लखि जरातन्धि करि क्रोध । जरानामे विद्याप्रवल प्रेरित
करी प्रबोध ॥ सो विद्या कारनभई रुधिर वमन कैहेत । कृष्ण
अनीक अनेकजनजादवभये चचेत ॥ नेमनिदेशित कृष्णातवअष्टम
तप आराधि । इतिमा पाय महेन्द्रतैं तिहिं प्रह्वाल जलसाधि ॥
लेखन करि सेना सकल लीनी मरतजिवच । अतिउच्छाह करि
कृष्ण तव दीनों सह्य वजाय ॥ तहांसह्य तीरथभयोप्रतिमा थापी
सोय । फेरपररुपर युद्धहित सजिसन्मुख हूँ दोय ॥ चक्र चलायो
जोर करि जरातन्धिहरि ओर । कृष्णवचायसुताहिफिरि अरि
मारयोद्वरजोर ॥ चारि कोटि जहु नृपसहस वत्तिसमहलसमेत ।
महाराजश्रीकृष्णयोवसे द्वारिका खेत ॥ एकसमैजिनअतुलवल
चरचःसुरपतिलोक । चलीपलीसुर एकसुनिदईपरिच्छाज्ञोक ॥

वायुयोगिर् गिरनार द्विगमुर धारापुर एक । करनलग्ग्यो सोवसि
 तहांअति उत्तपात अनेक ॥ द्वारवती के द्वारतैनिकसि बाहरें जाया
 जाय ताहि राखै पकरि जकरिदेवता सोय ॥ एक समें बलभद्र
 अरु कृष्णहि राखे घेरा मच्यो कुलाहल नगर में वगर वगरभय
 हेर ॥ तव रुकमिनि श्रीनेम सौंभार्य्यो सनमुख हेर । कहा भयो
 कैमो सुन्यो कौन करत यहजेर ॥ तुमसे पुरुख अनंत बल छतें
 उपद्रव एह । होय बडो अचरज यहै छुटें न मन संदेह ॥ सुनि
 श्रीजिन रथ चढि चले पहुचि नगर गढतोरि । जुटे जुळ तादेव
 के सनमुख आयुध जोरि । अनिल अनल जल प्रबल सर दुहूं
 ओर तेंछोरि । अनमोहसर मारिकें सुरमोह्यो वरजोर ॥ सुरपति
 आय पिपाय तत्र पाय पारि सो देव । विदा भयो सो विवृधवर
 विविध भांत करि सेव ॥ तव श्रीजिन भगवंतवर नेमनाथअरि
 सं । भयें नीनिमें नगरके क्रमक्रम बढ़िभगवंतातऊन तिककेजीय
 में उच्यत व्याहनकाज । गातपिता करि सोच तव अति विनये
 निगन ॥ गत भामा अरु रुकमिनी तिनहूं निपटनिहोरि ।
 हुंन विनगी कर्ता तामु सगारं जोरि ॥ सावनसुदिछठ सुभ
 कजत रंनकरें ठक राय । चढी जान जादोंमर्द मथुग पहुंचीजाय
 गावन वाजन मान सब कूलवाग वर ग्याल । कल कोतक
 नदनद्वय नद चटकीले छविजाल ॥ तामवास वामे अतर भूपण
 रनिजत नार । नजन मरुदन संगले उग्रमेत के वार ॥ तहं
 वेने मनु केरि के सारथि पूछयेतेम । बोल्यो वह तुम व्याहके
 गोरदहित दहनन ॥ गोरव हित पगुपुंजके घात तहां जिनहेर
 निदर हिस मतिरि निव दया आनि मति फेर ॥ मनिभूपण
 एतुवाकके देसव प्रुहि छुड़ाय । तोरन हांतें फिर फिरें सब
 आरम पिटाय ॥ मोद मई गंजीगती गांप चढी यह देप । खाय
 पट्टार जहीगिरी लहि मूरछा विसेप ॥ अलिन आयकरि बीज-
 न लिखि गुन्याव नगाय । करि सचेत अपकेतकी दई आगि

भङ्काय ॥ विरह विधा वाड़ी विपुल वितन वान विपत्राय । रोम
 रोम सब रमिगई रोय रोय विललाय ॥ नीरहीन जिमि मीन
 अति दीन छीन विललात । तलफि तलफि विलपति विपुल
 नेमप्रेम उतपात ॥ तजिभूपण दूपण दये चीरे चीर अधीर ।
 छट पटात लोचत लटनि हिये अटत नहिपीर । अलिअबली
 चहुंओर तें अलि अम्बुज केभाय । घरिसमुझावत कुअरि कौ
 क्यौं ऐसे अकुलाय ॥ अज्यौं अरंभन व्याह कौ ववारीकंधा
 तोहि । कहाइतो दुख दूसरौ दूलहलावें जोहि ॥ यहसुनिधुनि
 सिर फिरि कह्यो ऐसेफेरन भाखि । मनवचक्रम मोपतिवहैइहि
 भव रवि ससि साखि ॥ जो उन छाड़ी मोहि तौ छाडैंकहा
 विचार । हां नहिं तिनको छाड़िहैं मनवचक्रम निरधार ॥ उत
 श्रीनेम उदासह ज्यो पहुंचे निज गेह । नव लोकान्तक देवता
 दिच्छा समयो जेह ॥ आये ताहि चितावने मधुर वचनकरि
 सोय । कहन लगे कल्यान मय जयजयवत्ता होय ॥ सुनत
 सुमिरसमयोतुरत कीनै बरसीदानामुव ऊरिन पूरनकरी भरी
 सकक धन धान ॥

अथ श्रीनेमनाथस्वामी दिक्षाकल्याणक ॥

सावन सुदि छठ तिथि सुदिन दुपहर चढ़ि सुखपाल ।
 चांसठ सुरपति सुर सकल सहित जिनेस दयाल ॥ पुरी द्वारिक
 बीचकै निकसि बाहरैआय । पहुंचे गिरिगिरनार ये रेवत टूक
 हिंपाय ॥ निकट घनी अंबराइ तहं तरु असोक तर आय । उत
 रि तहां सुखपाल तें ससि चित्रा में पाय ॥ भूषन वसन उतारि
 सब पंच मुष्टि करि लोच । चौविहार उपवास द्वै करि धरि
 आतम सोच ॥ देवदूपपट राखि इक छांडि सकल ग्रह साज ।
 राजकुमार सहस्र संग लिय चारित जिनराज ॥

अथ श्रीनेमनाथ स्वामी ग्यानकल्याणक ॥

चवन निसि चारित्र पद पालि पचपनी रात ॥ आसिन्न

चरि मावनभए निसि निमीथ विख्यांत ॥ वरगिरनार पहार
 पर वंत वृक्षतर आय । चित्रा ससि उपवास है चौविहार
 करिचाय ॥ परम ग्यान कल्यान में पायो केवल ग्यान । चौदह
 राज समान जन जन परनामहिं जान ॥ राजमती हूं आय तह
 दिच्छालै जिनहाथ । तजिसंसार असार सब वृत लै भई सनाथ ॥
 तव पछ्यो श्रोकृष्ण यह एकओरकोप्रेम । कैसो सो भाखनलगे
 श्रीजिननायक नेन ॥ आठजनमको प्रीतयह अब क्योंकूटे भ्राता
 देवलोकमें चारि भव चारि और सुनि वात ॥ नृप धनभूत रु
 धनवती प्रिय मति अपराजीत । सह्य यशोमति चित्रगति रत्न
 वती समप्रीत ॥ नौमे भव राजीमती नेम नाथ के साथ । जनम
 जनम को बन्ध क्यों छुटे छुटाये हाथ ॥ अब इनको परिवार
 गन गनधर गच्छ अठार । सहस अठ रह साधु की सम्पति
 करि निग्धार ॥ चारिम सहस सुसाधवी वरश्रावक इकलाख
 नापर उनहनर सहस अब श्रावक तिय भाप ॥ तीनलाख
 उनर महम वनिग गनती जान । चौदह परव धरि कहे ते
 नौचारि वग्वन ॥ पन्द्रहमें ग्यानी अवधितिले बइकोधार ।
 महम विपुलमति मातमें वादी बड़े विचार ॥ देह सहस वर
 साधु अरु शुभमाधवी में तीन । जिन कर दिच्छा पायके
 भये मुक्तपद लीन ॥ दुहुं अन्तकृत भूमि ले डक युगान्तकृत
 जान । अरु वृजी परिवान्तकृत नेमनाथ परिमान ॥ आउमान
 जिननाथ को अब सब कों वग्वान । वरम तीनसे नेमजिन रहे
 कुमार मुजान ॥ छुटिन उन हें नाम पुनि रहेनाथ छदंमरत ।
 वरम मातमें तिनमहित केवल ग्यान जमस्त ॥

अथ श्रीनेमनाथ मोक्ष कल्याणक ॥

वरम नहन सब आउ के पूजन करिजिनराय । तिथि असा-
 द्मृदि अष्टमी चित्रानुन ननि पाय ॥ मध्यरात गिरनारपर
 उद्यं तक गिरटुक । चौविहार उपवास जुत धरिसुभ ध्यान

अचूक ॥ युक्त पधारे नेमप्रभृतदनन्तर तहं जान । सहस्रयज्ञी
अरु चार पर महावीर निरवान ॥ सहस्र पचासी वरस पर
नवसें वरस वित्तीत । और असी बीते लिख्यो कल्पसूत्र करि
प्रीत ॥ नेम चरित पूरन भयो छठे वाचना मूल । होहु सकल
कल्याणजुत जिनजन मन अनुकूल ॥

अथ सातवीं वाचना ॥

चौबिस तीरथ नाथ केमुक्तान्तर को काल । सोवरनों संछेप
करि परम पुन्य को जाल । अरु तिन जिन चौबीस केतातनातको
नाउं ॥ चिन्हकाय मित तनवरनउमरजनम धितगाउं ॥ धित
पांचौ कल्याण की युक्त धान कुल गोत । चबेजासु सुरलोकतें
ताकों नांव सजोत ॥ साध साधवी सकल अरु गनधर देवी ज-
च्छ । चौबीसों जिननाथ के कहीं प्रथम परतच्छ ॥ नेमनाथ
मुनि सुवृत्तको कुल जटुकुल हरिवंस । गोतमगोतसजोतयेप्रगटे
कुल अब तंस अरु सबको इदवाक कुलकश्यप गोती जान
युक्तधान जिन बीसको सिपर समंत बखान ॥ शेषचारिके मुक्ति
थल प्रथक प्रथक सुनि सार । महावीर पावा पुरी नेमनाथ
गिरनार ॥ वास पूज चम्पापुरी अष्टापदगुभयान । आदि जि-
नेसर सार वर रिपभ देव निरवान ॥ अब सबको संछेप क
रि सुनिये सब विस्तार । वरन चिन्ह परिवार वपु धित थल
अन्तर सार ॥ तहां प्रथम वरनों विदित महावीर अधिकार ।
परम पुनीत प्रताप जुत आगम मत अनुतार ॥

अथ महावीरअन्तराला ॥

धरम तिथंकरह्वाभिवर महावीरभगवान । वर्द्धमानजिनसोंक
ह्यो त्रिसला मात निदान ॥ सिद्धारथ जिनके पिता हाथ सात
नितिकाय । सुवरन वरन बखान तन लभय सिंह सुनाय ॥
वरस वहत्तर आउ धित तजिके विजय विमान । खत्रिकुराड
चवि औतरे कश्यपगोत निधान ॥ चवन लाढ़ सित छठ आसित

श्री साधवी सार । जैन धरम के सरम करि कहि चालीस हजार ॥ देवी जिनकी अन्विका गोमेध कहै जच्छ । स्थारह गनधरनेके आगम कहे प्रतच्छ ॥

अथ श्री नमिनाथ अन्तराला ॥

श्रीनमिको जिननेमते प्रथम परमनिरवानः पांचलापूरो कह्यो वरआगम परमाना ॥ विजयतात नमिनाथके विह्वलना जाना ॥ मल लछन पद्मह धनुष काया शान बवाना ॥ इनक वरन दस सहस थित सर्वारथ सिधि थान । तजिकें सुभ सिधियापु री चारि अंतरे मुजाना ॥ अग्नि पूष्यो चव जनम सावन आठे प्रमना ॥ शुभ असाढ़ नवमी अस्तितचारित दिन अशिराना ॥ अगहनमित एकदली भये ज्ञान आधार । लह्यो सोखनेलाखयदिदनामी त्रिखरमजार । बीस सहस नमिनाथके साथ साधवी फेर । गिनती इकतालिस सहस जयनागम विधिहेर ॥ पगघाडे देवीकही जिनके भृगुटी जच्छ । गनधर श्रीनमिनाथके सतरह कहेप्रतच्छ ॥

अथ श्री मुनिसुब्रतस्वामी अन्तराला ॥

श्रीजिनवर नमि तें प्रथम मुनि सुब्रत निरवान । वर आगम अनुमित कह्यो छहलख पूरौ जान ॥ तत सुनित्र सुब्रतके पद्मा वती सुमाय । कच्छप लक्षण स्थाम तन बीस धनुष की काय ॥ तीससहस वर उमर तजि शान तजो सुरलोक । राजगृही हरि वंस कुलचदि जनयें अनशोक ॥ सावन सुदि पूष्यो चवत जनम जेठ वदि आठ । फागुनकी द्वै द्वादसी सितासिता क्रम पाठ ॥ चारित श्यानरु जेठ वदि नौमीपायो सोय । कोनीं सिखर सभेत पर भवभय तजि संतोख ॥ जानौ मुनि मुनिसुब्रतके तीस सहस विस्तारासहस पद्मासै साधवीयहै जैनमत सारा ॥ नरदत्तादेवीकहीवरुननामजहजच्छागनधर श्रीमुनिसुब्रतके अहारहपरतच्छ ॥

अथ श्रीमल्लिनाथ अन्तराला ॥

तिनहूं तें पहिलैमुकति मल्लिनाथ कीजानाताकीमितिआगम

भक्ति चउवन लाख बखान ॥ मल्लिनाथ पितु कुंपन्तुप प्रभा-
वती तिहिमाय । हरित वरग लच्छन कलस धनु पचीस मिति
काय ॥ वरस सहस पचपन सुधिततजि अपराजित लोक ।
मिथिला पुर चविऔतरे कुल इक्ष्वाक असोक ॥ चवन चौथसित
फानुनी जनमचारितरु ग्यान । अगहन सित एकादसी ए तीनों
कल्याण ॥ फागुन सितवारस वहुर सिपर समेत सुखेत । लह्यो
परम निर्वान पद आतमतत्व समेत ॥ मल्लिनाथके साध सत्र
कहे सहस चालीस । पचपन सहस सुसाधवी जानि लेहु बुधि
हंस ॥ धरनप्रया देवीजहां कहि कुबेर वर जच्छ । मल्लिनाथ
गनधर कहे अट्टाईस परतच्छ ॥

अथ श्री अरहनाथ अन्तराला ॥

नवलख कम इक कोटि मिति वरसप्रथम परवान । मल्लिनाथ
नें मुक्तिवर अरहनाथ कीजान ॥ अरहनाथ की माय श्री देवि
अर्जनाजान । पिता सुंदरसनचिन्हजिहिं नन्दावर्त बखान ॥ कनक
रंगधनु तीस वपु चौरासी सहसाय । छांडि जयंत विमान
निधि नजपुर प्रगटे आय ॥ चवि फागुन सित दूजसित कार्तिक
वारम ग्यान । अगहन सुकला दसमि को जनम और निरवान ॥
ग्याम अगहन नुकलदोतज्यो गृहस्थावास । सिपरसमेतीमुकत
थन कुल इक्ष्वाकी तास ॥ अरहनाथ के साधु सुभ कहे पचास
हजार । नाठ नहम जिहिं साधवी जैनागम अनुसार ॥ वरनी
देवी धारनी जधराज जहं जच्छ । अरहनाथ जिननाथ के गन
धरतीन प्रतच्छ ॥

अथ श्री कुंभनाथ अन्तराला ॥

अरहनाथ ते प्रथम श्री कुंभनाथनिर्वान । लप इक्ष्यानवे वर
कम पाव पत्य में जान ॥ पत्योपम सागर प्रमित पहिले कहे
बखान । आगन के अधिकार में काल मान परवान ॥ श्रीम
कांता मानके कुंभनाथ सुत जान । सूरसेन जिनके पिता छा

चिन्ह पहिचान ॥ पैंतिम धनु कंचन वरन तन हजार सत गांठ ।
 पांच सहस्र कम आउयित छांडि सर्वसिध छांह ॥ हस्तनपुरचावि
 ओतरे कुल इक्ष्वाक सन्नार । मायन कृष्णा नवमि तिथ चवन
 तानुनिग्धारा पहिली वदि वेंसाप की पंचमचौदस फेगक्रमकरि
 मोप वपान अरु दिच्छा जनम सुहेर ॥ न्यानचेत सुदि तीजकों
 पायो केवल जान । पांचो तिथ कल्याणकी येडं जान सुजान ॥
 साठ सहस्र मुनि कुंथके और साधवो सार । जानो साडे तीनसे
 साठरु पांच हजार ॥ वालादेवी भाषिये अरुगंधर्व सुजच्छ ।
 कुंथनाथ गनधर कहे सुभ पैंतीस प्रतच्छ ॥

अथ श्रीशांतनाथ स्वामी अन्तराला ॥

कुंथनाथ तें प्रथम श्री शांतनाथ निरवान । पल्योपम की अर्द्ध
 मिति ताही के परमान ॥ विश्वसेन जिनके पिता अचिरा मात
 वखान । रूग लंछन चालीस धनु कनक काय पहिचान ॥ लाख
 वरस थित आउ की तजि सर्वारथ सिद्ध । हस्तनपुर चविओतरे
 कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ असित लक्ष्मी भादवी चवन जेठ वदि
 फेर । तेरस जनम वखान सुनि मोपो तामेहेर ॥ जेठ वदीचौदस
 लियो चारिततापरदानाभयोपोससुदिनवमिकोजासुसिपर निर
 वान ॥ शांत साध वासठ सहस्र और साधवो सार । इकसठसहस्र
 रुदोयतै जेनागम अनुसार ॥ वानी देवी जासुकी गरुड नामवर
 जच्छ । शांतनाथ गनधर कहे तीसरु छह परतच्छ ॥

अथ श्रीधर्मनाथस्वामी अन्तराला ॥

शांतनाथ तें प्रथम श्री धर्मनाथ निरवान । पौन पल्य मिति
 उनकरि सागर तीन वखान ॥ धर्मनाथ श्री भानु पितु जासु सु-
 वृत्तामाय । वज्र चिन्ह कंचन वरन पैंतालिस धनु काय ॥ आउ
 वरस दसलाख थित तजि सर्वारथ सिद्ध । रतनपुरी चविओतरे
 कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ सित सातें वेंसाख चवि जनम साध सुदि
 तीज । ताही की तेरस रहे सुभ चारित रसभीज ॥ केवल पूयो

प्रेम मित जेठी पंचम सोख । सुभ समेत गिरि सिखर पे पायो
 गम संतोख ॥ धर्मसाय चौंसठ सहस और साधवी सार । वा-
 मठमहस रुचारिसे जेनागम निरधार ॥ जहं देवी कन्दर्पिणी
 कहिये किमर जच्छ । गनधर जा मुन खानियेतेंताळीस गतच्छ ॥

अथ श्री अनन्तनाथ अन्तराला ॥

धर्म नाथेंतें प्रथम पुनि जिन अनन्त भगवान् । मुक्तिमान
 जिनको कह्यो सागर चरितवसान ॥ गिबसेन जिनकेपिता मुनना
 जिनकी साय । निह सिधानरु कनक तन धनु पचार गिनि
 साय ॥ तीस लाख तरसो उमर लोक सोलहों त्याग । अवधि
 वंस इन्वाक में चविऔतरे सभाग ॥ असितासातेंमाननीयवन
 वकी नैमान । तेरस चौदसरु मे तीनों क्रम साख ॥ प्रथमजनम
 निहा नहर तीजे केवल ग्यान । बहुर चेत मित पंचमी सिखर
 मुयल निरवान् मुनिअनन्त क्हासठ महस और साधवी सार ।
 वमठ महस रुचारिसे जेनागम निरधार ॥ जिनकी देवीचाकुशा
 पावाला विदिं जच्छ । गनधर नाथ अन्तके कहेपवामजतच्छ ॥

अथ श्री विमल नाथ अन्तराला

जिन अनन्तेंतें विमल जिन मुक्तधर परमान । नव रागर
 पुनेक्यो लेह मुजानि मुजाना विमलपिताकृतधर्म अह ग्यासा
 जिनकी साय । वमठ वरुधुकर लछत काठ धनु नितिक्राय
 अ मुनाठला वमठ दस लाख वारहों त्याग । वंपिलपुर अव
 नार ले दने लोक म तन ॥ दारस रित वेसाख चविषोसपुकी
 छठवाह । तीजे चौप मिन साय की जनमरु चारित जान ॥
 पुनि अमाठनाते अमित ध्यायपादनुखध्यान । सुभगिरि सिखर
 समेत पर पायो प्रद निरवाना विमल साध अडसठ सहस और
 साधवीसार । एक लाख परी कही जेनागम अनुसार ॥ विदिता
 देवीदरनिसे पतमुव जिनके जच्छ । विमलनाथ गनधर विमल
 कहिपचपन परच्छ ॥

अथ श्रीवानपूजयानी अंतराला ॥

विमलनाथ तं प्रथम जिन वानपूज निरवान । अतर दोनों
 लुकर को नागर तीस वनवान ॥ वानपूज वनुपूजि पितु जया
 माय रङ्गलाल । धनु सत्तर तन थित वरन लाख बहनर काय ॥
 महिष चिन्ह चंपा पुगी छांडिदसम सुरलोक । जेठ सुकल नौनी
 चवे हरे जनन के सोक ॥ फागुन वदिचौदस जनम नावसदिच्छा
 तोप । ज्ञान नाथ सुदि दूज सित साडी चौदस मोप ॥ चंपापुर
 में साध सुभ सत्तर दोय हजार । तीनसहस अरु एकलख सुभग
 साधबीसार ॥ चन्द्रा देवी वरनिये अरु कुमारजहं जच्छ । वास
 पूज गनधर कहे वर छासठ परतच्छ ॥

अथ श्रीश्रेयांस अंतराला ॥

वासपूज तं प्रथम पुनि जिन श्रेयांस सुजान । नुकात्तर इन
 दुहु र को चौबदनसागर जान ॥ विष्णुसेन जिनके पिता विष्णो
 जिनकी माय । खडंग चिन्ह कंचन वरन अरुसी धनु की काय ॥
 चौरासीलख वरस थित तजि सुरगांतकलोक । सिंघपुरी चवि
 औतरे कीने लोक असोक ॥ जेठ वदी दूठ चव जनम असिता
 वारसफागाताही की तेरस तहांचारितलह्योसभागा ॥ माघी माव
 सग्यानवदि तीज सावनीमोप । सत्तर समेतहि में भयो जनम
 करनसंतोप ॥ कहे साध श्रेयांसके अरुसीचारहजार । छहहजार
 डकलख कहीसुभगसाधवी सार ॥ वरनी देवी मानवी जच्छ
 राजजहं जच्छ । सतहत्तर गनधर कहे जिनश्रेयांस प्रतच्छ ॥

अथ श्री सीतलनाथ अंतराला ॥

अव श्रेयांसजिनसतें श्रीसीतल निरवान । घटबंद करि संख्या
 कहीं सो सुनिलेहुतुजान ॥ छासठरूप छविस्सहसतीस वरस
 वसुनास । पद्महादन गनि जोरि सब दससागरमें तासु ॥ सब
 संख्या यह ऊन करि सागरकोटि मझार । सो सीतल श्रेयांसको
 मुक्तयन्तर निरधार ॥ सीतल के दृढ़रथ पिता नन्दाजिनकीमाया

श्रीवत्सी लंछन कनकतन धनुनव्येकाय ॥ एकलाख पूरव उमर
 तनिपुरगंत रु लोके । भइलपुर चवि औरतेहरे जननके सोके ॥
 चवन वदी वैसागलठ जनपकचारित दोष । जाप्रवदी वारसाहि
 को सुविध एरुही नोष ॥ नोषा प्रथिमा पो गली रु ज वदी वै-
 साग ॥ नव नवैर निरवान जह का कर्परा नो सा ॥ एक-उख
 पूरे वहे सुविध ना । नुठारा कहिये जिनके साधवी उरुकास
 वैसहजार ॥ कजी नसाका देति जहं जहा । जिन ह जच्छ । श्री
 सुविध गननर कहे इअसासी परतच्छ ॥

तय प्रेसुतनाथरुवागी अंतगला ॥

जिनगी एक निरवानेते प्रथम सुविधि निरवान । कहि सागर
 नोषा प्रथिमा नग आगम परमान ॥ सुविधि नाव सुविधि अरु
 साधवी नोषा ॥ सागर विहारी । नरनतन मो धनु उजो
 नोषा ॥ नोषा पुन जखिन तजि प्रानव सुग्लोक । काकवदी
 चवि और ते मरुत जा गोक ॥ फागुन वदि नोषी चवन
 नोषा साधवी प्रोताप्रत तजि अगधन । उठ वदी लीनो दिक्ष्या
 नोषा । काविक सुठया तीज सुविधि नोषी भादवमास । ग्यान
 नोषा निरवान पर पाया क्रम करि तामु ॥ लावदायपुनि सुविधि
 के और साधवी साग । तीनत्याय पूर्ण कही जेनागम अनुहार ॥
 देवीकरी मता रिका अजित नाम जहं जच्छ । सुविधिनाथ गन-
 नरकहे अट्टासी परतच्छ ॥

चव श्रीवत्सी प्रनु अंतगला ॥

सुविधिनाथकी कुकिते बदा प्रभूनिगवान । सागर नव्वेकोटि
 कहे सुकयवर परमान ॥ सहामेत जिनके पिता और लछमना
 साय । समि लंछननितवरन अरुधनु रुडे मेकाय ॥ दमलपूरव
 आठ वित तजि जवन्त सुग्लोक । पुगे चन्देरी औरते हरेजनन
 केनोक ॥ चवन चेतवदि पंचमी पोमवदी के सांह । वारस तेरस
 जनम अरु चारित की क्रमछांह ॥ फागुन अरु भादो वदी असित

सुनसी जोय । ग्यान और निरवान की क्रम करि नियि लोहोय ॥
सहस्र पचासल दोयलप चन्द्राप्रभु के साथ । तीनलाख अरुनी
सहन सुभ साधवी अथाय ॥ लुकुटि दैवि जिनकी कही विजय
नाय वरजच्छ । गनधर कहे तिरायवे चन्द्राप्रभु परतच्छ ॥

अथ श्रीसुपारसनाथस्वामी अंतराला ॥

चंद्राप्रभु को मुक्ति तें प्रथम सुपारसनाथ । सागर नवसैकोटि
सिति मुक्तयन्तरकोसाय । सुप्रतिष्ठ जिनकेपिता प्रध्वीसेनामाय ।
कनक वरन स्वस्तिक लछन द्वे सै धनु की काय ॥ बीसलाप
पूरव उमर पंचश्रीव तजि लोक । पुरीवनारस औरे हरे सकल
जन लोक ॥ भादोंवदि आठ चवन जेठवदीके मांह । बारसतेरस
जनम अरु दिक्षाकी क्रम छांह ॥ छठमातें फायुन वदी ग्यानऔर
निरवान । यथासंख्य कल्पानकी क्रम करि लीजे जान ॥ साध
सुपारसनाथ के तीनलाख सिति जान । तीन सहस्र अरु चारि
लप सुभ साधवी बखान ॥ वरनी देवी शानता अरु मातङ्ग सु-
जच्छ । वर गनधर पंचानवे जिनके परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीपद्मनाथ स्वामी अंतराला ॥

मुक्त सुपारसनाथ तें पद्मनाथ निरवान । नवहजार जेको-
टि मित सागर पहले जान ॥ पद्मपिताश्रीधर कहे और सुसी-
मामाय । अरुन वरन पंकरज लछन धनुडाई तें काय ॥ तीसलाप
पूरव उमर अन्तश्रीव तजि लोक । कौसंबी चवि औरे हरेजन-
नके लोक ॥ नाथवदी छठ चवन अरु कातिक वदिके मांह ।
बारस तेरस जनम अरु दिच्छाकीक्रम छांह ॥ द्वैतीपूथोग्यान
वदि ग्यारसअग्रहन मोद । सुभगिर सिपरसमेत पर कह्योपद्म
जिनतोष ॥ तीस सहस्र अरु तीनलख पद्म साथ निरधार । बीस
सहस्रअरु तीनलप कही साधवीसार ॥ एयानादेवी वरनियेकुस-
ननाम जहं जच्छ । गनधर यद्वजिनैसके इकदससत परतच्छ ॥

माय । हय लंछन कंचनवग्ग धनुष चारिसै काय ॥ नाठ लाख
 पूरव सुथित छांडि आदिग्रोविक । सावसती चवि औतरे गन्धि
 धग्ग की टेक ॥ प्रागुन सित आठे चवन अगहन मित के मांह ।
 चौदन पांचे जनम अरु चाण्ठिकी क्रमछांह ॥ कार्तिकवदि अरु
 चेतसुदि सुतियपंचमीजोय । लह्यो ग्यान निग्वान यह संभव
 क्रमकरिसोय ॥ जिन संभव मुनि दोयलख और साधवी सार ।
 तीनलाख छतिमसहस जेनागमनिरधार ॥ वरदेवी दुरितारिका
 औरत्रिमुखजहंजच्छ । जिनसंभवगनधरकहे पांचरसतपरतच्छ ॥

अथ श्रीअजितनाथ स्वामी अंतराला ॥

संभवते जिन अजितहूँ तिन कों अंतरकाल । कह्यो तितोई
 वीसलख कोटि सागरहाल ॥ अजित तातजितसत्रु अरु विजया
 देवीमाय । कनकरंग गज चिन्ह धनु साठ चारिसै काय ॥ लाख
 वहत्तर पूर्वथित तजिके विजय विमान । पुरी अयोध्या औतरे
 अजितनाथभगवान ॥ तेरस सितवेलाख चव नाघसुडीके मांह ।
 आठे नौजी जनम अरु दिक्षाकी क्रमछांह ॥ ग्यारस सुक्का पोस
 सितचेतपंचमीजोय । लह्योग्यान निरवानपद अजितनाथ जिन
 सोय ॥ अजितनाथ मुनि एकलख और साधवीसार । तीनलाख
 आगम कहे तापर तीस हजार ॥ देवी वाला अजित जहं और
 महाजस जच्छ । अजितनाथ गनधरकहे नव्वे परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामीअंतराला ॥

अजितनाथ तैं प्रथम अब ऋषवदेव जिननाथ । सागरकोटि
 पचासलख लखिलिखि होहुसनाथ ॥ एई प्रथमजिनेसते चौवि-
 स जिनलैं सार । सुक्तयंतर भाखे सकल प्रथक प्रथकविस्तार ॥
 चरमतिथंकर लैं कह्यो जो सबको परमान । प्रतिजिन इक इक
 जोरिके लेहु सुजानि सुजान ॥ ऐसैं जो सब जोरिये अंतरकाल
 निदान । रिषवदेवनुक्तादितेनहावीरनिरवान ॥ कोटिकोटिसागर
 अधिमांह ऊनकरितासु । सहस बयालिस त्रयवरस अरु साढे

... जोरिजों लेहु । कल्पसूत्र
 ... नाभिगज जिनके पिता अरु
 ... पांचसै काय ॥
 ... सिद्धि लोक । छांडि अयोध्या
 ... ॥ पशित गसाढी चौथ चव जनम
 ... भयोदीनों को संजोग ॥ असिता
 ... लहो गगान निरवान क्रम
 ... सुभग माधवीसार ।
 ... परिवार ॥ देवी वर चक्रे सरी
 ... गनवर कहे यौरासी परतच्छ ॥

अधिकार लिखते

... कल्याण । तीजे आरे केरहे
 ... तव भयो रिपभओतार ।
 ... अधिकार ॥ जिनके चारि
 ... कल्याणक
 ... विवहारा
 ... जोकाल
 ... दुःखमां
 ... उपजे
 ... नीति
 ... चार ॥ इन दोउन
 ... नीति
 ... पांचवों अरु छठवों मरुदेवानाभ
 ... नीति कही धिकारनी धनुप
 ... एह ॥ नाभ
 ... नीतिनीतिथ के काल श्री
 ... ॥

अथ श्रीआदिनाथ चवन कल्याणक ॥

सुरसंबंधी आयु तजि अरुअहार विवहार । छंडिचबे सुरलोक
 तें गर्भवास आचार ॥ अब इन जिन श्रीऋषभ के तेरह भव वपु
 नाम । वरनि बखानेप्रथमधनसारथवाहुललाम ॥ भये जुगलिया
 दूसरे तीजे सुरगर फेर । चौथे राजानहावल फेर पांचवें हेर ॥
 भये देवललितंग पुनिवज्जंघनृप फेर । छठें सातवें जुगलिया
 पुनिसुर अठयें हेर ॥ जीवनदायक नाम पुनि वैद्य नवें भवसोया
 दसवें भद्रवरदेवताजनम होय सुख सोय ॥ चक्रवर्त्त पुनि ग्यारवें
 वजनाभ इहिं नाम । सर्वार्थ सिधि वारवें भये परम अभिरामा ॥
 जनम तेरवें रिपव प्रभु आदि जिनेसर सार । तिन जिनके अधि
 कार अब कहीं सकल विस्तार ॥ तीन ग्यानसह चवन जिन
 कोनां गर्भ निवास । कुंजरादि चौदह सुपनमरुदेवीलखि तासु ॥
 ऐसैं ही दाईस जिन जननि प्रथम गज देखि । और लखैं नहिं
 ब्रख लपे प्रथम कह्यो या लेखि ॥ रहै नहीं तिहि काल में जे
 पण्डित सुपनच्य । यातैं सुपनविचारतहंक्रियो नाभि सरवग्य ॥

अथ श्री आदिनाथ जन्मकल्याणक ॥

गर्भकाल बीत्यो जबै सकल सवानव मास । चैतबदी आठें
 नखत उत्तरखाढ प्रकास ॥ मरुदेवीकीकूख तेंजनमें श्रीभगवाना
 ऋषवदेव भगवंत वर आदि जिनेसर जाना ॥ आदितिथंकरआदि
 नृप भिक्षाचर पुनि आदि । आदि केवली ऋषव ए पांचौ नाम
 अनादि ॥ छप्यनदिसा कुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय । कियो
 नहौच्छौ प्रथमवत धन वरखा वरपाय ॥ तोलन तोला सेर मन
 शठन गज तिहिं काल । रोति जाति करमादि नहिं और दसू-
 टन चाल ॥ ते सब अब नवरोत करि सब अचार विवहार । करे
 रे दुखहुंद सब श्रीजिनराज कुमार ॥ दोन दुखीदारिद्र जुत
 हीनन कोतिहिं काल । बंदन कोऊ वंदिमें सब अनन्दसुखहाल ॥
 एक वरस के जब भये आदिनाथ भगवान । इन्द्र आय इक

आरेके रहे जब थोरे दिन आय । कल्पवृच्छ थोरे रहे भुवमें
जुगलि नपाय ॥ लग्न लगे ते परस्पर डक तरु तर द्वैठि ।
हक मक धिकार ते तिहूं तोजि में पैठि ॥ तिनके-याव निबेरहीं
नाथि नृपति चितचाहि । चह्यो राजके पाट पर सुतहि विठावन
ताहि ॥ आय इन्द्र सुरलोक तें दियो नहोच्छो चाय । राजपाट
अभिपेक की सांज समारी आय ॥ पुरी अजोध्या आय के धनद
करी नृपकाज । राजसाज सुरपति सजे वाजि ताज गजराज ॥
त्रेसठलख पूरववरस ऋषभदेव करिराज । सकल कला तिनहीं
करी प्रगट जगत के काज ॥ लिखनपढ़न अरुगिनन पुनि सुगुन
सुपन कौ ग्यान । शस्त्रशास्त्र धनुवानकी विद्या आदि सुजान ॥
गान ग्यान गुन मान मिति तानताल के भेद । नृत्य नाट्य अरु
वाद्यके चारों भेद अखेद ॥ कामकला रसरसगितासोरह सजन
सिंगार । वसीकरन मोहन कला आदि अमित परवार ॥ जोतक
वैतक अश्व गज रथ आरोहन ग्यान । चित्रचितेरन चतुरई अरु
विचित्रता जान ॥ सकल सिल्पकी स्वल्पता सूक्ष्म थूल प्रकार ।
सब सिखराई जनन कौं सजितिनकेहथियार ॥ त्रेसठलख पूरव
वरस जब यों भये वितोत । दिक्षासपथ चितावने आयें सुर
करि प्रीति ॥

अथ आदिनाथस्वामी दिक्षाकल्याणक ॥

जैजैनंदा कहि कह्यो जैभद्रा जिन जान । कोउन लें तिहिं-
काल पै दियो समछरीदान ॥ चैत बदी आठें सुदिन पहिरपाक-
लें पाय । वैठि सुदरसन पालकी सुर मनु सह सनुदाय ॥ पुरी
विनीता बीच कैं निकसि वाहरेंआय । तरुअसोक तर सोकतजि
भूपन बसन वढाय ॥ सुरपतिहित डक मूठ तजि चारि मुष्टि
करिलोच । चौविहार द्वै वासजुत तजि संसारी सोच ॥ उत्तर
पादा जोग ससि चारि सहस नरसाथ । देवदूप पटजुतलियो
चारित जिन जननाथ ॥ तदनन्तर जिन आदि प्रभु लागे करन

... में ... गोचरी
 ... करुंमहें
 ... चारि हजार राहि
 ... पाय साय बच जाग के गह्यो तपस्या
 ... किषो निहार । पान्ककगुत
 ... हिा धार ॥ परे पाय पुद्द छावपुनिलगे
 ... कसो मूरन केदेवा
 ... गौरि आदि बिद्या
 ... भक्षे छणे महा
 ... धन जेन ॥ पुरपता-
 ... करि रहे
 ... उ द्येय ।
 ... भव इकवरद
 ... उदे अव-
 ... अजाय । अन्न राय पूरं
 ... देगि साधकें
 ... भूत ॥ अब जब
 ... कहने
 ... जोग । यातें तूंहीं
 ... सुनि बांधीं
 ... ॥ तज्वारी तु
 ... राखी
 ... तें । भलों जिन
 ... ॥ यातें तुव दौऊ मिलो मिलि
 ... दये
 ... सुर दुंदुभि

नम बज्रिदानी अति घनवृष्टिपुरेण ॥ ताहो दिन ते यहभयो अख्य
 तीज तिहियार । विहरावन लागे तवै जिन वरको आहार ॥
 तद्वनिला नगरी गये विहस्त आदि जिनेम । काउसग्य तप
 करि गहे तहां ऋष्यन्यानेन ॥ तहां बाहुबल जिनसुवनआयो
 वंदन हेत । करी थापना शीत करि जिनपद की तिहिं खेत ॥
 नरदेवी जिन जननि जय सुमिरे जिनके हाल । भूख प्यास तप
 कष्ट की सहन होय बेहाल ॥ रोय कहे सुत भरत सौं राजकाज
 वन तात । क्यों भलीसुधि तात की भली नहीं यह बात ॥ रोय
 रोय यों रैनदिन दीने नन्दा खोय । होत जात छिनछिन तन मरु
 देवी दुखभोय ॥ सहस्र वरत लहिसहि सकल सुरमनुकृत उप
 सर्ग । तज्यो जिनेसर रोह अरु देहेनेह सुखवर्ग ॥

अथ श्री आदिनाथस्वामी ग्यानकल्याणक ॥

फागुनवादि एकादशी नखत उत्तरासाढ । तीन वास पानी
 रहित चौविहार करि गाढ ॥ दुपहर दिन पुर तैं निकसि वन
 बसि बटतरु हेठ । पायो केवल ग्यान पद परम सिद्ध में पैठ ॥
 भरत करी सहिसा महत आदिनाथ कीयाय । पुनि भरुदेवीमाय
 कों हाथी पर बयठाय ॥ तिन पूछी तव भरत सौं देववाच सुनि
 कान । भरत सुनायो लाभवर आदिनाथ कौ ग्यान ॥ सुनिअति
 छायो सोद नन मरुदेवी कैं सोय । उघरि गये दृगपटल जे खोये
 दुख करि रोय ॥ मरुदेवी हू कौं तहां उपज्यो केवल ग्यान । एक
 मुहूरत मांहि पुनि पायो पद निरयान ॥ सुरन आप तहं सनुदमें
 दीनी काय बहाय । भरत कियो अतिसोक पुनि हरदेनोद्वहाय ॥
 भरत जाय दह खंड में राजनीत करसाय । चक्रवर्त की सिद्धि लें
 फिरे अजोध्या आय ॥ भरत आत अठ्ठानवे तेऊ बोधहिं पाय ।
 चारित लीनो तिन सबन ऋष्यवदेव तैं चाय ॥ सुन्दरियादि
 कतियनहूंपुनिखीनौदारित्र । एकबाहुबल विनसकल सेवकनये
 पवित्र ॥ सुमुख नाम इक दूत तहं भरत पठायो जाय । तत्र

बहुदिन भीने गन नजे प्रहोयों नजकोन । मानसतानोदूजिने
 अवलीं नमजको हैन ॥ हीया नज प चडिन्हो के यह नो
 मान । आना पर तानन चलयो तजितिहि काल पुमान ॥ तिहि
 थल केवलरयान तिहि उपज्योहहि सुत्र छांह । आदिनाथप्रग
 पति के वसे केवलिन तह ॥ अत्र श्रीआदि जिनेस को कहां
 सकल परिवार । योगी ननधर तिते साध सहस निरधार ॥
 तीनलाख वर साधवी शायक साडेतीन । पांचलाख चवनसहस
 सुभ श्राविका प्रयोन ॥ चारि सहस अरु सात सैंसाडे पूरवजाना
 अवधिचान रयानी गये नवहजार परमान ॥ बीससहस पढ़ने
 वली लवध वयकी जान । बीस सहस छहत्ते भये बहुर दिपुल
 सतिरयान ॥ साडे छहत्ते अरु सहस बारह संघ्यासोच । तेतेदे
 वादी भये साध संख्य पह जोप ॥ साधपुक्ति पदकों गये बीस
 सहस लहि बोच । लहो साधवी हूं बुद्धत चालिससहस प्रयो-
 धा ॥ ऐसैं आदि जिनेस की साध संपदा मान । हुहुं प्रकार भुव
 जिन कहै एक अंतकृत जान ॥ अहदूजी परियांतकृत बुकतराह
 निरवाह । रहो अस्ख्या पाटलीं जिनवर पाछे चाह ॥ अवसव
 चाउ जिनेस को कहैं सुनौ दित लाय ॥ बीस लाख पूरव रहे
 पदकुमार मेछाय ॥ त्रैसठ पूरव लाखपुनि वरसराजपद भोग ।
 आसी पूरव लाख कुल गृह सुख भोग संजोग ॥ एक सहस
 छदमस्त अरु सहस उनइकलाख । पूरव केवल रयान पद पाय
 रहे निज साख ।

अथ श्रीआदिनाथ स्वामी सोध कल्याणक ॥

चौरासी पूरव सकल आयु मान प्रतिपाल । जात चाठ नव
 वरस तीन डतो जदकाल ॥ तीजे आरे के रहे जाह भाहकेतह ।
 सुभ तिथ असिततिरोदसी अभिजित सति की छांह ।
 परवत तहां दस हजार संगसाध । दह उपास पानि हित
 हार व्रतसाध ॥ दुपहर दिन पहले लहो आदिनाथ निरमान

वीर सेवा करीवारह गौतमकीस ॥ आठवरस पद केवली पालि
 पाय निरवान । शतंजीवक मुक्तिपद परस लह्यो सुग्यान ॥
 जिप्यनही इन दुहुन के रहे तयै तिहि पाट । जंबूस्वामी तें तहां
 रही धरम की बाट ॥ रिपभदत्तत्रिवहारिया तिया धारिनी तासु ।
 जिन तें जनमें नाम सुभ जंबूस्वामी जासु ॥ सुनि सुधर्म बानी
 लह्यो सब संसार असार । आठ तिया ताके तऊ राग रहित
 विवहार ॥ इक दिन ताके सदन में प्रभव नाम इकचोर । आय
 पांचसे जन सहित चोर बिपुल धन जोर ॥ चलयोगेह चलिनहिं
 सक्यौ सासन देव प्रभाव । तब जंबूके पग परयो सो तस्कर
 कौ राव ॥ कह्यो स्वापनी सीखिये हमतें विद्या सार । अपनी
 हमें सिखाइये थंभन विद्या चारु ॥ तब जंबू ता चोर कों सब
 चोरन के साथ । धरमकथा उपदेश कहि बोधे सब मुनिनाथ ॥
 आय आठ तियके सहित अरु उनके पितुमात । सबतस्करमिलि
 पांचसे तत्ताइस जनजात ॥ इन सब मिलि चारित लिथो अति
 अगिनित धनदान । महावीर तें साथै वरस जंबू निरवान ॥
 भये तहां तिहिं सनयतें ये दस बोल विच्छेद । मनपरजाई ग्यान
 इक परमावधि पुनि वेद ॥ लब्धपुलाकी तीसरी आहारक तन
 फेर । पुनि चारित त्रय भांति कौ कह्यो पांचवौं हेर ॥ इकपरिहार
 विशुद्धता ताकों पहिलौ भेद । संपराय सूक्ष्म बहुरथथा प्यात
 पुनि वेद ॥ छपकस्त्रेन छह पुनिकही उपत्त्रम स्त्रेनीसात । जिन
 कल्पी कहि आठ नव केवलग्यान विख्यात ॥ दसवौं मोप पथा
 रनौ ये दसबोलदखान । कहेभयेविच्छेद ये जिनजंबू निरवान ॥
 जिनजंबू के पाट पुनि प्रभवस्वामि थिर होय । यों विचारचित
 में किया पाट जोग नहिं कोय ॥ तब सिव्यंभव विप्र इक राज
 गृहीके मांह । जग्य करत लखि तासु में साध जोगता छंह ॥
 तिहिंपर मोदि प्रबोधिकें सबदिज कर्म छुड़ाय । दई गांतिजिन
 नाथकी प्रतिमां ताहि दिखाय ॥ गुरु मुख सुनि उपदेन पुनि

चानि जाती नो भवति । प्रकृत्यभिक्के पाद पर तेते सो सुभ्यात ॥
 ताहे तिनको सुभ भणो लिप के पाणिधान । ताहूँ तौ लघु प्राय
 ननि निरु र जेते सो जान ॥ पहणीर निर्मान ते प्रभव गुण
 ते दान्नि भयने नरस चदानवे जव वीते तिहिं हाल ॥ पूनि त्रु
 भन पाद पर चिन देवाकप मोत । जनोभर तंग्गागनी जात
 सुभ्यर चेत ॥ पूर्ननि तजेहे शिष्यवक भाठर मोतेजीय । पा
 निभयसं नि पुनि तूजे त्हिनेनीय ॥ भद्रवाहुआरजधरि जातु
 संभयानीन । पाणिगजपा रंभूतिके थूलभद्रमाधीनापहटन पू
 निभय नरु के कोनी पारिया पाठ । भद्रवाहु तारी अनुज चयन
 नरु कया ॥ अक्षैठनिके भापपुरु दीनाअपनीपाद । अयन
 नरु कया ॥ के तियो वृष्णि । ये कट ॥ जातिम व रु जो जो
 नरु कया ॥ को विरग भाठ । कुशमान ते मन भई झूठी ताकी
 नरु कया ॥ पाणि विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । गरी करी
 नरु कया ॥ कट विरग अयि जय । सोपुत्र अर्पात्तिककर्मिण
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल
 नरु कया ॥ अयन विरग किये त्रिगुणसुखको सुवसाय । विरग विजय संभूतिके
 नरु कया ॥ अयन ते जकार्यकामो दोमविठाय ॥ थूल

...
 ...
 ...
 ...
 ...

राजहजूर । पहंचिसोचिकछु समझि पुनि भयो विरति भरपूर ॥
 लई विजयसंभूतितैं चारित दिक्षाजान । सिरिया पुनिमंत्रो भयो
 नृप आग्यापरमान ॥ बोधन गणिजाकोसकौ थूलभद्रतहं जाय ।
 चतुरयासतिहिंपर रह्यो जल जलजनकेन्याय ॥ भाख्योसाढेतोन
 करहमते रहि कां दूरि । मन आवै भावै सुकर सरत भाव रस
 पूरि।तेसैं ही ओरो तवै तिहिंगुरुभाई तीन । लगेकरन तपतीन
 थल अप अपने मति लीन ॥ सिंघसदन सुखइक वरुयो एककूप
 सुख आय । इक अहिगृह मुख सबन यो वरपा दई विताय ॥
 ठूल भद्र कीनौ कठिन पै सब तैं तप जान । खड़गधार तीछन
 अनी घनी बनी दुषखान ॥ इक वरषा रित रस भरी घनघुमड़नि
 चहुं ओर । सरसनि वरसनि परसपर कल कूकनि पिक मोर ॥
 झनकनि चमकनि चंचला गरजनि सरजनि काम । महोमहा
 आकास सब भयो उदीपन धाम ॥ अरु युवती नवजोवना भूपन
 वसन वनाय । हाव भाव दृगभौहके अरु अनुभावविभाव ॥ नृत्य
 नाट्य गुणगान केतान ताल मिति मान । वाजनिवीनप्रवीनकर
 सुर लैलीन निदान ॥ एते सब बाधक अधिक साधकसाधनसार ।
 डिश्यो न डग भरि अचल मति थूलभद्र निरधार ॥ वरपा वीतैं
 गुरुनिकट निपटविजयजुत सोयाख्यायो गनिका बोधि संग क्रपा
 बीठ गुरु जोय ॥ कही अहो हुकरहुलभ तुव तप यो द्वेवेर । एक
 वेर तिन सौं कह्यो तीन शिष्य तन हेर ॥ तेहन में दुख पाय
 अति कोप गोप मुख फेर । सिंघ गुफा वासी जती दूजी वर्षा
 फेर ॥ उपकोरुया वेरुया सदन पावस करन निवास।आस धारि
 मनमें चही अज्ञा वर गुरु पास ॥ ज्वाव न दीनो गुरु जवें जती
 सुतव तिहिं काल । विनुही गुरु अज्ञा गयो गणिकागेह सभाल ॥
 धर्मलाभ तासैं कह्यो तिन चाह्यो घनलाभ । वसीकरन मोहन
 भयो गुनमय गनिका गाम ॥ चितवतही तनमन लियो धन
 विन सरुयो न काम । नृपनेपाल सुदेस तव गयोसाधधनवान ॥

पुन्य विवेक ॥ हस्तिपुर कृते प्रद्यो जिन वासिष्ठ सुगोतातिनकी
 अत्र संद्वेष कछु कहीं विषयथा पोत ॥ इक दिन पुरी उजेन में
 पहुंचि गोचरी हेत । शिष्य गये तिनके तहां जिनजन हेतनिकेता ॥
 लखि भोजन मिष्टान्न तहं रंक एक लगि साथ । आयो उत्तमजीव
 तिहिं जान्यो पुरु लखि हाथ ॥ खीर पाखंड कौ तिहिं दियो भो
 जन अति भरपूर । खांघ अफरि करि वमन सो मरयो कष्ट लहि
 भर ॥ मरि फिर जनयो नृपतिघर जाति सुन्दर ह्यो सोय । गुरुसौं
 भाखी विनय हुत अन्धा दीजे जोय ॥ सोई हें माथे धरौं इक
 चारित नहिं होय । सुनि गुरु ताके हेत जिन धर्म विचारयो
 सोय ॥ सुनि गुरु श्रावक धर्म सुभ तिहिं कौनो उपदेस । तिन
 नृप संप्रत नाम सो माथो गुरु आदेश ॥ सवां कोटि प्रतभाकरी
 सवालाख प्रासाद । जोरन उदारे सकल तेरह से अवि खाद ॥
 करी दान साला त्रिपुल मिति सत सात सुधार । कर कुडायसबं
 देस के सुखी किये नरनार ॥ स्वस्थित और सुवृत्त बुध हस्तिपुर
 शिष्य दोय । कोटिक गछु काकंद पुर वासी जानौ सोय ॥ तिनके
 शिष्य सु इन्द्रदिने गोतम गोती जान । तिनहूँके पुनि सिधगिर
 गोतम गोत निधान ॥ तिनहूँ के पुनि शिष्य भये बझर गोतमी
 गोत । तिनको कछु विस्तार करि कहीं विवस्था पोत ॥ धनगिर
 इक विवहारिया तासु सुनंदा तीव । तासु गर्भमें चवि वस्योतिर्यक
 जृंभक जीव ॥ धनगिर साध संजोग तें चारित लीनौ जाय । पाछे
 तिनके सुत भयो जननी कौ दुखदाय ॥ इक दिन धनगिर निज
 धरैकरन गोचरी आय । तियसुत दुखतें लखि कह्यो यह आपनी
 बलाय ॥ लेहु मोहि दुख देत अति रोय रोय दिन रात । आंदि
 लगी नं क्मास तें जागत भयो प्रभात ॥ जहां गये तुम आयतहं
 पाहूँ को लेजाय । यह कहि ब्रौली में दियो सुअन हठीलो
 लाय ॥ लैआये गुरु निकट तिहिं गुरु भाप्यो हो जोय । सचित
 शचित जोई मिलै जाय विहरियोसोय ॥ आय सामुहें सिधगिरि

भिक्ष तें वचें छुटे जंजाल ॥ तो चारिन हमलेहिं यह चिंतन आईं
 ज्वार । नाज समाज जहाज बहु भरि भरि आये द्वार ॥ भयो
 सुभिक्षसुदेन नव सुखी भये नरनार । सोचि प्रतिग्या आपनी
 मनमें करि निरधार ॥ चार्यों पुत्र कलत्र जुत सो श्रावक
 जिनदन । चारित लें संनार तजि साध भयो छदमत्त ॥ तिनकी
 साखा चारि तें तीन गई विच्छेद । एकरही तिन चारिमें साखा
 इन्द्रसुवेद ॥ वेगस्वामि बहु साध संग करिके तप संधार । देह
 त्यागि गिरमूलतट लह्यो सुर्ग निरधार । ग्रही रहे बहुवर्ष अरु
 जती चवालिस वर्ष । छत्तिन गुरु पद पाय पुनि सुर्ग गये जुत
 हर्ष ॥ मनपरजाई ज्ञानअरु अर्द्धन राच सधेन । गये भयेविच्छे-
 दये तवहीं तें जगएन ॥ चारि शिष्य तिनके भये तागिल पोमिल
 फेर । तापस और जयंत तें साखा चारि सुहेर ॥ भद्रवाहु के
 चारि शिष्य एक धविर गोदासु । अग्निदत्त पुनि जन्हदत्त सोम-
 दत्त पुनि जासु ॥ भये धविर गोदास के चारि शिष्य वर फेर ।
 चारि साखतिन तेंचली इक तामलसो हेर ॥ दुतिय कोडवरसी
 ही पंडवर्धनातीन । दासीपव्वडिका बहुरभूतविजय गुरुपीन ॥
 तिके वारह शिष्य भये नंदभद्र तहं एक । भद्र कह्यो उपनंद
 नि तीसभद्र सविवेक ॥ पांडभद्र जसभेद अरु सुमनिभद्रकहि
 र । पुर्नधूल दोंडभद्र जुत सयलमतोपुनि हेर ॥ जंबूदीह सुभद्र
 नि सूरभद्र इहि नाम । भये वारहों शिष्य ये इनको संख्यत-
 म ॥ भई शिष्यनी सात पुनि भूतविजयकी और । धूलभद्रकी
 हिन हैं ते सातों इक ठौर ॥ जखवाजख दिनारु पुनिभूताभूत
 ना सु । सेना अरु बेना बहुर रतना सातों पास ॥ धविर महा
 रि साधके आठ शिष्य पुनि जान । उत्तर बल सहधनठ पुनि
 हिंसि रिद्धि मन मान ॥ पुनि कौडिन्नरु नाग कहि नागमित्र
 नि जान । छलुक रोह गुप्ता कहेआठा शिष्यवखान ॥ अंतरं-
 का नगर में धविर महागिरि आय । तहां एक दंडी मिल्यो

प्रकटे तातें सात कुल साखा चारि प्रतच्छ । धविर भद्रजस तें
 कव्यो उडवाडक सुभ गच्छ ॥ साख चारि अरु तीन कुल ताके
 प्रकटे फेराएक भद्रजस नाम कुल भद्रगुप्त पुनि हेर ॥ तीजो हे
 जसभद्रपुनि चार्यों साखाजान । चंपद्याभ रंजिकाकाकंदिका
 प्रमान ॥ मिहिलजिका चौथी कहा अत्र कामर्दका तासु ।
 गच्छ बेस वाटिक कव्यो चारि चारि पुनि जसु ॥ साखा
 अरु कुल नीपजे सावस्थिक तहं एरु । राज पालका दूसरी
 अंत रंजिका टेक ॥ चौथी खेमम लिद्यका एकगणित कुल फेर ।
 मेहक कामर्दक वहर इन्द्रमुरग पुनि हेर ॥ ईसगुप्त तें पुनि
 भयो वरसा नवगन गच्छ । चार साख कुलतीन पुनितिन के
 भये प्रतच्छ ॥ कस वतिका शोतमी वासिस्थित एतीन ॥
 साखा चौथी सोरठी सुनि कुल तीन श्रवीन ॥ ऋषिगुप्तरु ऋषि
 दत्त पुनि अभिजयंत कुल स्वच्छ । सुस्थित सुप्रति बुद्ध तें भयो
 कोटिगन गच्छ ॥ चारि साख कुल चारि पुनि तातें प्रगटेजाना
 उच्च नागरी एक अरु विद्याधरी बखान ॥ तीजीवच्ची मध्यमा
 चौथी साखा जान । ब्रह्मन एक दल्लयद्वे वानिज तीजो जाना ॥
 श्रश्च वाहना तासुको चौथी कुल पहिचान । येई चार्यों साख
 अरु चारों कुल परमान ॥ अरु सुस्थित प्रतिबद्ध केषांचमुशिष्य
 सुचाल । इन्द्र दिन्न शिष्यग्रंथ अरु विद्याधर गोपाल ॥ अहंदत्त
 ऋषिदत्तये पांचौ शिष्य सुचालाविद्याधर तें साखपुनि विद्याधरी
 विसाल ॥ इन्द्रदिन्न के शिष्यदिन तिनकेशिपुनिदोय । संतसेन
 अरु सीहरिग संतसेनतें सोय उच्चनागरी नाम तहं साखा
 निकसी जान । संतसेन हूं तें भये चारि शिष्य पहिचान ॥ आर्ज
 सेनता पद्म अरु धविर कुबेर बखान । ऋषिपाली चौथे यहीसा
 खाचारिप्रमान ॥ इनहीचारों नारहमतें साखाच । गिबखान धविर
 सीहरिग के भये धनगिरि शिष्य प्रधान बेरस्वामि दृजे भये
 सुमतिसूर पुनि जान । और अरुहदिन सुमति पुनिगोतम गोती

दैं विक्रम नृपति सुजान ॥ महावीर तैं चारसै सत्तर वरसवितो-
ता भये भये ते धविरजिन लहीजनमकी जोत ॥ वरसपांचसै
अरु असी पांच औरहूं सोय । विक्रम तैं हरिभद्र सुनि सुर भये
पुनिजोय ॥ फेर शिष्य तिनके भये हंस और परहंस । जैनागम
गुरु तैं सबे पढ़े जोग परसंस ॥ पुनि छल करिके भेप घुरिबोधु
न कौं तिहिकाल । जाय देस तिनके पढ़ी तिनकी विद्याहाला ॥
सो बोधन जान्यो कपट लहि भाजे तजि देस । मग मैपाहें आय
उन मारे करि निःसेस ॥ गुरु सुनि कोपे कोपि पुनिकीनी छमा
छमाल । मानतुंग आचार्य पुनि प्रगटे तेही काल ॥ जिन भक्ता
मर तवन वरकर्यौ हरयो अग्र्यान । वरसआठसैतवगये विक्रम
नृपतैं जान ॥ पादलिप्त आचार्यहूं भये तिही दिन आय ।
पगलेपन करि करत जे तीरथ पंच वनाय ॥ तीन कालकाचार्य
पुनि भये धविर गन नांह । प्रथक प्रथक तिनकी कथा सुनिये
अति दुति छांह ॥ प्रथम कालिका चार्य के शिष्य प्रमादी होया
गुरु अग्र्या मानी नहीं गुरु तजि गये विगोय ॥ आन देस में
शिष्य इक सागर चन्द्र सुजान । तहां गये गुरु तिनहु नहिंजाने
गुरु पहिचान ॥ वाद कियो करि हारि पुनि जान्यो बड़ो प्रभाव ।
पाछे तैं सब शिष्य तहं पहुंचे ढूंढत पाव । तव उनहूं पहिचानिके
सब मिलि पकरे पाय । चूक आपनी मानिके लीनेदोपखिमाय ॥
एक समै सुरपति सुन्यो सीमंधर उपदेस । सुनि पूछ्यो ऐसो
कोऊ सुग्य भरत थल देस ॥ दियो कालिकाचार्य तव श्रीमंधर
बतलाय । इन्द्रवृद्ध वपु धरि तहां पहुंच्यो करि चित चाय ॥
आय पूछि संदेह सब पाय यथारथ ज्वाव । मुदित होय आनन्द
श्रुति ओपी आनन आव ॥ पुनि पूछी निज आरवल सुरपति
हाथ दिखाय । द्वैसागर कीजानि कहि सुरपति दियो बताय ॥
तव सुरपति निजरूप धरि प्रगट होय गुरु पास । मांगि सीख
वह तैं गयो अपने सुर पुर वास ॥ महावीर जिननाय तैं सवाः

लेंसंग । मारग में ग्रीपम बदलि वरखा कीनो रंग ॥ घरपरसोंहें
घन भये झर बरसोंहें मेह । घर दर सोंहें पधिक दृग करिसर
सोंहें नेह ॥ घिरेघुमड़िघन घोर घर रैन घोस को ग्यान । कुनु
दकमल तें पाइयत के चकवो चकवान ॥ झपकिझपकि झमके
झरी लपकि लपकिलपि बीज । टपकि टपकि ओली करेछपकि
छपकि मग भीज ॥ दंपति अंक निसंक भरि लूटत घनज्यां
रंक । माननि तज्यो अतंक अरु मारग छायो पंक ॥ मारग रित
अव रोध तें नृपति रहे तहं छाये । भई छावनी कटक की रितु
सुहावनी पाय ॥ चतुरमास वीत्यो जबै सरद आगनन आय ।
अमल अम्भ आकाश हवै मारग दियो वताय ॥ तऊकटक विन
घन नहीं चलयो रह्यो तहं छाये । तब कालिक गुरु जान यह
कीनो पीन उपाय ॥ करि सुदृष्ट की वृष्ट तें सब डप्टका पजाया
करि दीने सुवरन मई छई रिद्ध निधि आय ॥ साजि वाज गज
राज दर संगर साजि निनाद । जुरे जंग दुहुं ओर तेंपुरे न
ससर विवाद ॥ मची घुमड़िघमसान अति बची नएको मार ।
तोप तीर तरवार के वार भये तनपार ॥ रुधिर नदिन के परतें
भरे कूप सर कुंड । जामें जलचर ज्यो जगे रुंड झुंडगज सुंड ॥
भाज्यो गर्दभसेन भजि गही कोटिकी वोट । परन लगीता कोट
पर सकल कटक की चोट ॥ साधी विद्या गर्दभी गर्दभ सेन
वनाय । सो लखिलीनी ग्यानवल गुरुस्वामी सुखदाय ॥ बोलि
एकसौ आठ भट सबदवेध जिहिं साख । रहो धातकरि सकल
मिलि यों तिनसौं गुरु भाख ॥ कह्यो जबै सो गर्दभी सबद करे
मुख फार । सब मिलि त्यागौ वान तुम सबद रोध अनुसार ॥
त्योही कीनो सबन मिलि गई गर्दभी भाग । गर्दभनृप मुख
पैकियो गधीमूत्र मल त्याग ॥ वांधिलियो गर्दभ नृपति दुर्ग
तेरि तिहिं काल । जीव दयापुनिपालितिहिंदीनो देशनिकाल ॥
रु साखी नृप कौं दियो नगर उजैनी राज । सग्सुतिवहिनहि

पुनि एवं विद्या तिन पुनि राज ॥ दुसियकालिका चार्जको कह्यो
 उँगे राधाव । विनिवकालिका चार्ज गुनकहिने को गवदावा ॥
 विनिवकालिका चार्ज तें कमकरिकरत निहार । आगे भरवन
 नगर नव भातु निव मिग्दार ॥ सो गुरु को भरनेज अरु बाल
 विज नित जान । गुरु नागममहिमा महतकियो मान सनमान ॥
 चि नयह करि गुरु चरन राखे भर चौमास । पै ताकें विहरें
 नवीने गुरु परम उदास ॥ तातें नृप दुख पाय निज प्रोहित
 निने ननाथ । तासों सब मन की कथा दीनी विथा सुनाय ॥
 मनय नि नप गों कह्यो सब आवकें बलाय । देहु विविधि
 सो न रागं मनि तर विहरें जाय ॥ त्योही कीनी नृप सकल
 भातु निनेनोय । भोजन नाना भांति के दीने तिनहिं अतोला ॥
 नि नय गुरु के शिष्य राव निव विहरें सब जाय । नानाविधि
 विद्युन मन लायें आवें ज्याय ॥ तव गुरु पूछी नित्य प्रति कोन
 विद्या । निव काग तव कोन के शिष्यन कह्यो निदान ॥
 तव नृप मन गाहि प्रभु आज पूछि गव वात । आय निवेद
 कोन के राव गांदि गों प्रात ॥ दृजे दिन शिष्यन सकल पूछी
 कोन के राव । कह्यो आय गुरु में सकल मुभ्यो प्रांत प्रभु
 कोन के राव विद अरुचित लह्यो विनुही भाग्ने गाय । थल
 कोन के राव विद्या तव पू पठान है जाय ॥ जहें सालवाहन
 कोन के राव धर्या वाम । भयो परमन पर्व मित पंचमि
 कोन के राव । पद सरोच्छांहुं तहां ताही दिन विवहार । सो
 पूछी कोन के राव नृपनि केन कोन विचार ॥ पोस करों तो
 कोन के राव कोन के राव । कोन रहे नहिं पोस विधि करों
 कोन के राव ॥ इंद्रबहोछो पंचमी कठकों पोसहि धार । र्हों
 कोन के राव कोन के राव यों निग्धार ॥ तव भाग्ने गुरु हांयनहिं
 यह कोन के राव जाय । अधिक पंचमी दिवस तें पर्व पू-
 सन जाय ॥ तव नृप भाग्ने होय तो अग्या प्रभु की आज ।

चौथ मुत्तिय पोसह करौ कालि महोछोसाज ॥ यह सुनिगुरु
राजी भये दीनी अग्या मान । थापी ताही दिवस तें चौथ पज-
सन जान ॥ सात ऊन दस सौ बरस महावीर तें जोय । वीते
प्रगटे कालिका चारन जग में सोय ॥ भई आठवीं वाचना संपू-
रन यह जान । समाचारिकी वाचना नवमी सुनौ निदान ॥

अथ नवमी वाचना ॥

कहियत नवमी वाचना अब सब सो सुनि येह । साध समा
चारी सकल अट्ट इस गनि लेह ॥ खानपान संचार अरु रहनि
चहनि दे अदि । अनुचित उचित विचार सों जेते विवहारादि ॥
चतुरमास बरसात नें क्रिया विवेक विचार । सदाचार जे साध
के समाचार निरंधार ॥ वरषा रितु आरंभ में छाड़ि सकल
आरंभ । चारि मास के नेम गहि साध अलोभ अदंभ ॥ रहै एक
थल माहिं कौं मिति अहार विवहार । सो थल तिनके हित सजे
ग्रहवासी साचार । स्वच्छ सुदु मृदु भूमि करि लीपि पोति धव-
लाय । छात छौनि त्रिन छान करि छांय विछौनि विछाय ॥
नाल प्रनालन की निपट सुचि करि गच ढरवाय । साध साधवों
कौं ग्रही ऐसैं थल पधराय ॥ रहै साध तिहि स्वच्छ थल भर
चौमासाछाय । सुमन सुवच सुभ कर्मकौं स्वच्छ सुसोल सुभाय ॥
तहां प्रथम इक मास पर जब वीते दिन बीस । भावों सुकला
पंचमी सकल तिथन मनि सीस ॥ आसाढी पून्यो हित दिन
पचासवौं जोय । बढ़ै न तामैं एक दिन घट तो घटती होय ॥
ता दिन पर्व पजूसना महावीरजिन कीन । गोतमादि गनधरन
हूँ त्योंहो क्रियो प्रवीन ॥ त्यों शिष्यन आचारजन थदिरन हूँ
मिलि सर्व । उपाध्याय कीनौ करैं त्यों हमहूँ सो पर्व ॥

अथ ढूजी समा चारी ॥

औखध अरु आहार हित गमना गमन विचार । सब दिन
दाई कोस मिति साधन कौं संचार ॥ पैनिस अपने ठौरहीआय

रहें जो साथ । जान लंड निमित्तमि रहन होत साथ कंवाधा ॥
 नथ तृतीय समाचारी ॥

रहें निन्दर जौनकी जल सन काल प्रवाह । साथ गमन
 नथ नथ नहं ननि अनुचित नवगाह ॥ होय जानु तें हेठ जल
 निदि मज्जिना मे शोच । वागपगडगमग मांहिं जिम अध उरध
 ननि शोच । ऐमें जो जन चलि सकै सूयो पाय उठाय । अल्प
 नथ मे साथ शो जाय सकें तो जाय ॥

नथ चतुर्थ समाचारी ॥

नथ नथ गरुजडवकजे दोय भांतिके साथ । तिनसांगुरु जिहिं
 निदि नथो निदि । वि नादि उपाध ॥ ग्लान साथ आहार अरु
 नथ नथ नथ नथ ॥ अथवा निजआहार हित विहरैग्रहपति
 नथ नथ नथ नथ तें तनकहूं घटनठु चहै न सोय । लेनदेन
 नथ नथ नथ नथ तें होय ॥ ग्लान साथ निज हित
 नथ नथ नथ नथ नथ नथ । गुरु निदेश तें तनकहूं न्यूनाधिक
 नथ नथ नथ ॥

अथ पंचम समाचारी ॥

नथ नथ अयोग जे साथ निन्हें इहिं काल । वरपा में
 नथ नथ नथ नथ गुरु वच पाल ॥ दूधदही नवनीत घृत तिल
 नथ नथ नथ नथ । साथ ग्लान में उचित नहिं जों लो तन
 नथ नथ ॥

अथ छठी समाचारी ॥

ग्लान दुर्वाहित साथजो ग्रही गेह चलि जाय । लेइतितोई
 जो इहै गंगो अरु जो खाय ॥ जदपि ग्रही दे अधिक अरु कहै
 जती तुम देहु । उदरें तो तुम विहरियो अथवा औरन देहु ॥
 नथ उचित नहिं साथ कों लेनाअधिक अहार । ग्लान साथाने-
 नहं न ले विना कहै ग्रहधार ॥

अथ सातवीं समाचारी ॥

धविर कल्पिश्चावक सुखद साध सेव परवीन । चौरासीगच्छ
तासमें भेद न माने दीन ॥ सब साधन सांथों कहै जो चाहौ
सो लेहु । तदपि अनलखी वस्तुकों कहै न तिनसों देहु ॥ अति
उदार दातार घर जो न होय सो वस्त । कष्ट होय दीवौ चहे
जिंहकिंह भांति ग्रहस्त ॥ पै जो अनदेखीचहैवस्तु कृपनपैजाय ।
तौ कछु तैसौ दोष नहिं जैसौ कह्यो सुनाय ॥

अथ आठवीं समाचारी ॥

प्रति दिन रेत अहार जो साध निरन्तर कोय । एकै वार
ग्रहस्त घरकरै गोचरी सोय ॥ पाधातपी अचार जरु ग्लानवाल
हित जोय । ग्रही गेह द्वै वारहुं जाय न अनुचित होय ॥ व्रती
इकंतर जो जतीताहिगोचरी हेत । अनुचित नहिं द्वैवार जौजाय
ग्रही ग्रह खेत ॥ एकै विहरन मांहिं सोजो जानै संतोष । धोय
पोंछि कै पात्र फिर चहै न जाचन दोष ॥ नाहीं तोते पात्र सब
अन धोये ही फिर । लैग्रहस्त घर जायकैजाचैदूजीवेरा ॥ द्वैउपास
साधन करै जे पारन दिन सोय । दोय वेर जाचै तऊ अनुचित
तिन्हें न होय ॥ साधक तीन उपास के ग्रही गेह त्रय वार ।
जाचै तौ अनुचित नही एही क्रम निरधार ॥ पांच सात दिन पाख
केवास करै जे कोय । तिन्हें नेमनहिं जब चहै चहें ग्रही घरसोय ॥
पै मद माया कोप अरु लोभ मान तजि साध । ग्रही गेह में
गोचरी विधवत करै अबाध ॥

अथ नवमीं समाचारी ॥

नित मितभोजी साधकों सब विधि कौ जो वार । विधवत ले
अनुचित नहीं यों भाख्यौ निरधार ॥ एकंतर वासी जती त्रय
विधि कौ जल लेय । कर धोवन अरु पात्र कौ भात मांड पुनि
जेय ॥ तिल तुस जब धोवन सलिल तीन भांति कौजोय । दो-
उपासीसाध कौ उचित कहावै सोया ॥ तीन उपासी साधकोंतीन

भादि जौनगर । कांजी मांडरुउमजल पीवेउचिा विचार ॥
 नोननारों न चिकनग करे न हांछें साध । तिनहूँ केवल उचिन
 जन्नेइके नवाध ॥ सनि चिकनई रहिन जलतीन उवालि उवा
 नि । नोननार तिहि छानि एनि स्वच्छ पात्र ॥ ठालि ॥ अधिक
 नननार कर रहित मिन जल औसो जाय । साध यमी नियमी प्रती
 इति निचि साधे सोय ॥

अथ दसमी समाचारी ॥

प्रती जती के पात्र में दे अहार तिहि काल । कौर गिरे
 कौसेन उक दान नाम सो हाल ॥ ऐसे जौलों पात्र । टूटेनहिं
 न नगर । एक नर ना बंट इक सो जल दात विचार ॥ भोजन
 न नगर । का नेम करे नित साध । चार पांचतें अधिक
 न नगर । दान अवाध ॥ नेम करे तैतो चहे न्यून अधिक
 न नगर । मध्य रहे तो साध फिर जाय न जाचन साध ॥

अथ ग्यारहवीं समाचारी ॥

विवाहादि मय काल में जहां मिले नरनारि । भीडहोय
 न नगर । मयउनाम विचारि ॥ सोमवडपांसाळ तें सातमदन
 न नगर । होय जहां तों तिहि मदन उचित नमाधेचांदि ॥

अथ बारहवीं समाचारी ॥

जिन कल्पे कर पातरी साध गेह के मांदि । उचित
 नरी अहार दिन प्रती गेह तें जांदि ॥ गम नांतर अथवा तहां
 विहरनममे अहार । जो वरमे वरमान मेंहानी बड़ी फुहार ॥
 कांवे कृव तर हाथ में छापि अहार छिपाय । छानि छात छित
 नरनरे हाथ दवाय मुवाय ॥ थदिर कल्पि जे पात्र धर ते
 दरवा गिनु मांदि । कामरि चादर ओटि ते अल्प वृष्टि में
 जांदि ॥ प्रती गेह में पहं चि जांवरमत खुल न मेह । तहां
 नर नती साधको उचित दिना संदेह ॥ आनयान वाचुश तरवा
 अपने थल आय । रहे रहे नहि पे तहां साध प्रती ग्रह छाया ॥

जा कदाच यित यान न करे रसाइ पाये । अरु विहरावि
साध कौ प्रीत परवक सोय ॥ साध पहुंचि पहिलें जितौ जो
अन सोइयौ होय । सोई विहरे अरु न ले पाकैं सोइयौ सोय ॥
अरु जो विहरनकाल में खुलेन क्यौहूं मेह । पहर पाकलें जाय
कै खाय तहां पुनि तेह ॥ धोय पोंछिकै पात्र तब रवि रहतैंघर
आय । रहे रहे नहिं रात तहं ग्रही गेह में छाये ॥

अथ तेरहवीं समाचारी ॥

मेह अछेह न देह जौ जान साध कौ आय । ग्रहीगेह तेंतौ
तहां ठाढ़ौ रहै सुभाय ॥ एक साध इक साधवी कै द्वे कै इक
दोय । त्योहीं साधरु श्राविका मिलि नहिं ठाढ़े होय ॥ संगबाल
वा बालिका जऊ पांचवीं होय । तऊ एक थल मिलि रहन अ-
नुचित जानौ सोय ॥ जौ वा घर के दर बहुत अरु बहु नरकी
दीठ । निकट वृद्ध वृद्धा किधौ तौ नहिं अनुचित डीठ ॥ पै तिहिं
घर निसि नहिं बसै उठआवै निज गेह । सांझ समय लौं राह
लखि वरसैं मेह अछेह ॥

अथ चौदहवीं समाचारी ॥

खाज पान स्वादिम असन चारि भांति आहार । आन साध
हित हेतजो साधे साध विहार ॥ ताको रुचि पहि चानिके पूछि
सुभाव विचार । तातैं अधिक न ऊन सो विहरै साध अहार ॥

अथ पंद्रहीं समाचारी ॥

तनकौ तनके अंग सब जौ जल भीजे होय । भोजन चार्यो
भांति कौ साधन कल्पे कोय ॥ तिन में तन में सातये अंगप्राय
जहं वार । चिर थिर रहि नहिं सूकई ताको अधिक विचार ॥
कर कगरेखा दोय ये नख नख सिखा सुचार । भौंह अघर अरु
बोठ ये सातौं जल आधार ॥

अथ सोलहीं समाचारी ॥

प्राननील बीजरु हरित फूल अण्डजये नेह । उबरतैउबारिये

ननीचकुन देह ॥ प्रान जीव सूक्ष्म जिने विंद्री तिंद्री देह । पां-
 चरंगे निव कहे ते सब मनसुनि देह ॥ नील पीत शित श्याम
 कर्म करन बरन वपु जीयातिनमें सूक्ष्म कन्थुआठबरेजायनसोय
 वाचन बालनतांमकी नजरनसारवै कोय । ग्यानदीठलहि नजर
 नदि स्याउ उगारै सोय ॥ पात्र नादि उपगरन सब घातें वारं-
 वान । जे जि पौंछि पडलेह हरि राखे साध विचार ॥ नीलसूक्ष्म
 जीव मर योही पचरंग जान । पडलेहै उपगरन सब जैनी
 नरम निधान ॥ लंगो अन्नादिक बीजमेंसवरंग सूक्ष्मपजीय । जानि
 नगा हग मान निहि लहि पडलेहनकीय ॥ हरित जीवसूक्ष्म
 जिने मनसु भनरग होय । तिनहुं ते उगरन सबन पडलेहन
 नग मान ॥ फल जीव सूक्ष्म सकल पचरंग हुं तिहि रीत ।
 नानादि कथे न गक ठ पडलेहो करि प्रीत ॥ पुनिपिपीलिका
 नानादि उपकर जितेकातिनहुं तें पडलेहिये उपगरनादि तिते
 नानादि उपकरा जीव ज भवमेंकरे निवाम । तिनहुं तें पडलेहिये
 नानादि उपकरा ॥ निह जीवसूक्ष्म कहे हिमकर कादलओग
 नानादि उपकरा जिना लगत जन मत दोग ॥ गुमत पांच जे
 नानादि उपकरा इय पक । मगपग धावि मांदि जो रच्छाजीव
 जिने नानादि उपकरा उगरन तिहि दयो गुमति पिछानि । लेन
 नानादि उपकरा ते मर आयो इक जानि ॥ हे उपजाई मेडकीपग
 मर वननन आय । पछेंहे गज होय के प्रेरन कीनों धाय ॥
 नानादि उपकरा कर्म लयो माध उठाय अकाम । फिर भुव
 पडयो तड न नो नयो जीव विनास ॥ तव मन के पगनाम
 लनिने मर निर पगनाय । नयो आपने सदनकामवअपराध
 निरनाय ॥ समत हूमरी जिन कही भाखा सुमति वखान ।
 वाक विवेक विचार जिहिं भापत सुमति सुजान ॥ तहां एक दृष्टांत
 नृप पुर देखयो गिबु आय । माध एक तिहि नगर तें बाहर
 निकरयो धाय ॥ कटक लोग तांनों लगे पूछन सुनो सुजान ।

या पुर में केतिक कटक हमसां कहो बखान ॥ सुनि मन अनु-
चित जानकै बोलनि बोल्यो सोय । कटक सुभट पहुँच्यो जिनन
तिनके सनमुख होय ॥ सुननहार देखत नहीं लखें सुनें नहिं
तेह । सुनें लखें बोलें नतेकहि गुप क्रियो अछेह ॥ जानिबावरो
ताहि तव लोगन तज्यो निदान । वाक विवेकी साध की भापा
सुमति पिछान ॥ तीजी कहिये ईपणा साध भक्ति चितधार ।
धिनजिनके सन सहि रहै सुमतिईपणासार ॥ नंदपेन द्विज सु-
वन तिन साध समागम पाय । चारित लै तप आदरयो अमर
एक तहं आय ॥ लैन परिच्छा साधकी मन में कपट बढाय ।
साध रूप अनुरूप तिन धरे देह द्वै चाय ॥ इक रोगी बनि रहि
तहां दूजहिं प्रेर्यो जाय । कहीं बात नंदपेनसौताकी विधा सु-
नाय ॥ सो सुनि संगअहार लै वन में पहुँच्यो जाय । धरितन-
मुख मो साध के बोल्यो बिनय सुनाय ॥ पूज नगर में आइये सेवा
नीके होय । उन भाखी मो पग न मग सकैं चलन गति खोया ॥
नंदपेन सो साध तव लीनो कंध चढाय । मारग में मल मूत करि
दीनो ताहि न्हाय ॥ नंदपेन मनतनकहूं मान्यो नाहि सुखेद ।
तनमें चन्दन लेप तें जान्यो आन न भेद ॥ धन्य भाग्यनिज जानि
अरु तन पवित्र अनुमान । अमर ग्यान करि जानि धरि दिव्य
रूप सुखदान ॥ नंदपेन के पायपरि सबअपराध खिमाय । जस
गावत भावत चलयो सुर पुर पहुँच्यो जाय ॥ चौथी सुमति नि
खेवनी बधन सहत प्रतिकूल । करी साध पडलेह पै गयो समय
तहां भूल ॥ जब घन तें निकर्यो लर्यो रवि तव जानो चक ।
फिरि पडलेहन शिष्य को कह्यो पजनै कूक ॥ शिष्यवक्र बोल्यो
कहा झोली में हैं सांपि । सुनि सहि चुप रहि मौन गहि रहे
ओठ मुख टापि ॥ शिष्य गोचरी हेत जब झोली लई उठाय ।
दोय सांप तामें लखेरह्यो चकित मे पाय ॥ करन गुरन के वचन
को सांचो सासन देव । झोली में द्वैअहि असित उपजाये तव

रुच ॥ प्रथम पाय गुरुगण के चार चार पङ्क्तियाय । अति दीनता
 दिखाने के लिये दोन विभाव ॥ नव उच्चार सुपासवन सुमति
 नन्दने जोय । भेद न चौथी सुमति तें होय त्रुकिंचित होय ॥ सुवृ-
 न ॥ गुरु गिण्य में पात्र मारजात हेत । कह्यो सह्यो नाहिं ति-
 न जलें उरुटि निपट अचनेत ॥ नित प्रति कैसो मारजन कहा
 नो नवनेय । गुरु गुरुता करि सुनि रहे रासन सुर लहि सो-
 न । गुरु गुरुयो पात्र में गुरु नच सत्य निमित्त । गिण्य देखि
 मय गजहै गुरु महिमां धरि चित्त ॥ पांचसुमति येई कहीं साध
 मय गी जोय । किहें उचित ऐसी रहनि सहनि चहनि बरसोय ॥

अथ सत्तरहीं रामाचारी ॥

साध गी गी के लिये प्रही गेट जो जाय । विन अग्या गुरु
 नच नच नच जाय आय ॥ दिक्षा गुरुवय गुरु बहुर विद्या
 नच नच नच । विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 नच नच नच । अग्या गुरुवय गुरुवय गुरुवय । यातें तिनके
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥ विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥

अथ अठारहीं रामाचारी ॥

साध गी गी के लिये प्रही गेट जो जाय । विन अग्या गुरु
 नच नच नच जाय आय ॥ दिक्षा गुरुवय गुरु बहुर विद्या
 नच नच नच । विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 नच नच नच । अग्या गुरुवय गुरुवय गुरुवय । यातें तिनके
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥ विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥

अथ उन्नीसहीं रामाचारी ॥

साध गी गी के लिये प्रही गेट जो जाय । विन अग्या गुरु
 नच नच नच जाय आय ॥ दिक्षा गुरुवय गुरु बहुर विद्या
 नच नच नच । विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 नच नच नच । अग्या गुरुवय गुरुवय गुरुवय । यातें तिनके
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न
 विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥ विनको निधि में जाय अरु नाहिं तों जाय न ॥

खटमल आदिक जीव । त्योंत्यों संजम नहिं पलें लःगें दोष
अतीव ॥ यातें नाहीं अतिवडे नहिं अति छोटे लेय । तखतआदि
पडलेहि ये सहजे मांही जेय ॥

अथ बीसवीं समाचारी ॥

मल मूत्रादिक त्याग कौ चतुर मासमें साध । नेमकरे थल कौ
तहां निसदिन मांही अबाध । तीनतीन मंडल करे स्वच्छभूमि
दिन देखि । तहं त्यागें मल मूत्र कफ साध साधवी लेख ॥

अथ इकीसवीं समाचारी ॥

साध साधवी मूत्रमलकफत्यागन कै काज । तीन पात्रराखै
निकट अपने अपने साज ॥

अथ बाईसवीं समाचारी ॥

साध शीस गोलोम के मान नराखै केस । रहें लोचकीने
सदा यहीजती कौ भेस ॥ जोन सकैंतोमास प्रतिकतरें प्रति द्वे
मास । मुंडन करि छहमास प्रति करें लोच आयास ॥ छठें
मास हूं जो जती सकें न करजे लोच । करें अवश्य पजूसना
माहिं लोच तजि सोच ॥

अथ तेईसवीं समाचारी ॥

रोस न राखै साध मन भखै न बोल कुबोल । क्रोध विगोध
करें न कछु काहू सों अनडोल ॥ जो कौनहु संजोग करि काहू
सों दुख पाय । रोस आन उपजै तऊ तातें लेड खिमाय ॥ वा-
रहमासरु दुगुन पख दिवस तीन सैं साठ । कह्यौसुन्यौ कान्यौ
जु कछु होय दोष कौ ठाठ ॥ सो सब अपनी चूक कहि सबसों
द्वे कर जोरि । करि निहोर सिर ढोरि कैं लेखिनाय निज पोर ॥
भादौ सुकला पंचमी तदनंतर जो कोय । तख साधवीश्राविका
श्रावक जिन मतहोय ॥ तजै न मनबचकाय तें क्रोध विगोध
विचार । अनाचारि तासों कहैं तजि तासोंबिबहार ॥ जे नें दंड
प्रद्योत तैं उदायन नरराय । खिमत खामना नीति दनि लीने

होय विद्या ॥ जो नव कहु संछेप करि बरनो सुनिये सोय ।
 ॥ १ ॥ जो नार इत नंगपुर में होय ॥ तिय ताके सो पांच सो
 नति निज लोह जान । हाम प्रहासा वि तिहिं दई दिखाई आना ॥
 सो सो जो रहि जाहि तिन कह्यो चहै जो मोहि । द्वीप पंचसैली
 नजो मेरो पिलिरो तोहि ॥ यह कहि चहि दृगकोर तें निजपुर
 नजो सुनार । नजो विरह ताके विगुल सुवरननंदि सुनार ॥ बहु
 पनो बहु विना करि सुख नलाहिके पाय । चलयो नाचचढ़िचाय
 सो किनहायन डियकाय ॥ मधिजलनिविबट वृच्छट्टतटन लगी
 नजो ॥ जो गोमास गहिवच्छगर स्वर्नकार लहि दाव ॥ पंछीएक
 नजो ॥ जो विधिभारंडव नाम । ताके पग गहि रहिगयो सो लै
 नजो ॥ ॥ द्वीप पंच सैलीतहां उतर्योयोगाहेत । स्वर्ननंदि
 नजो ॥ जो तिहा निकेत ॥ हास प्रहासा तहं लग्योतिन
 नजो ॥ जो देह । ही देवी तें अनुज पहचने मंजोग न गह ॥ जो
 नजो ॥ जो तारि तहां दोयदेवतारूप । तो तोसां मोसां वनेजोग
 नजो ॥ जो तव नाख्यो हे प्रिये मक्कान निज थल जाया
 नजो ॥ जो त्रियो वंसापूर पहुंचाय ॥ तहां जाय तिन विर-
 नजो ॥ जो नगल नासा मित्र तन तिहिं वरज्यो
 नजो ॥ जो नकल कापी काम बस नैकैमानो सीख । विरहभाल
 नजो ॥ जो नर देव पदमें न्यागी तीख ॥ सब तन बन्ध लपेटि अरु
 नजो ॥ जो निज लपेट । पवनैक नें सुर भयोमर्यों जारि सब देह ॥
 नजो ॥ जो शिवक हू सरयो मन मुनंध्यान लगाय । भयो देव सुर
 नजो ॥ जो नरि जोक दिवाय ॥ इंद्रनभा में एक दिन नृत्यनाट्य
 नजो ॥ जो शिवकार नर दे । गरं देवन डारयो दोल ॥ जदपि
 नजो ॥ जो नर को नरके जानि अगिह । फिरफिरले डार्योगेरें
 नजो ॥ जो नरि ॥ यह कहि नागल देव तव सब पिछली सुधि
 नजो ॥ महाविप्र प्रविभा दई चंद्रन को वनवाय ॥ तीनकालतिहिं
 पूर्ण पुनि चंद्रकाल निज जान । नाच चदायपठायसोदई तहां सुनि

काना॥ संघ देस सौवीर में नगर वीतिभय नाम । नृपति उदायन
निकटसो प्रतिमागईललाम ॥ प्रभावतीनृप तियतहांतवसोप्रति-
मा पाय । लहि देवाधिप देव सों लीनी सीस चढाय ॥ तीनकाल
विध तवसकल पूजन अरचन साज । साजिभक्ति सुभ भावकरि
पजेजिनवरराज ॥ रानी सांख्यौ एकदिनदासीसैंसितवास । तिन
देख्यौ भ्रमदृष्टि करि पंचरंग वसन सुपास ॥ तबरानीनिजआउ
कौंजानिअंत अनियास । चारितलैवौधारि चितगईनृपतिकेपास ॥
नृपति कही तेरौ तहां ह्वैहै देवीरूप । सम सहाय कीजौ सु-
कहि आज्ञा दीनी भूप ॥ तब तिन चारित पालपुनि मरिधरि
देवीरूप । नृपन जतिन तपसीन कौं बोधन लगीअनूप ॥ कुबजा
दासी पुनि करे ता प्रतिमा कौं सेव । तहां देस गंधार तैश्रावक
आयोएव॥ दुखी पर्यौसो आइकैकोन्हीं कुबजासेव । ह्वै अरोग
गुटिका दए ह्वै दासी कोएव ॥ एक भखै तौ नारि कौहोयकुरूप
सरूप । दूजे इष्टअभिष्ट तिहिं मिलै अदोष अनूप ॥ यह कहितो
श्रावक गयो दे गुटिका निज देस । तानै दासी खाय डक भई
कनकरंग भेस ॥ ता दिन तै ताकौपड्यो सुवरन गुटिका नाम ।
नृपति चण्डप्रद्योतपुनि चितभैं छिन्ति सुवाम । दूजौ गुटिकाहूं
भख्यौ मन में होय सकाम । आयो चढि गज अनल गिर सोनृप
ललित ललाम ॥ दासी कौं प्रतिमा सहित गयो लेय निजदेस ।
दूजी प्रतिमा धरि तहां चण्डप्रद्योत नरेस ॥ नृपतिउदायन जानि
सो कोपि सेनलै संग । चढ्यौ कढ्यो पुर तै वढ्यो रढ्यो क्रोधअंग
अंग ॥ उततै चण्डप्रद्योत नृप चढि धरि धायो आय । मारग में
सन्मुख दुहूं मिले पररूपर धाय ॥ मच्यो जुद्ध अति घोर करि
सोर सुभट दुहुं और । लरे मरे पै नहिं मुरे जुरे जंग करि
जोर ॥ अंत उदायनजे लही सही पराजय आनि । जीवत लीनों
बांधि नृप चंडद्योत बलवान ॥ प्रतिमा लोप भई तहां फिरे आय
देस । मगमें वरपा काल के रितु कौ भयोप्रवेत ॥ जौनि इव-

नमो नमो कटक नटक निहिं दौर । जसकर लकसरपरिगयो
 लय नये कटिदौर ॥ नहां पजसन पर्व नृपचाहो करन उपास ।
 नमन देन वीजन गयो लोगनगडनृपपास ॥ उन विचसंकाभी-
 निकरि कही जनन सो नान । मेहू कीनीं आज वृतभूले भखान
 भाना नृप उतापनसूनिस्वन निहिं साधर्षाजान । खिमतरसामना
 सुदमन करि कीनी तजिमान ॥ पगतें निगड कुडायतिहिं भूखन
 नमन पिन्हाय । नव निधि रिधि सिधिसंगद दीनी देस पठाथ ॥
 ऐसिआचक श्राविहा साधसाधवी जोयाछांडिकपटमिल परसपर
 कोमगामनें मोय ॥ गुरुजन हूतें शिष्यप्रति दोष खिमावें जान ।
 नहंतें दयां या गुनिलीजे दैकान ॥ सोको संबीनगरि जहं
 नमन भगान । वदगूर आये तहां चढिनिज मूलबिमान ॥
 गुनाति अरु वदना गुणग साधवी सार । जे जिनवानी सुनि
 नमन अरु अरु पगधार ॥ दंदसूर निज थलगधे प्रथम सांझ
 नमन । अथाव नि जिननवन करि गेहिरही तहं जोय ॥ गर्ईगे-
 ही नमन देना गही जाय तहं मोय । सृगावती हूं चेति पुनि गर्ई
 नहं निहिं जोय ॥ कट्टो भली कीनी नतें गही तहां चितलाय ।
 नमन नहिं निजचूक कट्टि कीनी ग्योरि खिमाय ॥ तातेंतत
 हिन नमन अरु अरु केन नमन । लख्यो चन्दनानिकट अहि
 निहिं नमन निहिं अत ॥ लर्गः निवारन ताहि तत्र पूछ्योचंद-
 न दार । कट्टि अरु अरु को निकट कट्टो भयानक व्याल ॥
 तेरे निहिं नमन निहिं नमन कोन विधि दीठ । भाख्यो केवल
 रदन करि उयो प्रायो सो इठ ॥ दोपारोपन तुम कियो विना
 दोर नमन । यो नहिं कट्टि निज चूक कर जोरि खिमायो
 नमन ॥ ताही नमन प्रायो परम पदयत केवलनमन । सुनि चन्दना
 निहिं नमन पुनि निज हूळद्वो निदान ॥ ऐसें कीजे सुद मन खिमत
 नमन सार । लखट वृड नहिं राखिये ज्यां गुरुशिष्य कुमार
 कुमार नहिं माध को बालशिष्य डक जाय । नित फोडे घट

तासुकुकुंभकार दुखपाय ॥ वरजै तरजै तासुकुंभनहिं हारै सोया
 नित खिमावै दोष पुनि नित अपराधी होय ॥ ऐसो कपटखिमा-
 यवो कौन कामको होय । सासु जमाई ज्यों कियो त्यों मिलि
 कीजै सोय ॥ इक तिय विधवा लोभिनी कृपनि वडी धनवंता तिहिं
 संतत एकै सुता व्याही सुंदरकंत ॥ जमीजमाई निधिनसो कृपन
 जमाई हेत । तनक लेसहूं देयनहिं वडी प्रकतकी प्रेत ॥ लोगन
 बहु दोषी तवे एक दिना धरिधीर । आमंत्र्यो जमआय है जानि
 जमाई बीर । पीर खांड तिहिं परसि पुनि घाउ तनकसौ डारि ।
 आप गई कछु काजकों तिन लीनौ सब दारि ॥ आयसासदुखपाय
 रुखि बैठी जेवन संग । आपअपने मनमे दुहुंभरे कपट रसरंग ॥
 सासकहे जामात सौ बलिमो बेटी हेत । कवहुं बसनभपनन तुम
 लाये करि हितहेत ॥ कहत जात यों वात अरु खैचे घृतनिज
 ओर । वहऊ ऐसी वात कहि निज दिस लेय बहोर ॥ तुम काहू
 तिहिवार मैं मोहित न्यौतौ माय । यों कहि खैचें तुऊ घृतनिज
 निज कहि दिस चाय ॥ जामाता तव समझिकें लीनै दोष
 खिमाय । अलियागलिया कहि दयो सिगरो घीव मिलाय ॥ खीर
 खांड घृत एक करि थाली सुकर उठाया गयो पीय मुंह तकिरही
 सास हिये पछिनाय ॥ ऐसै जिहिकिहि भांति करि कपट छांडि
 तजि क्रोध । अलियागलिया करि तजे कै तव कूढ विरोध ॥

चौबीसवीं समाचारी

ही गुरुदेव तैं शिष्य खिमावै दोष । थविर साध तैं साध
 हीं लेय सतोष ॥ षिमै षिमावै और सौं करै न क्रोध
 सहै उपसमै सवन सौं जिनवरवचन प्रबोध ॥

पच्चीसवीं समाचारी ॥

काल पोसाल निज पूजै करि पडलेह । दोयवार पूजै
 य साध के गेह ॥

इतिगवी समाचारी ॥

द्विजिद्विमन दो जान जोसाधहिंही प्रजरुंर । आनजातीहिं
 नान नव नायनिकट के दर ॥ कौंकि कदानित साधसोतप
 वरि निरवक देह । के लुनकर मग में गिरे सोधि साधसोलेहा ॥

सत्ताडसवी समाचारी ॥

साहनाच विगत करि वेदहोत जोसाध । जाय थाननजिअवधि
 निवि नोनन पांच अवाध ॥ तहां जाय आवें बहुर प्रपने हीथल
 रेंव । नोनगके मगमें रहें हवांनरहें निसवेर ॥

अठाईसवीं समाचारी ॥

समानारि ने जेकहीं सनाइरातिनांह । जे विचार आचारसव
 नानासुखी अंत ॥ सूत्र अर्थ जिनवर वचन जिहि विधि कियो
 नाना । साध आवें औरजे विनहिं करावे जान । दुहुं लोक
 नानासुखी मतिमा नहे अपार । अंतमुक्ति तदभव लहें करेसुख
 नानासुखी कृपेवाजाजे सुभव अधिक साततें नांह । करम वध
 नानासुखी पवन मुक्ति ही क्रांति ॥ ऐमें जिनवर श्रीश्रमनमहा-
 नानासुखी नानासुखी नानासुखी तहां जिनगी सभा सुसंत ॥ साध
 नानासुखी अविना आवक देवी देव । साध सभा गुभ मजितहां
 देव नानासुखी ॥ धर्म पदुमन पर्वके अरुताके आचार । महा-
 नानासुखी नानासुखी साध निग्याग ॥

अथ कल्पसूत्र रचना ॥

इतिगवी इतिगवी जे वर्गमतिपंकर मार । महावीर भगवंत
 इतिगवी इतिगवी अथिकार ॥ तिन पाथो निरवान पद तव ते
 इतिगवी नाना । नवन अर्गमा वर्गमत्रवभये वितीत निदान ॥ भयो
 इतिगवी इतिगवी इतिगवी कल्पसूत्र मो जान । वर्गम पांचसे दश तव
 इतिगवी इतिगवी मान ॥ जो संवत अबआज लोविक्रमनृप अवनिस
 भये अठारहने वर्गम अरु तापरअइतीस ॥ दोयसहस अरुतीन
 ने अठ वर्गम परमान । महावीरनिरवान तंभयो आजलो जान

कलपसूत्र को बूल यह प्राकृत बानी मांह । लोक असंस्कृत
 ताहिपदि बयेंहूँ समझेंनांह ॥ तैसीटीका संस्कृतभई नसमझन
 जोग । अरुअनेकतापर करे टब्बा जिनजन लोग ॥ एकदेस
 की भाप सो गुरजर देसी जान । आनदैसेके जनतिन्हें समझि
 न सकें निदान ॥ यातें यह भापा करी जिहिं सब देसीलोग ।
 सुखसां सब समझें पढ़ें बड़ें पुण्य सुख भोग ॥ ऐसी मतिउर
 आनि श्री जिनजन कुल परसंस । गौत गोखरू जैनमूत ओस
 वंस अवतंस ॥ सभाचंद नरराय के अमरचंद वरराय । तिन
 के सुत द्रुलचंदनृप डालचंद सुखदाय ॥ सुधराईके सुघर अरु
 सौहद सुहद सुवान । सुभसौभाष्य सुभाष्य अरु सुठ सौजन्य
 सुजान ॥ गुनगाहक गुनवान पै निर्गुनग्याननिधान । समीदमी
 नियमी यमी हसी तमी भ्रसथान ॥ दानदसनमानद सुखद आन
 दधानद पीन । नरमानद मैं मगन मन परमानंद लयलीन ॥
 तिन जिनजन सुखहेत अरु धर्म उद्योत विचाराकह्यो रायचंदहि
 चतुर उपकारी मत धार ॥ कलपसूत्र कलिकलपतरु भापा
 टीका हेत । सो अनुसरि जिनयश्वचन सिर धरलई सहेत ॥
 निज मति अनुमित करि रच्यौ दच्यौ न एकप्रकार । जैसे क-
 हू समझौ सुन्यौ पढ्यौ दढ्यौ चितसार । जिनआगम मरमग्य
 जेसद्गुन सुहद सुजान । करत बीनती दीन हवैं तिनसां हां
 अनजान ॥ न्यूनधिकगुनदोषजो पढ़ै पढ़तकहुं दीठ । लीजै चुक
 सुधारि धरि हिथै न हांसयै ईठ ॥ हां न हांहुं कवि और सुहि
 कविता को नहिंजोस । यह लहिके कीजै कृपा जे जन्मन
 सम सोम ॥ संवत ठारह सै वरस सरसघोर अड़तीस ।
 विक्रमनृप बीदिंभई टीकाप्रशब्दुधीस ॥ चतचांदनेपाखकी सुभ
 नौमी अभिराम । पुण्य दखत धृत जोगवर मंगलवारललाम ॥
 जन्म सपारमपरमथल परीवनारस नाम । जन्मभूमि यात्रंथ

